

राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

मूल्य: ₹15/-

उभरता बिहार

वर्ष : 15, अंक : 3, सितम्बर 2022

सच्चाई, ऊर्जा, सकारात्मक विचार



अंबाजी शक्ति पीठ: जहां श्रीकृष्ण का हुआ मुंडन, श्रीराम को मिली शक्ति

तापमान बढ़ने से
समुद्र में घट रही...



भारतीय खाने पर
दुनिया में क्यों ...



ENVISION MEDICAL IMAGING & SCAN CENTRE

(A UNIT OF ENVISION MEDICAL IMAGING & SCAN CENTRE PVT. LTD)

ENVISION MEDICAL IMAGING & SCAN CENTRE

MRI

1.5 Tesla Ultrafast High Definition MRI Scan
Silent MRI System
Artificial Intelligence Enable
All MRI Examination

CT SCAN

Latest Generation Multi Slice CT Scan
Ultrafast & Digital CT Angiography
Very Low Radiation dose CT Scan System
CT Guided Biopsies

ULTRASOUND

4D Ultrasound Machine
Elastography / Fibroscan
Ultrasound Guided Procedures
Colour Doppler | Echo Cardiography

X-RAY

32 KW HF X-Ray Machine (Dr400i)
Full Leg/Full Spine with auto
Stitching Technology
Reduced Expose Dose

C - 14, Housing Colony, Kankarbagh, Patna - 800020 | Website - www.envisionimaging.in Contact Us - 9155998970, 9155998971



C-14 BEHIND V-MART, KANKARBAGH AUTO STAND, KANKARBAGH, PATNA - 800 020
MOBILE : 9155998970, 9155998971, E-mail : envisionimagingpatna@gmail.com

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक राजीव रंजन द्वारा कृत्या पब्लिकेशन, लंगरटोली, बिहार से मुद्रित एवं सी-49 हाऊसिंग कॉलोनी, लोहियानगर, कंकड़बाग, पटना - 800020 से प्रकाशित।

संपादक: राजीव रंजन

सभी कानूनी विवाद पटना न्यायिक क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत निपटारे जाएंगे। लेखकों द्वारा व्यक्त विचार उनके अपने हैं। इसकी जिम्मेदारी उनकी है एवं इसके लिये संपादक, प्रकाशक की सहमति अनिवार्य नहीं है। सामग्री की वापसी की जिम्मेदारी उभरता बिहार की नहीं होगी। इस अंक में प्रकाशित सभी रचनाओं के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। कुछ छाया चित्र और लेख इंटरनेट, एजेंसी एवं पत्र-पत्रिकाओं से साभार। उपरोक्त सभी पद अस्थायी एवं अवैतनिक हैं। किसी भी आलेख पर आपत्ति हो तो 15 दिनों के अंदर खंडन करें।

नोट : किसी भी रिपोर्टर द्वारा अनैतिक ढंग से लेन-देन के जिम्मेवार वे स्वयं होंगे।



मां नहीं, सुपर मॉम बन कर रहती है...

24



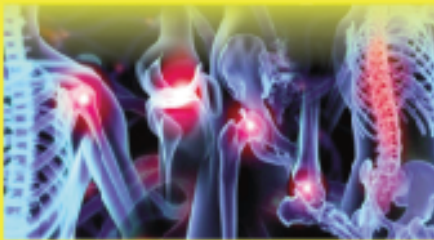
हिंदूराष्ट्र स्वप्नद्रष्टा : बंदा वीर बैरागी...

30

कितना महंगा होने जा रहा है मोबाइल इंटरनेट

36

मातृछाया ऑर्थो एण्ड हेल्थ केयर



Consultant Trauma & Spinal Surgeon
हड्डी, जोड़, रीढ़, नख एवं गठिया रोग विशेषज्ञ

विशेषता:

1. वहां हड्डी रोग से संबंधित सभी रोगों का इलाज होता है।
2. लटीन के द्वारा टूटे-हड्डी बसने की सुविधा उपलब्ध है।



विशेषता:

3. ट्राइल रजर्जी की भी सुविधा है।
4. Total Joint Replacement विशेषज्ञों की टीम के द्वारा क्ले टरो ४ की जाती है।

24 Hrs.

ORTHO &
SPINAL
EMERGENCY



Dr. Rakesh Kumar

M.B.B.S. (P), M.S. (P), M.Ch. (Ortho), Fellowship in Spine Surgery
Indian Spinal Injury Centre, New Delhi

G-43, P.C. Colony, Kankarbagh, Patna-20, Mob. - 7484814448, 9504246216

बेनकाब चीन



राजीव रंजन

संपादक

चीन के शिनजियांग प्रांत में अल्पसंख्यक मुस्लिमों के दमन के जो आरोप गाहे-बगाहे लगते रहे हैं संयुक्त राष्ट्र की हालिया रिपोर्ट ने उस पर मोहर लगायी है। जो बताती है कि चीन की निरंकुश सत्ता अल्पसंख्यकों के दमन में सरकारी तंत्र का किस हद तक दुरुपयोग कर रही है। बहरहाल, इस रिपोर्ट ने सारी दुनिया का ध्यान तो खींचा ही है, अब संयुक्त राष्ट्र के ताकतवर देशों को इस मामले में चीन की जवाबदेही तय करने के कारगर उपाय करने चाहिए। निस्संदेह शिनजियांग के अल्पमत वाले उइगर मुस्लिमों का दशकों से जो भयानक दमन चल रहा है संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट उसकी बानगी मात्र है। चीनी सत्ता तंत्र के लौह आवरण वाली व्यवस्था के चलते खबरें वास्तविक रूप में मुश्किल से ही बाहर आ पाती हैं। ऐसे में संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट काफी देर से आयी है। अब तक चीन उइगर आबादी को नियंत्रित करने में किसी हद तक सफल हो चुका है। वहां के यातना शिविरों में लाखों लोगों को दी जा रही यातनाएं, जबरन नसबंदी, धार्मिक आजादी पर नियंत्रण की खबरें अकसर शेष दुनिया तक विभिन्न स्रोतों से पहुंचती रही हैं। वहीं दूसरी ओर संयुक्त राष्ट्र की मानवाधिकार उच्चायुक्त द्वारा अपने कार्यकाल के अंतिम दिन इस रिपोर्ट का जारी करना भी बताता है कि अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं में चीन का कितना दबदबा है। ऐसे ही उसने वुहान से पूरी दुनिया में फैली कोरोना महामारी के स्रोत तलाशने गई अंतरराष्ट्रीय टीम की राह में गतिरोध पैदा करके सच को सामने आने से रोका था। बेहतर होता कि संयुक्त राष्ट्र की चीन में मानवाधिकारों पर रिपोर्ट समय रहते आती। तब विश्व जनमत चीन के द्वारा किये जा रहे अल्पसंख्यकों के दमन को रोकने में दबाव बना पाता। बहरहाल चाहे देर से ही सही, इस रिपोर्ट के आने से चीन का असली चेहरा दुनिया के सामने बेनकाब तो हुआ ही है। जो इस बात की भी पुष्टि करती है कि चीन आतंकवाद रोकने की रणनीति के नाम पर उइगर मुस्लिमों की नस्ल को खत्म करने की साजिश निरंतर करता रहा है। बहरहाल, चीन इस मामले में भले ही कोई दलील दे, शिनजियांग में मानवता के खिलाफ अपराध तो हुए ही हैं। उइगर महिलाओं की बलात नसबंदी, यौन उत्पीड़न व उइगरों के बड़ी संख्या में लापता होने के मामले इस भयावह दमन का चित्र उकेरते हैं। विडंबना यह है कि यह दमन खुद को विश्व शक्ति बताने वाले देश की सरकारी नीतियों के तहत किया जा रहा है। आज 21वीं सदी में यदि किसी नस्ल को नेस्तनाबूद करने की साजिश हो तो यह प्रगतिशील विश्व के लिये शर्मनाक ही कहा जायेगा। उइगर अल्पसंख्यकों से तो सुधारने के नाम पर यातना शिविरों में रखकर जबरन बेगार करवायी जा रही है। पढ़ाई के नाम पर ब्रेनवॉश किया जा रहा है। आबादी नियंत्रण के लिये यातनाएं दी जा रही है। एक रिपोर्ट के अनुसार तकरीबन दस लाख उइगर मुस्लिमों को सख्त नियम-कानूनों वाले शिविरों में रखकर जनसंख्या पर नियंत्रण के प्रयास किये जा रहे हैं। विडंबना यह है कि भारत में मुस्लिमों के छोटे-छोटे मामलों पर आसमान सिर पर उठाने वाले पाक, मलेशिया व तुर्की जैसे देश उइगर मुस्लिमों के दमन पर अपने स्वार्थों के चलते आंखें मूंदे बैठे हैं। यदि दुनिया के मुस्लिम राष्ट्रों की ओर से इस दमन के खिलाफ आवाज बुलंद की गई होती तो समय रहते विश्व जनमत चीन के खिलाफ दबाव बनाने में कामयाब हो जाता। मगर समर्थ को नहीं दोष गुंसाई की कहावत आज भी चीन पर लागू हो रही है। संयुक्त राष्ट्र जैसी संस्था पर भी चीन दबाव बनाने में कामयाब रहा है। अपने वीटो के हथियार का वह जब-तब प्रयोग करके निरंकुश व्यवहार करता रहा है।

अंबाजी शक्ति पीठ: जहां श्रीकृष्ण का हुआ मुंडन, श्रीराम को मिली शक्ति



सुरेश गांधी

गुजरात राजस्थान सीमा पर अरावली पहाड़ों पर बसा बनासकोटा में है अंबाजी का मंदिर। यह मंदिर देश के 51 शक्तिपीठों में एक है। इस मंदिर को आद्यशक्ति पीठ कहा जाता है। यह मातारानी का सबसे बड़ा और 1200 साल पुराना प्राचीन मंदिर है। कहते हैं यहां देवी सती का हृदय गिरा था। मंदिर का शिखर 103 फीट ऊंचा है। मंदिर पर 358 स्वर्ण कलश स्थापित है। अब तो पूरे मंडप को स्वर्ण से सुसज्जित करने का काम चल रहा है। इसीलिए इस मंदिर को गोल्डन शक्तिपीठ के नाम से भी जाना जाता है। खास बात यह है कि मंदिर के गर्भगृह में मूर्ति नहीं बल्कि श्रीयंत्र की पूजा होती है और यंत्र को देखने की मनाही है। इसीलिए श्रद्धालु आंख पर पट्टी बांधकर करते हैं मां का दर्शन-पूजन। पुजारी की मानें तो न सिर्फ यहां माता यशोदा ने श्रीकृष्ण का मुंडन कराया था, बल्कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम को लंका पर विजय से पहले मां का आशीर्वाद मिला था। और तो और महर्षि वाल्मीकि ने इसी तपोभूमि से रामायण लिखने की शुरुआत की थी। इस पवित्र धाम में भगवान शिव और माता पार्वती का अटूट बंधन है। मां के चैखट पर कदम पड़ते ही मन आध्यात्म और शक्ति की अनुभूति से भर उठता है। नवरात्र के दिनों में यहां उत्सव का नजारा होता है, पूरा धाम सप्तशती के पाठ से गूंजता रहता है। आने वाले भक्त न सिर्फ मन्त्रों की झोली भरकर ले जाते हैं, बल्कि ध्वजा चढ़ाकर मां को घर आने की निमंत्रण भी देते हैं और मां सुनती है हर भक्तों की पुकार, हर लेती है भक्तों की सारे कष्ट



जी हां, चमत्कार की ढेरों कहानियां अपने आंचल में समेटे मां अंबाजी जिस स्थान पर विराजमान है इसे शक्तिपीठ का दर्जा प्राप्त है। कहते हैं यहां मां सती का हृदय गिरा था। मंदिर की महत्ता का अंदाजा इस बात से

“

मंदिर पर 358 स्वर्ण कलश स्थापित है। अब तो पूरे मंडप को स्वर्ण से सुसज्जित करने का काम चल रहा है। इसीलिए इस मंदिर को गोल्डन शक्तिपीठ के नाम से भी जाना जाता है।

खास बात यह है कि मंदिर के गर्भगृह में मूर्ति नहीं बल्कि श्रीयंत्र की पूजा होती है और यंत्र को देखने की मनाही है। इसीलिए श्रद्धालु आंख पर पट्टी बांधकर करते हैं मां का दर्शन-पूजन। पुजारी की मानें तो न सिर्फ यहां माता यशोदा ने श्रीकृष्ण का मुंडन कराया था।



लगाया जा सकता है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सहित अमित शाह हो या अन्य मुख्यमंत्री नवरात्र में मां के दरबार में मत्था टेकना नहीं भूलते। यही वजह है कि सिर्फ नवरात्रि में ही नहीं बल्कि हर पर्वों से लेकर सामान्य दिनों में भी यहां श्रद्धालुओं का ताता लगा रहता है और उत्सव जैसा माहौल रहता है। नवरात्र में यहां देश के कोने-कोने से श्रद्धालु आते हैं। मंदिर परिसर में गरबा का भी आयोजन होता है। इस मंदिर का निर्माण वल्लभी शासक सूर्यवंश सम्राट अरुण सेन ने चौथी शताब्दी में कराया था। समय-समय पर इस मंदिर का जीर्णोद्धार होता रहा है। इस मंदिर के गर्भगृह में एक गुफा है जहां मां की मूर्ति की जगह स्वर्ण निर्मित श्रीयंत्र स्थापित है। इसी श्रीयंत्र की यहां पूजा होती है। वह भी आंखों में पट्टी बांधकर। खूली आंखों से दर्शन-पूजन की मनाही है। श्री यंत्र के दर्शन करने के लिए उस दिवार में एक साधारण सा झरोखा छोड़ दिया गया है जहां से उस श्री यंत्र के दर्शन होते हैं।

यह मंदिर 103 फुट ऊंचा है और इसके शिखर पर 358 स्वर्ण कलश स्थापित है। जिसका वजन 3 टन से भी अधिक है। मां के इस मंदिर तक पहुंचने के लिए भक्तों को 999 सीढ़ियां चढ़नी होती हैं। भक्त जय-जय अंबे के घोष करते आगे बढ़ते जाते हैं। मां की भक्ति में भक्त सराबोर हो रहते हैं। मां का भोग मां के दरबार में ही लकड़ी और देसी घी से तैयार किया जाता है। पांचो पहर की आरती में भक्तों को मां का अलग-अलग-अलग रूपों में दर्शन होता है। पूर्णिमा के दिन यहां मेले का आयोजन होता है। खास यह है कि मां के स्वरूप का दर्शन कर भक्त गब्बर पहाड़ पर जरूर जाते हैं, क्योंकि मां इसी पहाड़ से प्रकट हुई हैं। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार अरासुरी अंबाजी मंदिर का पौराणिक महत्व है। इसका उल्लेख हूतंत्र चूड़ामणिहू में भी मिलता है। यहां भगवान श्री कृष्ण का मुंडन संस्कार सम्पन्न हुआ था। लंका पर विजय से पहले भगवान श्रीराम भी शक्ति की उपासना के लिए यहां आ चुके हैं। नवरात्रि यानि देवी शक्ति के पूजन के दिनों में हर कोई मां आदिशक्ति की साधना में लीन रहता है। इन नौ दिनों में देवी मां के नौ रूपों का स्मरण उनकी पूजा की जाती है।

माता श्री अरासुरी अम्बिका मंदिर में श्री बीजयंत्र के सामने एक पवित्र ज्योति अटूट प्रज्वलित रहती है। मंदिर की वर्तमान संरचना के निर्माण बारे में माना जाता है कि 14वीं शताब्दी में वल्लभी के सूर्यवंशी राजा अरुण सेन ने करवाया था। लेकिन अगर इस मंदिर के इससे भी पूर्व के इतिहास की बात करें तो पता चलता है कि 1200 ईसवी में यहां इससे भी भव्य मंदिर हुआ करता था जिसको मुगलों ने लुटपाट के बाद नष्ट कर दिया था। जिसके बाद इस मंदिर के जीर्णोद्धार का काम 1975 से शुरू हुआ था और तब से अब तक जारी है। श्वेत संगमरमर से निर्मित यह मंदिर बेहद भव्य है। मंदिर के पीछे की ओर प्राचीन काल का पवित्र मानसरोवर तालाब भी मौजूद है। कहा जाता है कि इस सरोवर का निर्माण अहमदाबाद के श्री तपिशंकर ने वर्ष 1584 से 1594 के मध्य करवाया था। यह मंदिर हिन्दू धर्म के लिए सबसे प्रमुख और सबसे बड़े तीर्थों में माना जाता है। यह मंदिर विदेशों में बसे गुजराती समुदाय के लिए विशेष आस्था और शक्ति उपासना का महत्व रखता है। गुजरात और राजस्थान की सीमा पर अरावली पर्वत श्रृंखला में होने के कारण



इसे ह्यह्यअरासुर माताल्लू के नाम से भी पहचाना जाता है। मान्यता है कि इस शक्तिपीठ मंदिर में देवी अंबाजी अनादिकाल से अपने जग्रत रूप में निवास करती हैं। आदि शक्ति माता अम्बाजी इस ब्रह्माण्ड की सर्वोच्च ब्रह्मांडीय शक्ति का अवतार हैं। इसलिए अंबाजी के इस मंदिर में आने वाले उनके सभी भक्त उसी दिव्य और लौकिक शक्ति की पूजा करते हैं, जो अंबाजी के रूप में अवतरित हुई थीं। यह मंदिर देवी शक्ति के हृदय भाग का प्रतीक होने के कारण 12 सबसे प्रमुख शक्तिपीठों में स्थान रखता है। दुर्गा शप्त सती और तंत्र चूड़ामणि के 52 शक्तिपीठ, देवी भागवत पुराण के 108 शक्तिपीठ, कालिका पुराण के 26 शक्तिपीठ और शिवचरित्र में वर्णित 51 शक्तिपीठों में भी इस शक्तिपीठ को प्रमुखता दी गई है।

गब्बर पर्वत है मां के पदचिन्ह

मंदिर से लगभग 3 किमी की दूरी पर गब्बर नामक पहाड़ है। इस पहाड़ पर भी देवी मां का प्राचीन मंदिर स्थापित है। माना जाता है यहां एक पत्थर पर मां के पदचिन्ह बने हैं। पदचिह्नों के साथ-साथ मां के रथचिन्ह भी बने हैं। अम्बाजी के दर्शन के उपरान्त श्रद्धालु गब्बर जरूर जाते हैं। गब्बर पर्वत के शिखर पर बने देवी के एक छोटे से मंदिर की पश्चिमी छोर पर दीवार बनी है। यहां नीचे से 999 सीढ़ियों के सहारे पहाड़ी पर पहुंचा जा सकता है। हर साल भाद्रपदी पूर्णिमा के मौके पर यहां बड़ी संख्या में श्रद्धालु जमा होते हैं। भाद्रपदी पूर्णिमा को इस मंदिर में एकत्रित होने वाले श्रद्धालु पास में ही स्थित गब्बरगढ़ नामक पर्वत श्रृंखला पर भी जाते हैं, जो इस मंदिर से दो मील दूर पश्चिम की दिशा में स्थित है। प्रत्येक माह पूर्णिमा और अष्टमी तिथि पर यहां मां की विशेष पूजा-अर्चना की जाती है। यहां फोटोग्राफी निषेध है। यह स्थान अरावली पर्वतमाला के घने जंगलों से घिरा हुआ है। यह पर्यटकों को प्राकृतिक सौंदर्य और आध्यात्मिकता का सही मिश्रण प्रदान करता है। अंबाजी माता मंदिर के आस-पास कई पर्यटन स्थल हैं, जहाँ पर्यटक घूमने जाते हैं। गब्बर हिल, अरासुर की पहाड़ियों पर, वैदिक नदी सरस्वती की उत्पत्ति के निकट है, जो अरावली की प्राचीन पहाड़ियों के दक्षिण-पश्चिम की ओर स्थित है।



अमेरिका एवं कई विकसित देशों में तो उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रा स्फीति 9 प्रतिशत तक पहुंच चुकी है जो कि पिछले 50 वर्षों की अवधि में सबसे अधिक महंगाई की दर

है। आगे आने वाले समय में, भारत में, महंगाई की दर के और भी नीचे आने की सम्भावना व्यक्त की जा रही है और इसके मार्च 2023 में 5 प्रतिशत से नीचे रहने की उम्मीद की जा रही है।

इसकी समुद्र तल से ऊँचाई 1,600 फीट है। गम्बर हिल की खड़ी पहाड़ी पर चढ़ना बहुत मुश्किल है।

पौराणिक मान्यताएं

श्री वाल्मीकी रामायण में भी गम्बर तीर्थ का विशेष वर्णन मिलता है। रामायण की एक कथा के अनुसार, भगवान राम और लक्ष्मण सीताजी की खोज में श्रृंगी ऋषि के आश्रम में भी गये थे, जहाँ श्रृंगी ऋषि ने उन्हें गम्बर तीर्थ में जाकर देवी अंबाजी की पूजा करने के लिए कहा था। माता अम्बाजी ने श्रीराम की भक्ति से प्रसन्न होकर उनको ह्यह्यअजयल्लु नाम का वह चमत्कारिक तीर दिया था, जिसकी मदद से उन्होंने दुष्ट रावण को मार दिया। द्वापर युग में भगवान श्रीकृष्ण का मुंडन संस्कार माता यशोदा और पिता नंद ने इसी मंदिर के प्रांगण में करवाया था। इसके अलावा, महाभारत युद्ध से पहले पांडवों ने भी अपने निर्वासन काल के दौरान यहां आकर देवी अंबाजी की पूजा-अर्चना की थी। प्राचीन काल से ही मेवाड़ के सभी राजपूत राजा इस भवानी माता की नियमित रूप से भक्ति करने के लिए आया करते थे। इन राजाओं में राणा प्रताप का नाम भी शामिल है। कहा जाता है कि राणा प्रताप अपनी हर विजय के बाद अरासुरी अम्बा भवानी की विशेष भक्ति करने और उनका धन्यवाद देने के लिए आया करते थे। स्थानिय दंतकथाओं और लोककथाओं के अनुसार राणा प्रताप ने माता अरासुरी अंबाजी के मंदिर में अपनी सबसे प्रिय तलवार भी भेंट कर दी थी। विभिन्न पुराणों और पौराणिक कथाओं में मान्यता है कि मां अम्बे यहां साक्षात् विराजी हैं। इसलिए यह स्थान कई तांत्रिकों और तांत्रिक क्रियाओं के लिए भी प्रसिद्ध है। अनादिकाल से ही यहां प्रतिदिन मां अंबा के तीन अलग-अलग रूपों की पूजा होती आ रही है, जिसमें प्रातःकाल बाल रूप, दोपहर को युवा रूप और शाम को वृद्धा रूप में पूजा होती है। इसके अलावा मां अम्बा की अखंड जोत यहां सदियों से प्रज्ज्वलित है। चैत्र तथा शारदीय नवरात्र के अवसरों पर यहां का वातावरण अलौकिक, दिव्य, पावन और अद्भूत भक्तिमय हो जाता है। शारदीय नवरात्र के विशेष अवसर पर तो मंदिर में दर्शनार्थियों की लंबी-लंबी लाइनें लग जाती हैं। इस अवसर पर यहां खेले जाने वाला गरबा नृत्य विश्व भर के लिए सबसे खास और आकर्षण का केन्द्र बन जाता है।

कैलाश टेकरी

कैलाश टेकरी के ऊपर स्थित कैलाश हिल सूर्यास्त, अम्बाजी माता मंदिर से लगभग 2 किमी दूर स्थित है। एक महान सूर्यास्त के दृष्टिकोण के अलावा यह पहाड़ी एक पूजा स्थल भी है। पहाड़ी पर महादेव के मंदिर में एक शानदार कलात्मक पत्थर का गेट भी है। यहां पास में ही मंगलिया वन नामक एक उद्यान भी है, जो पहाड़ी से लगभग 2 किमी दूर है।

कुंभारिया

कुंभारिया अंबाजी मंदिर टाउन से डेढ़ किमी दूर स्थित है। कुम्भारिया, बनासकांठा जिले में सांस्कृतिक विरासत के साथ ऐतिहासिक, पुरातत्व और धार्मिक महत्व का एक गाँव है। यह जैन मंदिर से जुड़ा एक ऐतिहासिक स्थान है। इसमें श्री नेमिनाथ भगवान का ऐतिहासिक जैन मंदिर है जो 13वीं शताब्दी का है।

मानसरोवर

मानसरोवर मुख्य मंदिर के पीछे स्थित है। ऐसा कहा जाता है कि इस सरोवर का निर्माण अहमदाबाद के अम्बाजी के एक नागर भक्त श्री तपिशंकर ने 1584 से 1594 तक किया था। इस पवित्र सरोवर के दो किनारों पर दो मंदिर हैं, जिसमें से एक मंदिर महादेव का है और दूसरा अजय देवी का मंदिर है। ऐसा कहा जाता है कि अजय देवी, अंबाजी की बहन हैं। पर्यटक और भक्त इस मानसरोवर में पवित्र स्नान करने के लिए आते हैं।

कामाक्षी मंदिर

चिकला में स्थित, कामाक्षी मंदिर अंबाजी से लगभग एक किमी दूर है। दक्षिण भारतीय मंदिर की स्थापत्य शैली का सम्मान करते हुए इस मंदिर के मैदान में कई अन्य छोटे मंदिर भी हैं जो मुख्य मंदिर को समेटते हैं। आदित्य शक्तिमाता की विभिन्न अभिव्यक्तियों के आवास, इस मंदिर में भारत के कुछ सबसे महत्वपूर्ण शक्तिपीठ हैं।

सती कथा

शक्तिपीठ की पौराणिक कथा पौराणिक कथा के अनुसार माता दुर्गा ने राजा प्रजापति दक्ष के घर में सती के रूप में जन्म लिया। भगवान शिव से उनका विवाह हुआ। एक बार ऋषि-मुनियों ने यज्ञ आयोजित किया था। जब राजा दक्ष वहां पहुंचे तो महादेव को छोड़कर सभी खड़े हो गए, यह देख राजा दक्ष को बहुत क्रोध आया। उन्होंने अपमान का बदला लेने के लिए फिर से यज्ञ का आयोजन किया। इसमें शिव और सती को छोड़कर सभी को आमंत्रित किया। जब माता सती को इस बात का पता चला तो उन्होंने आयोजन में जाने की जिद की। शिवजी के मना करने के बावजूद वो यज्ञ में शामिल होने चली गईं। यज्ञ स्थल पर जब माता सती ने पिता दक्ष से शिवजी को न बुलाने का कारण पूछा तो उन्होंने महादेव के लिए अपमानजनक बातें कहीं। इस अपमान से माता सती को इतनी ठेस पहुंची कि उन्होंने यज्ञ कुंड में कूदकर अपने प्राणों की आहुति दे दी। वहीं, जब भगवान शिव को इस बारे में पता चला तो क्रोध से उनका तीसरा नेत्र खुल गया। उन्होंने सती के पार्थिव शरीर को कंधे पर उठा लिया और पूरे भूमंडल में घूमने लगे। मान्यता है कि जहां-जहां माता सती के शरीर के अंग गिरे, वो शक्तिपीठ बन गया। इस तरह से कुल 51 स्थानों पर शक्तिपीठ का निर्माण हुआ। वहीं, अगले जन्म में माता सती ने हिमालय के घर माता पार्वती के रूप में जन्म लिया और घोर तपस्या कर शिव को पुनः प्राप्त कर लिया।

मंदिर की वास्तुकला

मंदिर में आंगन शक्ति, द्वार शक्ति, गर्भ गृह और निज मंदिर मौजूद है। वह हमारी हिन्दू संस्कृति और परंपराओं को प्रदर्शित किया करती है। कलश के साथ माता रानी का पवित्र ध्वज और त्रिशूल भी जुड़ा है। दूसरी और गर्भगृह में माताजी के पवित्र गोख और मुख्य मंदिर एक विशाल मण्डप स्थित है। मंडप के सामने विशाल चहार चैक है। जिसमें माँ की पूजा अर्चना की जाती है। मंदिर की वास्तुकला अद्भुत और कलात्मक है। मूल मंदिर माध्यम आकार का है। जिसमें माता की कोई तस्वीर या मूर्ति नहीं है। कहा जाता है। की माता रानी गर्भगृह की दीवार में बने छोटे से गोख में निवास करते हैं। पिछले 100 साल से अरसुरी माता अंबाजी मंदिर ट्रस्ट चलाया जाता है। उसके जरिये तीर्थयात्रियों और पर्यटकों के रहने, साउंड शो और लाइट की व्यवस्था की जाती है।

कैसे पहुंचें

इस मंदिर के दर्शन के लिए श्रद्धालु सड़क, हवाई और रेल मार्ग के जरिए जा सकते हैं। यहां का नजदीकी हवाई अड्डा अहमदाबाद का सरदार वल्लभ भाई पटेल इंटरनेशनल एयरपोर्ट है। जहां से अंबाजी मंदिर करीब 186 किलोमीटर दूर है। यहां का नजदीकी रेलवे स्टेशन अबू रोड स्टेशन है जहां से मंदिर की दूरी 20 किमी है। देश के किसी भी कोने से सड़क मार्ग के जरिए इस मंदिर तक पहुंचा जा सकता है। यह मंदिर पालनपुर से लगभग 65 किमी और माउंट आबू से 45 किमी की दूरी पर स्थित है।



प्रकृति और आकस्मिक आपदा



प्रकृति में बाढ़, सूखा, भूकम्प, सुनामी जैसी आकस्मिक आपदा समय-समय पर आती ही रहती हैं और इनके कारण जीवन और सम्पत्ति की बहुत हानि होती है। अतः यह बहुत महत्वपूर्ण है कि इन प्राकृतिक आपदाओं का सामना करने और जहाँ तक सम्भव हो इन आपदाओं को कम से कम करने के उपाय और साधन खोजे जाएँ।

मानव गतिविधियाँ जैसे आग, दुर्घटना, महामारी आदि द्वारा होने वाली आपदा विनाशकारी प्राकृतिक विपत्तियों की तरह ही आकस्मिक होती हैं और उन्हीं के समान विनाशकारी भी। इस पाठ में आप प्राकृतिक आपदाओं के साथ ही मानव निर्मित आपदाओं के भी कारण, प्रभाव, रोकथाम और प्रबन्धन के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के समापन के पश्चात, आप :

- प्रकृति में पारिस्थितिक संतुलन कैसे बनाये रखते हैं का वर्णन कर पायेंगे;
- मानव निर्मित और प्राकृतिक आपदाओं को वगीकृत कर सकेंगे;
- बाढ़, तूफान (चक्रवात) सूखे (जल और जलवायु सम्बन्धी आपदाओं) के कारण, प्रभाव और प्रबन्धन का वर्णन कर पायेंगे;
- भूकम्प (भूविज्ञान सम्बन्धी आपदा) के कारण, प्रभाव और प्रबन्धन को वर्णित कर पायेंगे;
- जंगल की आग, तेल रिसाव जैसी दुर्घटनाओं से सम्बन्धित आपदाओं से लेकर औद्योगिक दुर्घटनाओं के कारण, प्रभाव और प्रबन्धन का वर्णन कर पायेंगे;
- जैव सम्बन्धी आपदाओं (महामारियों जैसे डेंगू, एचआइवी (लक्ष्म) और पशु महामारी) के कारण, प्रभाव और प्रबन्धन का वर्णन कर पायेंगे;

- आपदा प्रबन्धन में सरकार और समुदाय (समाज) की भूमिका का वर्णन कर पायेंगे।

12.1 प्रकृति में पारिस्थितिकीय संतुलन

जीवधारियों के जीवन-यापन और कुशलता के लिये प्रकृति में भरपूर संसाधन हैं। परन्तु प्रकृति के अपने प्राकृतिक नियंत्रण साधन भी होते हैं। प्रयोग में आये संसाधनों को प्रकृति पुनः भर देती है, आधिक्यता को नियंत्रण में रखती है और यह सब प्राकृतिक रूप से जैवीय, भू-रासायनिक चक्र के द्वारा होता है। इस प्रकार प्रकृति में संतुलन बना रहता है। इसमें खाद्य शृंखला और खाद्य जाल तथा अन्य प्राकृतिक घटनाओं का बहुत बड़ा हाथ है। इस प्रकार प्रकृति में प्राकृतिक संतुलन को

“

मानव गतिविधियाँ जैसे आग, दुर्घटना, महामारी आदि द्वारा होने वाली आपदा विनाशकारी प्राकृतिक विपत्तियों की तरह ही आकस्मिक होती हैं और उन्हीं के समान

विनाशकारी भी। इस पाठ में आप प्राकृतिक आपदाओं के साथ ही मानव निर्मित आपदाओं के भी कारण, प्रभाव, रोकथाम और प्रबन्धन के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे।

नियमित किया जाता है। इसको पारिस्थितिकी संतुलन भी कहते हैं और आज के सन्दर्भ में प्रकृति का यह संतुलन मानव गतिविधियों के कारण गड़बड़ा गया है।

प्राकृतिक आपदा

भारतीय उपमहाद्वीप प्राकृतिक आपदाओं के लिये सबसे अधिक संभावित क्षेत्र है। बाढ़, सूखा, चक्रवात और भूकम्प भारत में बार-बार और जल्दी-जल्दी आते ही रहते हैं। प्राकृतिक आपदा मानवनिर्मित आपदाओं जैसे आग आदि की पुनरावृत्ति से मिलकर और बढ़ जाते हैं। पर्यावरण के अवक्रमण से स्थलाकृति (टोपोग्राफी = भूमि) परिवर्तित हो जाती है। इसके साथ ही प्राकृतिक आपदाओं के लिये असुरक्षा भी बढ़ जाती है। 1988 में कुल भूमि का 11.2% क्षेत्र ही बाढ़ संभावित था परन्तु 1998 तक यह भू-भाग बढ़ कर 37% हो गया। अभी हाल ही में जिन चार सबसे बड़ी आपदाओं का सामना भारत को करना पड़ा है वह हैं- महाराष्ट्र के लातूर जिले में 1993 में आने वाला भूकम्प, 1999 में उड़ीसा का बड़ा चक्रवात, 2001 में गुजरात का भूकम्प, दिसम्बर 2004 में आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु में आया सुनामी।

बार-बार आने वाली इन आपदाओं में जान और माल की बहुत हानि होती है। भौतिक सुरक्षा, विशेषकर जहाँ असुरक्षा अधिक है, इन बाधाओं के कारण खतरे में पड़ गई है। प्राकृतिक आपदाओं को रोका तो नहीं जा सकता परन्तु उनसे होने वाले दुष्परिणामों और क्षति को कुछ सावधानियों अपनाकर रोका जरूर जा सकता है जैसे अधिक कुशल भविष्यवाणी और प्रभावशाली बचाव साधनों के लिये अच्छी तैयारी होना। ऊपर बताई गयी चारों प्राकृतिक आपदाओं से यह स्पष्ट रूप से पता चलती है कि हमें बहुबाधा से होने वाली जान माल की हानि को कम करने और पुनः सुचारु करने के लिये उचित योजनाओं और तैयारियों की आवश्यकता है। आपदाओं के खतरे का प्रबन्धन वास्तव में विकास की समस्या है। पर्यावरण की जिस स्थिति को देश आज झेल रहा है, उसे ध्यान में रखते हुए आपदा प्रबन्धन की तैयारी और योजना तैयार करनी होगी।

आपदाओं के प्रकार

आपदा दो प्रकार की होती हैं- प्राकृतिक और मानव निर्मित आपदा। उदाहरण के लिये- आग, दुर्घटनाएँ (सड़क, रेल या वायु) औद्योगिक दुर्घटनाएँ या महामारी मानव निर्मित आपदाओं के कुछ उदाहरण हैं। प्राकृतिक और मानवनिर्मित दोनों ही आपदा भयानक विनाश करती हैं। मानव जीवन की क्षति, जीविका उपार्जन के साधनों, सम्पत्ति और पर्यावरण का अवक्रमण इन आपदाओं का परिणाम होता है। आपदाओं से समाज के सामान्य क्रियाकलापों पर विपरीत प्रभाव पड़ता है और इसका दुष्प्रभाव दीर्घकालीन होता है। भूकम्प, चक्रवात, बाढ़ और सूखा प्राकृतिक आपदाओं के उदाहरण हैं। (क) प्राकृतिक आपदा (ठं३४१' रिर३३१)

कुछ आपदा प्रकृति में अपने आप ही पैदा हो जाती हैं जहाँ मनुष्य का कुछ हाथ या वश नहीं होता। इनका वर्णन नीचे किया जा रहा है-

बाढ़ (ऋद्धङ्गि)

नदियों या जलस्रोत और जलाशयों में अधिक जल आने से अचानक और अस्थायी रूप से किसी भूभाग का जलमग्न हो जाना, बाढ़ (ऋद्धङ्गि) कहलाता है।

कारण

बाढ़ अतिवृष्टि, तेज हवाएँ, चक्रवात, सुनामी, बर्फ का पिघलना या बांधों का फटना आदि के कारण ही आती हैं। बाढ़ धीरे-धीरे भी आ सकती है या अतिवृष्टि या जल भंडार में दरार या पानी का अधिक भरकर फैलने से अचानक भी बाढ़ आ सकती है। नदियों और तालाबों में गाद जमने के कारण बाढ़ की घटनाओं और उनकी तीव्रता में वृद्धि होती है।

प्रभाव

हताहत (घायल)

डूबने, गम्भीर चोट, या महामारियों जैसे डायरिया, हैजा, पीलिया या वाइरल संक्रमण के कारण मनुष्य और पशुओं की मृत्यु बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों की सामान्य समस्या है। बाढ़ के समय कुएँ तथा पेयजल के अन्य स्रोत भी जलमग्न हो जाते हैं जिसके कारण शुद्ध पेयजल की बहुत कमी हो जाती है। कभी-कभी लोगों को मजबूरी में बाढ़ का संक्रमित जल ही पीना पड़ता है जिससे गम्भीर रोग पैदा हो जाते हैं।

इमारतों की क्षति (संरचनात्मक क्षति)



बाढ़ के दौरान मिट्टी के घर और कमजोर नींव पर खड़े भवन ढह जाते हैं और जान माल के लिये खतरा और क्षति पैदा हो जाती है। सड़कों, रेल पटरियों, बांधों, स्मारकों, फसलों और पशुओं की भी भारी हानि होती है। बाढ़ों के कारण बड़े-बड़े पेड़ भी उखड़ जाते हैं जिसके कारण भूस्खलन और मृदा-अपरदन हो सकता है।

माल, सामान, सामग्री की क्षति

घरेलू सामान के साथ खाद्य पदार्थ, बिजली के उपकरण, फर्नीचर, कपड़े सब बाढ़ के पानी में डूब जाते हैं। भूमि पर भंडारित सामान जैसे अनाज, मशीनी उपकरण, गाड़ियाँ, पशुधन, साल्ट पैन (२'३ स्ल्ल) और मछली के शिकार की नौकाएँ पानी में डूब कर बेकार हो जाती हैं।

उपयोगी वस्तुओं की क्षति

डूबने, गम्भीर चोट, या महामारियों जैसे डायरिया, हैजा, पीलिया या वाइरल संक्रमण के कारण मनुष्य और पशुओं की मृत्यु बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों की सामान्य समस्या है। बाढ़ के समय कुएँ तथा पेयजल के अन्य स्रोत भी जलमग्न हो जाते हैं जिसके कारण शुद्ध पेयजल की बहुत कमी हो जाती है। कभी-कभी लोगों को मजबूरी में बाढ़ का संक्रमित जल ही पीना पड़ता है जिससे गम्भीर रोग पैदा हो जाते हैं।

उपयोगी वस्तुएँ अर्थात जल-आपूर्ति, वाहितमल व्यवस्था (रीदीशै), संचार-व्यवस्था, बिजली व्यवस्था और परिवहन व्यवस्था, रेलमार्ग सभी बाढ़ के कारण खतरे में पड़ जाते हैं।

फसलों की क्षति

मानव और पशुधन की क्षति के साथ बाढ़ के कारण खेतों में खड़ी लहलहाती तैयार फसल की भी भारी हानि होती है। बाढ़ का पानी भंडारित अनाज के साथ काट कर रखी फसल को भी नष्ट कर देता है। बाढ़ के पानी से मिट्टी की गुणवत्ता पर भी प्रभाव पड़ता है। खेत के ऊपर की उपजाऊ मिट्टी पानी के साथ बह जाने से खेत बंजर हो जाते हैं। समुद्री तटों पर स्थित खेतों में समुद्र का खारा पानी भर जाने से वे कृषि के लिये अनुपयोगी हो जाते हैं।

बाढ़ों का नियंत्रण

बाढ़ों को कई प्रकार से नियंत्रित किया जा सकता है। वृक्षारोपण करके (वृक्ष लगा कर) बहकर आने वाले जल की मात्रा कम करने से बाढ़ के पानी का स्तर भी घट जायेगा। जंगल बारिश के पानी को भूमि के अंदर जाने का रास्ता देते हैं। इससे भूमिगत जल स्तर पुनः स्थापित होता है और पानी का व्यर्थ बहना कम हो जाता है। बांधों के निर्माण से पानी का भंडारण होता है और बाढ़ के जल में कमी आती है। बांध पानी को एकत्रित कर सकते हैं, इस कारण पानी नीचे नदियों तक नहीं पहुँच पाता। यदि बांध में एकत्रित पानी सीधा नदियों तक पहुँचे तो बाढ़ की स्थिति पैदा हो सकती है। बांधों से पानी को नियंत्रित रूप में छोड़ा जाता है। नदी/नहर/नालों से गाद निकालकर उन्हें गहरा करने से और तटों को चौड़ा करने से उनमें अधिक पानी भरने की धारण क्षमता बढ़ जाती है।

प्रबन्धन

यदि बाढ़ नियंत्रण की उचित योजना और उचित प्रबन्धन तरीकों का नियोजित ढंग से पालन करें तो बाढ़ से होने वाली क्षति और जान-माल की हानि को काफी हद तक रोका जा सकता है और कम किया जा सकता है।

बाढ़ प्रवृत्त क्षेत्रों की पहचान

बाढ़ों के उचित प्रबन्धन के लिये सुचारु और युक्तिसंगत योजना बनाने के लिये बाढ़-प्रवृत्त क्षेत्रों को पहचान कर उन्हें चिन्हित करना आवश्यक है। इन क्षेत्रों में बाढ़ का बार-बार आना और आकार को जानना भी जरूरी है।

बाढ़ का पूर्वानुमान

प्रायः लोगों को काफी पहले खतरे की सूचना देकर सुरक्षित स्थानों पर भेज दिया जाता है। जलग्रहण क्षेत्र में वर्षा की तीव्रता का माप जल वैज्ञानिकों को इतना अनुमान लगाने के लिये पर्याप्त होता है कि नदी में पानी बढ़ने से कितना क्षेत्र जलमग्न हो जायेगा। जल वैज्ञानिक बाढ़ आने से पहले ही उसका अनुमान लगा लेते हैं। उसी सम्भावना से प्रभावित क्षेत्रों के लोगों को सामान और पशुधन के साथ सुरक्षित स्थलों पर चले जाने के लिये चेतावनी दी जाती है। भारत में वर्षा मापक स्टेशनों का जाल (नेटवर्क) काफी बड़ा है, बाढ़ की चेतावनी केन्द्रीय जल कमीशन सिंचाई और बाढ़ नियंत्रण डिवीजन और जल संसाधन विभाग द्वारा जारी की जाती है।

भूमि उपयोग की योजना

विकास की सभी गतिविधियों के लिये भूमि उपयोग की योजना का बहुत महत्व है। बाढ़ संभावित क्षेत्रों में विकास के किसी मुख्य कार्य की अनुमति नहीं देनी चाहिये। यदि निर्माण कार्य बिल्कुल ही अनिवार्य हो तो ऐसा होना चाहिये कि बाढ़ की शक्ति वह इमारत झेल सके। इमारतों को किसी ऊँचे स्थान पर ही बनाना चाहिये। वृक्षारोपण को प्रोत्साहन मिलना चाहिये। जलग्रहण वाले स्थानों पर वृक्षोन्मूलन एकदम नहीं होना चाहिये। पेड़ कटने से पानी बहुत अधिक तीव्रता से बहता है और पानी के साथ मिट्टी बहने से मृदा-अपरदन बहुत होता है। मृदा-अपरदन नदियों में गाद जमने का मुख्य कारण है और नदियों में गाद जमने से बाढ़ों की सम्भावना बहुत बढ़ जाती है। ऐसे निर्माण कार्य की जिसके कारण जल निकास बाधित हो, कभी अनुमति नहीं मिलनी चाहिए। अचानक आये पानी के निकास की नालियों के ऊपर अतिक्रमण नहीं होना चाहिये। इन सबसे बाढ़ का खतरा घट जाता

है।

कुछ पूर्वापार्य (सावधानियाँ) जिनसे बाढ़ का खतरा कम होता है इस प्रकार हैं-
- घरों को बाढ़ संभावित क्षेत्र से दूर बनाएँ।
- मौसम की सूचना बाढ़ आने के पूर्वानुमान की सूचनाओं के प्रति जागरूक और सचेत रहिये।

- स्थान खाली करने के निर्देश और चेतावनी के बाद तुरन्त ही उपलब्ध शरणास्थलों में चले जायें।

- जब आप शरणास्थल में जा रहे हों तो अपने कीमती सामान को किसी ऊँचे स्थान पर रख दें जिससे वह बहे या डूबे नहीं।

- आपातकाल के लिये कुछ अतिरिक्त भोजन जैसे दाल, चावल, शक्कर आदि घर में रखिये।

- किसी खुले या ढीले बिजली के तार को न छुएँ।

- अफवाह फैलाने और उनको सुनने से बचें।

- वृद्ध और बच्चों का विशेष ध्यान रखें और उनके खाने का प्रबन्ध रखें।

- बाढ़ के समाप्त होने के बाद स्वयं की और परिवार की चिकित्सकीय जाँच अवश्य करायें, चोट और किसी भी प्रकार की बीमारी में डॉक्टरों से सलाह लें।

- घर और आस-पास जमा हुए बाढ़ के कचरे के ढेरों को साफ करें।

- किसी भी नुकसान या क्षति की सूचना राजस्व विभाग को अवश्य दें।

(ब) सूखा

किसी ऋतु या किसी काल में आशानुरूप वर्षा न होने के कारण सूखा पड़ता है। कम वर्षा होने से मनुष्य, पौधों, पशुओं और कृषि की जल की आवश्यकताएँ पूरी नहीं हो पाती है। कम वर्षा होने से नदी, झील, जलाशयों और कुएँ सूखने लगते हैं क्योंकि इनमें से पानी अधिक निकाला जाता है और भूजल की आपूर्ति कम हो पाती है। पानी की कमी के कारण फसल भी अच्छी नहीं होती। ये सब बातें आने वाले सूखे के मुख्य सूचक हैं।

कारण

सूखा वर्षा की कमी के कारण होता है। मौसम विभाग के अनुसार यदि वार्षिक वर्षा का औसत 10% से अधिक कम हो जाता है, तब यह सूखे का सूचक है। सूखे की भीषणता का अनुमान वर्ष भर की वर्षा के औसत में होने वाली कमी से लगाया जाता है। पिछले कुछ समय में सूखों की संख्या में वृद्धि हुई है और इसका मुख्य कारण वनोन्मूलन और पर्यावरणीय अवक्रमण है।

प्रभाव

कृषि पर भी सूखे का भीषण प्रभाव पड़ता है। सबसे पहले सूखे से वर्षा पर निर्भर फसलें प्रभावित होती हैं। चरवाहे, भूमिहीन मजदूर, खेती पर निर्भर किसान, औरतें, बच्चे और फार्म के पशु सूखे के दुष्प्रभावों से सबसे अधिक प्रभावित होते हैं।

- फसल न होने पर या भोजन की कमी से भुखमरी और मृत्यु की ओर अग्रसर हो जाते हैं।

- डेयरी की गतिविधियाँ (दुग्ध उत्पादन), इमारती लकड़ी और मछली पालन प्रभावित हो जाता है।

- बेरोजगारी में वृद्धि हो जाती है।

- भूमिगत जल (भूजल) का स्तर कम हो जाता है।

- गहरे पानी भरे स्थानों से पानी को बाहर पम्प करके फेंकने से ऊर्जा की हानि होती है।

प्रायः लोगों को काफी पहले खतरे की सूचना देकर सुरक्षित स्थानों पर भेज दिया जाता है। जलग्रहण क्षेत्र में वर्षा की तीव्रता का माप जल वैज्ञानिकों को इतना अनुमान लगाने के लिये पर्याप्त होता है कि नदी में पानी बढ़ने से कितना क्षेत्र जलमग्न हो जायेगा। जल वैज्ञानिक बाढ़ आने से पहले ही उसका अनुमान लगा लेते हैं।

- जल-बिजली पावर प्लांट में ऊर्जा का उत्पाद कम हो जाता है।
- जैव विविधता की क्षति, लैंडस्केप (भूदृश्यों) की गुणवत्ता में कमी आ जाती है।
- स्वास्थ्य समस्याओं, गरीबी में वृद्धि, जीवनस्तर में कमी और सामाजिक अशांति के कारण लोग दूसरे स्थानों पर जाने लगते हैं।

प्रबन्धन

यदि कुछ उपायों को ध्यान में रखा जाय तो सूखे के प्रतिकूल प्रभावों को कम किया जा सकता है। वर्षा का नियमित रिकॉर्ड रखना, जलाशयों और पानी के भंडारों, नदियों, स्रोतों में पानी की उपलब्धता मांग के अनुपात में होनी चाहिये। जब मांग की तुलना में पानी कम हो तो पानी की खपत भी कम करनी चाहिये। पानी की खपत कम करने के लिये अनेक जल संरक्षण उपाय अपनाने चाहिये। इसमें जल की खपत कम करना, कुशलता और सावधानी से पानी का प्रयोग करना, पानी के बेकार होने को रोकना और प्रयोग किये पानी को छोटे कामों के लिये दोबारा प्रयोग में लाना शामिल है। सिंचाई और बुवाई की कुशल विधियों को कृषि में अपनाना चाहिये। ऐसी फसलों को लगाएँ जिनमें पानी की खपत कम हो। वर्षा के जल को एकत्रित करने से पानी की उपलब्धता बढ़ती है। वर्षा जल एकत्रित करने (प्रॉल्लेक्शन) का अर्थ है कि सब तरफ से बहकर आने वाला पानी एक ही स्थान पर इकट्ठा हो और जल भंडारण हो या पानी को भूमि में इतने नीचे तक जाने का रास्ता मिले कि भूमिगत जलस्तर बढ़ता रहे।

(स) भूकम्प

पृथ्वी की सतह की अपकृत (ऑइड्रॉफ़ी) चट्टानों में जमा हुई ऊर्जा का अचानक बाहर निकलना भूकम्प कहलाता है। इस अचानक निष्कासन से धरती कांप जाती है। भूकम्प वर्ष में किसी भी समय बिना किसी चेतावनी के अचानक आ सकते हैं और इसके कारण जान और माल की भारी क्षति होती है। 1993 में लातूर में और 2002 में भुज में आए भूकम्पों की त्रासदी को हम अच्छी तरह जानते हैं। भूकम्प की तीव्रता का अनुमान उसमें से मुक्त हुई ऊर्जा की मात्रा से सम्बन्धित है। जब धरती के भीतर छिपी ताकत चट्टानों के बीच से बाहर निकलती है। इसको एक यंत्र के द्वारा नापा जाता है जिसे ह्यह्यभूकम्पलेखीह्ल्ल (ग्रीरेड्जेंस) कहा जाता है। भूकम्प की तीव्रता रिक्टर स्केल (आविष्कारक सी.एफ. रिक्टर के नाम पर) पर मापी जाती है। नीचे दी गई निम्नलिखित मान क्षति की डिग्री को दर्शाते हैं।

आपदा और उनका प्रबंधन
कारण

पृथ्वी द्वारा ऊर्जा के निष्कासन का प्राकृतिक ढंग भूकम्प है। भूकम्प पृथ्वी के उन हिस्सों में ही आता है जहाँ भू-विज्ञान से सम्बन्धित त्रुटियाँ होती हैं। ऐसे क्षेत्र की पहचान पहले ही कर ली जाती है।

प्रभाव

संरचनात्मक क्षति (इमारती क्षति)

भूकम्प द्वारा भवनों, सड़कों, बांधों और स्मारकों की बहुत क्षति होती है। ऊँची-ऊँची इमारतें या ऐसी इमारतें जो कमजोर नींव पर खड़ी हैं विशेष रूप से भूकम्प से क्षतिग्रस्त होती हैं। घरेलू उपकरण विशेषरूप से बिजली के उपकरण और फर्नीचर की भी क्षति होती है। मानव और पशुधन जीवन की हानि होती है या इमारतों के गिरने से गम्भीर चोट लगती है इसके बाद जैसे हैजा, डायरिया, और संक्रमण से फैलने वाली महामारियाँ मानव जीवन को प्रभावित करती हैं। जल आपूर्ति, वाहित मल, संचार लाइनें, पॉवर लाइनें, परिवहन नेटवर्क और रेलमार्ग आदि आवश्यक सुविधायें अस्त-व्यस्त हो जाती हैं।

प्रबन्धन

भूकम्प के दुष्परिणामों से बचने के लिये निम्न तरीके अपनाने से इसके प्रभावों को कुछ कम किया जा सकता है:

भवनों का डिजाइन (रूप-आकार)

इमारतें इस प्रकार की डिजाइन करनी चाहिये कि वे भूकम्प के झटकों को झेल सकें, खासतौर से भूकम्प-संभावित क्षेत्रों में तो विशेष ध्यान रखना चाहिये। मिट्टी की भौतिक विशेषताओं का विश्लेषण किया जाना चाहिये, विश्लेषण करते समय भूकम्प को सहने की उसकी शक्ति का परीक्षण आवश्यक है। ब्यूरो ऑफ इन्डियन स्टैन्डर्ड्स (इ०११४ ड्वा कल्त्त्रल्लि र०ल्लशि) ने भवन निर्माण के लिये कुछ रूप-

रेखा और निर्देश तैयार किये हैं जो भूकम्प को सहने के लिये अपनाने अत्यंत आवश्यक हैं। प्रायः सम्बन्धित नगर निगम अधिकारी ही भवनों या इमारतों के डिजाइन को नियमों और सुरक्षा नियमों को पूरा करने पर ही स्वीकृति देते हैं। बिल्डर्स, आर्किटेक्ट, ठेकेदार, डिजाइनर, घर के मालिक और सरकारी अफसरों को इस सम्बन्ध में प्रशिक्षित करना आवश्यक है।

भूकम्प के घटित होने पर ली जाने वाली कुछ सावधानियाँ निम्नलिखित हैं-

- खुले स्थान में निकल जाएँ।

- शान्ति बना कर रखें, घबरा कर इधर उधर न भागें, लिफ्ट का प्रयोग कभी भी न करें, खिड़कियों से दूर रहें, फर्नीचर और शीशों से भी दूर रहें।

- मजबूत बीम के नीचे खड़े रहें क्योंकि वह गिरेगी नहीं या खाने की मेज या पलंग के नीचे घुस जायें।

- यदि आप किसी इमारत के नीचे खड़े हैं या अपने स्थान से हट नहीं सकते हो अपने सिर को, शरीर को अपने हाथों से, तकियों या कम्बल से ढक लें जिससे गिरने वाली किसी वस्तु से चोट न लग जाये।

- यदि बहुमंजिला इमारत में हैं तो उसी मंजिल पर रहिए लिफ्ट या सीढ़ियों की ओर न दौड़ें न लिफ्ट से नीचे उतरें।

- यदि रास्ते में हैं और यात्रा कर रहे हों तो अपनी गाड़ी को इमारतों, दीवारों, पुल, पेड़, बिजली के खम्बों और तारों से दूर ही खड़ी करें।

- जो कुछ क्षति हुई हो उसको देखें और बाधा को साफ करें।

- चोट आदि को देखें, प्राथमिक उपचार दें और लें, दूसरों की मदद करें।

- यदि आपका घर भूकम्प के कारण बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया है तो तुरन्त घर से बाहर आ जायें। साथ में आपातकालीन आवश्यक चीजें जैसे खाना, पीना, प्राथमिक उपचार का बॉक्स, दवाइयाँ, फ्लैश लाइट या टॉर्च, मोमबत्ती, माचिस, कपड़े आदि यदि सम्भव हो तो साथ ले लें।

- इमारतें विशेषकर पुरानी और ऊँची इमारतों, बिजली के खम्बों, तारों और दीवारों से दूर ही रहें।

चक्रवात एक प्रकार से हिंसक तूफान होते हैं, ये एक प्रकार की तेज और बहुत उच्च वेग वाली हवाएँ हैं जो निम्न वायुमंडलीय दबाव के शान्त केन्द्र के चारों ओर तीव्रता से घूमती हैं। यह शान्त केन्द्र प्रायः आगे की ओर बढ़ता है, कभी-कभी इनका वेग 50 कि-मी-/घंटा होता है। चक्रवात अचानक ही घटित होते हैं जबकि इनको बनने में लम्बा समय लग जाता है। चक्रवात के बाद प्रायः तेज वर्षा होती है जिसके कारण बाढ़ भी आ जाती है। उपग्रहों के द्वारा इनके द्वारा प्रभावित होने वाले संभावित क्षेत्रों का पूर्वानुमान लगाया जा सकता है और वहाँ के निवासियों को चेतावनी दी जा सकती है। चेतावनी और स्थान परिवर्तन प्रस्तावित मार्ग के अनुसार ही होना चाहिये।

हल्के भार वाले मिट्टी, लकड़ी के निर्माण, पुरानी इमारतें जिनका ढाँचा और दीवारें कमजोर हो चुकी हैं और जिनकी नींव की मजबूत पकड़ नहीं है, चक्रवात के समय भारी खतरे में पड़ जाती है। समुद्री तट (रेडि) पर बसे निचले क्षेत्र इनसे सीधे ही खतरे में पड़ जाते हैं। समीपवर्ती बसे क्षेत्र बाढ़, मडस्लाइड या भूस्खलन आदि होने से जल्दी प्रभावित होते हैं। टेलीफोन और बिजली के तार और खम्भे, दीवारें, पेड़, मछली पकड़ने की नावें, साइनबोर्ड आदि के लिये चक्रवात आने से खतरा बढ़ जाता है। हल्का इमारती ढाँचा जैसे फूस की झोपड़ी, टिन की छत वाले घर चक्रवात की क्षति को बहुत अधिक झेलते हैं। भारी वर्षा के कारण लोग और उनकी सम्पत्ति बाढ़ के पानी में बह सकती है या चक्रवात की तूफानी हवा में उड़

“

भूकम्प द्वारा भवनों, सड़कों, बांधों और स्मारकों की बहुत क्षति होती है। ऊँची-ऊँची इमारतें या ऐसी इमारतें जो कमजोर नींव पर खड़ी हैं विशेष रूप से भूकम्प से क्षतिग्रस्त होती

हैं। घरेलू उपकरण विशेषरूप से बिजली के उपकरण और फर्नीचर की भी क्षति होती है। मानव और पशुधन जीवन की हानि होती है या इमारतों के गिरने से गम्भीर चोट लगती है।

सकती हैं। तटीय क्षेत्र में आये चक्रवात के कारण समुद्र की लहरें भूमि पर पहुँच जाती हैं और बाढ़ आ जाती है इससे प्रभावित क्षेत्रों में मिट्टी और पानी में खारापन आ जाता है। इसके कारण पानी की आपूर्ति और कृषि फसलों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

चक्रवात-संभावित क्षेत्र को पहचानना बहुत आवश्यक है। चक्रवात संभावित क्षेत्र में किसी प्रकार के विकास कार्य की अनुमति नहीं देनी चाहिए। ऐसी इमारतें बनानी चाहिये जो हवा और बाढ़ों की तीव्रता को झेल सकें। किसी ढाँचे की पकड़ रखने वाले तत्व मजबूती से जमीन में गड़े होने चाहिये जिससे वे अपने ऊपर टिके ढाँचे को मजबूती से सम्भाल सकें। तट के किनारे लगे वन चक्रवात के प्रभाव को काफी हद तक कम करने में समर्थ होते हैं। अतः आवश्यक है कि समुद्री तट के किनारे-किनारे ग्रीन बैल्ट (तटों के साथ-साथ पेड़ उगाना) को विकसित किया जाय।

सुनामी प्रायः सैस्मिक (भूकम्पीय) समुद्री लहरें या ज्वार भाटा लहरें या आकस्मिक समुद्री लहरें आदि नामों से भी जाना जाता है। ये प्रायः अन्तः समुद्री भूकम्प के कारण आती है जो समुद्र सतह के नीचे 50 कि.मी. (30 मील) से कम दूरी पर उठता है जिसकी तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 6-5 से अधिक होती है। पानी के नीचे या तट पर भूस्खलन या ज्वालामुखी फटने से भी सुनामी आ सकती है। ऐसी लहरों के लिये प्रायः ज्वार-भाटा (टाइडल) लहरें शब्दों का प्रयोग किया जाता है। परन्तु यह भ्रामक और अनुचित है क्योंकि इन सुनामी लहरों का ज्वार-भाटे (टाइड) से कोई सम्बन्ध नहीं है।

सुनामी की लहरें सीधी, क्रमिक, अनिश्चित रूप से घटती-बढ़ती लहरें समुद्र की सतह पर बहुत दूरी पर पैदा होती हैं और ये चौड़े होते हुए (फैलते हुए) घरे के रूप में होती हैं कुछ ऐसे ही जैसे किसी उथले तालाब में कंकड़ फेंकने से पैदा होती है। इसमें सावधानी पूर्ण किया गया निरीक्षण बहुत व्यावहारिक महत्त्व रखता है। भूकम्प वैज्ञानिक संभावित खतरे की चेतावनी तटीय क्षेत्रों को तुरन्त ही दे सकते हैं। जैसे ही कोई भूकम्प आता है तभी चेतावनी देने से सुनामी आने के कई घंटों पहले लोग सतर्क हो जाते हैं।

लहरें जैसे-जैसे महाद्वीपीय तटों की ओर बढ़ती हैं उनका तल उथला होता जाता है जिस पर लहरों के घर्षण से लहरों की तीव्रता और वेग कम होता जाता है। वेग कम होने के कारण लहरों की ऊँचाई 50 मीटर या उससे भी अधिक हो जाती है। तीन से पाँच मुख्य अनिश्चित दोलन लहरों के कारण सबसे अधिक नुकसान होता है। फिर भी सुनामी का प्रभाव अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग प्रकार का ही होता है।

सुनामी के दुष्प्रभाव भी चक्रवात या बाढ़ों की भाँति ही हैं। समुद्री पानी की बड़ी लहरें तीव्र वेग के साथ अंदर घुस आती है और आस-पास का भूक्षेत्र जलमग्न होने से बस्तियाँ, फसलें और दूसरी अन्य सम्पत्ति बुरी तरह से नष्ट हो जाती हैं। दिसम्बर 2004 में आये सुनामी ने अनेक देशों में, विशेषकर इंडोनेशिया, मलेशिया, श्रीलंका, भारत में भीषण विनाश और तांडव मचाया था। आन्ध्र प्रदेश और तमिलनाडु के तटीय जिलों का बहुत बड़ा क्षेत्र इसकी चपेट में आ गया था। 8 एशियाई देशों में, भारत सहित, दो लाख से अधिक लोगों की जानें चली गई थीं।

सुनामी के प्रतिकूल प्रभावों को कम करने के लिये चक्रवात या बाढ़ के लिये ली जाने वाली सावधानियाँ ही अपनानी चाहिए।

पाठगत प्रश्न 12.1

1. परिभाषा बताइये- बाढ़ भूकम्प चक्रवात सुनामी
2. बाढ़ों को रोकने के कोई दो उपाय बताइये।
3. सुनामी का कोई एक दुष्प्रभाव बताइये।
4. चक्रवात के बाद प्रायः बाढ़ क्यों आती है?
5. समुद्र में कौन से परिवर्तन आते हैं जिनके कारण सुनामी का पूर्वानुमान लगाया जा सकता है?

(ब) मानव-निर्मित या मानव विकास के कारण उत्पन्न आपदा प्रकृति में अनेक आपदा मानव गतिविधियों के कारण पैदा हो जाती हैं। उनका वर्णन नीचे किया जा रहा है-

आग

किसी वस्तु के जलने की घटना को आग कहते हैं। ये प्रायः विध्वंसकारी होती हैं जिसमें जीवन और सम्पत्ति (जान और माल) दोनों की ही हानि होती है। प्रायः देखा गया है कि आग में मरने वालों की संख्या कभी-कभी चक्रवात, भूकम्प, बाढ़ और दूसरी अन्य प्राकृतिक आपदाओं में मरने वालों की कुल संख्या से भी अधिक

होती है। आग जंगल और वन्य जीवों के लिये बहुत बड़ा खतरा है क्योंकि आग बहुत तेजी से फैलती है और कम समय में भयावह रूप से क्षति करती है। शहरों में घर, झुग्गियों, इमारतों, विशेषकर गोदाम और फैक्ट्री आग की चपेट में आते हैं। आग एक बड़े क्षेत्र में फैल जाती है। बहुत से लोग जलने तथा दम घुटने के कारण मर जाते हैं। इसके कारण हवा, पानी और मिट्टी भी संदूषित हो जाते हैं जिससे फसलों, वनस्पतियों, जानवरों और भूमि के उपजाऊपन पर दुष्प्रभाव पड़ता है। ग्रीष्म ऋतु में आग के कारण जान और माल का बहुत अधिक नुकसान होता है। आग लगने के अनेकों कारण हो सकते हैं उनमें से कुछ का वर्णन नीचे दिया जा रहा है:

- जलती हुई दियासलाई या सिगरेट को लापरवाही से फेंकने से।
 - घरों में आग के स्रोत आग का कारण हो सकते हैं, जैसे कैरोसीन स्टोव या गैस स्टोव पर खाना पकाते हुए कपड़ों में आग लग जाना।
 - खाना पकाते हुए दुर्घटनाएं घर में आग लगने का मुख्य कारण होते हैं। अनदेखी या उपेक्षित तरीके से खाना पकाने के कारण आग लग सकती है।
 - बिजली के तारों में शॉर्ट सर्किट होने से भी आग लग सकती है। बिजली के उपकरणों का अधिक गर्म होना, निम्न कोटि के बिजली के उपकरणों का प्रयोग करना ये सभी आग लगने के कारण हैं।
 - घरों के आस-पास और सड़कों के दोनों ओर जमा कूड़े-कचरे के ढेर आग का कारण बन जाते हैं, जब लोग लापरवाही से माचिस की तीली या सिगरेट के जलते टुकड़े फेंक देते हैं।
 - ज्वलनशील पदार्थों का भंडारण और स्थानान्तरण बिना उचित सावधानियों के करना भी आग लगने का कारण होता है।
 - जंगल की आग भी मनुष्य की लापरवाही और अवहेलना के कारण फैलती है।
- हताहत
- आग से जलने या गंभीर चोट के कारण मानव और पशुओं के जान और माल का भारी नुकसान होता है। गाँवों में भंडारित पूरी की पूरी फसल ही कभी कभी आग की चपेट में आकर राख हो जाती है और मालिक का अत्यधिक नुकसान होता है।
- आग से बचने के लिये सुरक्षा नियमों का पूरी तरह पालन करें और आग लगने पर बताये गये निकास के मार्ग को अवश्य याद रखें।
 - ज्वलनशील पदार्थों और रसायन को पूर्ण सावधानी से व्यवहार में लाएं और भंडारण का सावधानीपूर्वक प्रबन्ध करें।
 - घर में अग्निशमन यंत्र अवश्य रखें और उसका उपयोग करना भी मालूम होना चाहिए।
 - घर से बाहर जाते समय सावधानीपूर्वक बिजली और गैस के सभी उपकरणों को बन्द कर दें।
 - एक ही सॉकेट में बहुत से प्लग न लगायें।
 - माचिस की डिब्बियाँ बच्चों की पहुँच से दूर रखें।
 - पहुँच या प्रवेश मार्ग को भारी अत्कारी या फर्नीचर से बाधित न करें।
 - आग लगने पर तुरन्त ही फायर ब्रिगेड को फोन करें।
 - धुएँ से भरी जगह में पैरों और पेट के बल फर्श पर रेंगकर चलें क्योंकि धुआँ फर्श पर कम होता है।
 - अपने घर से बाहर निकलने के दो रास्ते अवश्य बना कर रखें।
 - कार्यस्थल और घर से कचरे और व्यर्थ सामान को नियमित रूप से हटाते रहें।

सुनामी की लहरें सीधी, क्रमिक, अनिश्चित रूप से घटती-बढ़ती लहरें समुद्र की सतह पर बहुत दूरी पर पैदा होती हैं और ये चौड़े होते हुए (फैलते हुए) घरे के रूप में होती हैं कुछ ऐसे ही जैसे किसी उथले तालाब में कंकड़ फेंकने से पैदा होती है। इसमें सावधानी पूर्ण किया गया निरीक्षण बहुत व्यावहारिक महत्त्व रखता है।

- खतरनाक पदार्थ जैसे पेन्ट, सॉल्वेंट, आसंजक (ऑक्सीजन), रसायन या गैस सिलिंडर का भंडारण अलग स्थान पर करें जो आग से बहुत दूर हो।
- हमारे देश में दीपावली पर होने वाली आतिशबाजी आग का प्रमुख कारण है। उनका उपयोग सावधानी से और बड़ों के निरीक्षण में ही करें।
- (ब) सड़क, रेल और हवाई परिवहन दुर्घटनाएँ

सड़क दुर्घटनाएँ

सड़क परिवहन का विकास अधिक और सरल सम्पर्क एवं सेवा के लिये किया गया है। गाड़ियों की संख्या में वृद्धि, सड़क के नियमों की अवहेलना, तीव्र गति से वाहन चलाना, नशे में वाहन चलाना और गाड़ियों तथा सड़कों का खराब रखरखाव सड़क दुर्घटनाओं के मुख्य कारणों में से कुछ हैं। सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के लिये निम्नलिखित सावधानियाँ अपनानी चाहिये:

- सड़क पार करते समय दोनों ओर देखें।
- पैदल सड़क पार करते समय जेबरा क्रॉसिंग से ही पार करें।
- दुपहिया वाहनों पर सवारी करते समय हैलमेट अवश्य पहनें।
- कार में दी गई सीट बेल्ट अवश्य लगाएं।
- उचित ड्राइविंग लाइसेंस मिलने पर ही गाड़ी चलाएं।
- सड़क यातायात चिन्हों को अच्छी तरह समझकर उन्हें पहचानें और पालन करें।
- लेन में बहुत अधिक इधर-उधर गाड़ी न घुसाएं। दूसरे ड्राइवरों (चालकों) के लिये आपकी चाल का अनुमान करना कठिन हो सकता है।
- उद्वेगता और दुःसाहस से गाड़ी न चलाएं। अनावश्यक रूप से गाड़ियों को ओवरटेक न करें।
- सड़क पर सुरक्षात्मक वाहन चलाने का सबसे अच्छा और उचित तरीका ह्यबल्लेन ड्राइविंग है।
- गाड़ी चलाते समय अचानक गति को तीव्र करना या अचानक ब्रेक न लगाया करें।
- पुराने घिसे टायर और खराब हेडलाइट को बदल दें।
- टायरों की हवा, रेडियेटर का पानी, ब्रेक ऑयल और ईंधन (पेट्रोल, डीजल) का नियमित निरीक्षण करते और करवाते रहें।
- सामने से आती गाड़ी को देखकर अपनी गाड़ी की तेज लाइट को कम कर दें।
- निमार्ता के बनाए रखरखाव कार्यक्रम का पूरी तरह पालन करें।
- वाहन चलाते हुए अधीरता, क्रोध और नशे से बचें, सड़क आक्रोश (रोड रेज) खतरनाक होता है।
- यदि कोई अनहोनी घटना घटित हो जाती है तो शांत रहें।
- आग लगने की स्थिति में जल्दी से जल्दी वाहन से बाहर निकल जायें तथा सामान की चिन्ता न करें।

रेल दुर्घटना

रेल दुर्घटनाएँ प्रायः मनुष्य की गलती से, तोड़ फोड़ से, या पहाड़ी रेल ट्रैक पर भू-स्खलन से या आग लगने के कारण होती हैं। रेल दुर्घटना में जान और सम्पत्ति का बहुत हानि होती है। भारतीय रेलवे को प्रतिवर्ष इन दुर्घटनाओं के कारण भारी नुकसान उठाना पड़ता है। कुछ सुरक्षात्मक तरीकों को सावधानी से अपनाने से दुर्घटनाओं और उसमें होने वाली हानियों को कम किया जा सकता है:

- रेलवे क्रॉसिंग पर सिग्नल और झूलते हुए बैरियर पर ध्यान दें। जबरदस्ती नीचे से निकल कर पार करने की कोशिश न करें।
- बिना चौकीदार वाली क्रॉसिंग पर गाड़ी से उतर कर ट्रैक पर सावधानी से दोनों ओर निरीक्षण करें, तब ही पार करें।
- ट्रेन को पुल पर या किसी सुरंग में न रोकें क्योंकि वहाँ से निकल कर भागना असम्भव है।
- ट्रेन में ज्वलनशील पदार्थ लेकर यात्रा न करें।
- चलती गाड़ी से बाहर झुककर न झाकें।
- ट्रेन में धूम्रपान न करें।
- बिना आवश्यकता के आपातकालीन चेन को खींचकर गाड़ी न रोकें।

हवाई दुर्घटनाएँ

हवाई दुर्घटनाएँ यांत्रिकी खराबी के कारण, आग से, खराब लैंडिंग और टेक ऑफ (असुरक्षित उतारना और उठाना), मौसम की दशा, अपहरण (हाइजैक) और

बम गिरने की स्थिति में होती है। हवाई दुर्घटनाओं को कम करने के कुछ सुरक्षात्मक प्रबन्ध निम्नलिखित हैं:

- उड़ान स्टाफ द्वारा दिये गये सुरक्षा नियमों के प्रदर्शन को ध्यानपूर्वक देखें और समझें।
- हवाई जहाज में रखे सुरक्षा कार्ड को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
- आपातकालीन निकास कहाँ पर है इसे जाने और इसको कैसे खोला जाता है इस बात की जानकारी प्राप्त करें।
- सीट पर बैठे हुए हमेशा अपनी सीट बेल्ट बांधें रहें।
- शांत रहें और उड़ान कर्मीदल द्वारा दिये गये निर्देशों का पालन करें।
- यदि आपातकालीन द्वार आप स्वयं खोल रहे हैं तो बाहर झाँक कर देखें यदि बाहर आग दिखाई दे तो दरवाजा न खोलें क्योंकि खोलने से आग अन्दर आ सकती है। बाहर जाने का अन्य रास्ता लें।
- याद रखिए धुआँ ऊपर की ओर उठता है, यदि केबिन में धुआँ है तो नीचे ही रहने की कोशिश करें।
- यदि आपके पास कोई कपड़ा है तो उसे अपनी नाक और मुँह पर बांध लें।

औद्योगिक दुर्घटनाएँ

औद्योगिक दुर्घटनाएँ विस्फोट, आग और विषाक्त तथा खतरनाक रसायनों के रिसाव के कारण होती हैं। औद्योगिक दुर्घटनाओं के कारण जीवन और सम्पत्ति का भारी नुकसान होता है। रसायनों का रिसाव मानव भूलों के कारण, यांत्रिक गड़बड़ी के कारण या भू-सम्बन्धी खतरे जैसे भूकम्प, बाढ़ आदि के कारण भी हो सकता है। किसी उद्योग में आग मनुष्य की गलती से या बिजली की गड़बड़ी (शार्ट सर्किट) के कारण लग सकती हैं।

औद्योगिक परिसर और उससे लगी हुई बस्ती औद्योगिक दुर्घटना के समय सबसे अधिक खतरे का सामना करती है। पास के क्षेत्र में रहने वाले कर्मचारी और निवासी और उनके जानवर तथा फसलें इन दुर्घटनाओं से बुरी तरह प्रभावित होते हैं। एक बहुत बड़े क्षेत्र का पर्यावरण प्रदूषित हो जाता है। खतरनाक रसायन वातावरण या जल संकायों में घुल जाने से बहुत दूर तक खतरा बन जाते हैं। यहाँ तक कि औद्योगिक क्षेत्र के चारों ओर का पूरा पारितंत्र ही क्षतिग्रस्त हो जाता है। वर्ष 1984 में भोपाल त्रासदी में यही हुआ। जब 45 टन मिथाइल आइसो-साइनेट (टक्क मिक्) गैस रिस कर पूरे वातावरण में फैल गई थी और 2500 से अधिक लोग मारे गये थे।

विस्फोट, आग या विनाशक रसायनों के रिसाव से निर्माण (इमारतें) भी बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो जाती हैं। यदि रसायन गैस के रूप में होता है तो उसका भौगोलिक विस्तार बहुत तेजी से और दूर तक होता है। विस्फोट या आग द्वारा हुई यांत्रिक क्षति से अनेकों लोग मारे जाते हैं या विषैले रसायन की विषाक्तता से मारे जाते हैं। हवा में घुला जहरीला रसायन श्वास द्वारा, आँखों के रास्ते, त्वचा के संपर्क से और खाने के साथ शरीर में पहुँचता है। प्रदूषक पदार्थ शरीर में अपना प्रभाव तुरन्त भी दिखा सकता है और दीर्घकालीन प्रभाव भी पड़ता है। तुरन्त होने वाले प्रभाव में मृत्यु के साथ अन्य लक्षण भी होते हैं जैसे चक्कर आना, सिरदर्द, चिड़चिड़ापन आदि। दीर्घकालीन प्रभाव में कैंसर, दिल का दौरा, मस्तिष्क की क्षति, प्रतिरक्षा प्रणाली का असफल होना, अंग विकृति, प्रजनन विकृति अथवा बच्चों में जन्मजात दोष (जन्म से) उत्पन्न हो जाते हैं।



विस्फोट, आग या विनाशक रसायनों के रिसाव से निर्माण (इमारतें) भी बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो जाती हैं। यदि रसायन गैस के रूप में होता है तो उसका भौगोलिक विस्तार बहुत तेजी से और दूर तक होता है।

विस्फोट या आग द्वारा हुई यांत्रिक क्षति से अनेकों लोग मारे जाते हैं या विषैले रसायन की विषाक्तता से मारे जाते हैं। हवा में घुला जहरीला रसायन श्वास द्वारा, आँखों के रास्ते, त्वचा के संपर्क से और खाने के साथ शरीर में पहुँचता है।

खतरनाक रसायनों की तालिका बनाना

यह महत्वपूर्ण है कि पूर्ण आवश्यक सूचनाओं के साथ संकटदायी (खतरनाक) रसायनों की सूची बनी होनी चाहिये जिसमें रसायन की विशेषता, भंडारण का स्थान तथा उससे संभावित खतरे, सबकुछ लिखा होना चाहिए। यह सूचना प्रत्येक कर्मचारी और पड़ोस में रहने वाले सभी निवासियों को होनी चाहिए। सबको उनसे उत्पन्न संभावित खतरों के विषय में ज्ञान होना चाहिये। सम्भावित जोखिम भरे क्षेत्र को विशेष रूप से चिह्नित कर देना चाहिये। खतरों से सावधान करने के साथ आपातकाल में बचाव के मार्ग से अवगत कराना भी आवश्यक होता है।

उद्योग का स्थान

फैक्ट्री कभी भी रिहाइशी इलाके में नहीं लगानी चाहिये। औद्योगिक क्षेत्र और रिहाइशी इलाके में दूरी बनाने के लिये हरित पट्टी विकसित कर देनी चाहिए।

समुदाय की तैयारी (सामुदायिक सावधानी)

समुदाय के सभी व्यक्तियों को खतरे की ओर उससे बचने की योजना (तरीकों) की जानकारी होनी ही चाहिए। समुदाय के कुछ सदस्यों को संभावित खतरे पर नियमित रूप से ध्यान रखना चाहिए और सुरक्षा प्रशिक्षण में भाग लेते रहना चाहिये।

अन्य तरीके

विषाक्त रसायनों की सीमित मात्रा ही भंडार में रखें। अग्निशमन क्षमताओं को और समृद्ध बनाएँ, चेतावनी माध्यमों में सुधार लाएँ। प्रदूषण को फैलने से रोकने के लिये अधिक साधन अपनाएँ जाएँ। आपातकालीन राहत को विकसित किया जाए। कर्मचारी और आस-पास रहने वाले लोगों के विकास के लिये उचित प्रबन्ध करें। आस-पास रहने वालों के लिये और कर्मचारियों के लिये बीमा योजना होनी चाहिए और उसे कानून द्वारा मान्यता मिले।

12.3 जैविक (जीव-विज्ञान सम्बन्धी) आपदा

12.3.1 महामारियाँ

महामारी उस बीमारी या अन्य स्वास्थ्य सम्बन्धी घटना को कहा जाता है जो प्रायः बहुत बड़ी संख्या को एक साथ प्रभावित करे। जब बहुत से लोगों को एक ही बीमारी अचानक होती है तो उसे महामारी अनुमानित किया जाता है। महामारियों को रोकने के लिये तुरन्त ही बहुत बड़े पैमाने पर कार्य करने की आवश्यकता है। किसी भी आपदा के बाद संक्रमण से फैलने वाले रोगों के एक दम फैलने की सम्भावना बहुत अधिक हो जाती है।

स्वच्छता का उचित प्रबन्ध न होना ही बीमारी फैलने का प्रमुख कारण है। स्वच्छता न होने से जल दूषित हो जाता है जिसमें बीमारियों को फैलाने वाले कीटाणु पैदा होते हैं और पनपते हैं। बदलता मौसम भी बीमारी का कारण है। बदलता मौसम कीटों के प्रजनन के लिये अनुकूल समय होता है। जनसंख्या (उदाहरण पर्यटक और प्रवासी) गरीबी और भीड़ का प्रतिरोधी न होना, बीमारियों का वाहक है।

महामारी सामूहिक बीमारी या मौत का कारण होती है। समाज में व्यवधान और आर्थिक क्षति जैसे द्वितीयक प्रभाव भी इनके कारण हो सकते हैं। अतिसंवेदनशीलता उन लोगों में अधिक होती है जो कुपोषण का शिकार है, लोग अस्वच्छ वातावरण में बगैर सफाई वाली दशाओं में रहते हैं, जल आपूर्ति घटिया गुणवत्ता की होती है, स्वास्थ्य सेवाओं की पर्याप्त सुविधा नहीं होती है।

बचाव के लोक स्वास्थ्य उपायों को और अधिक मजबूत करने की आवश्यकता है। व्यक्तिगत सुरक्षा के लिये टीकाकरण एक प्रभावशाली तरीका है। स्वच्छता में सुधार, कीटाणु उत्पन्न होने के स्थानों पर दवाओं का छिड़काव, और घर व नगर के कूड़े-के उचित निपटान का प्रबन्ध होने से महामारी और रोगों से बचा जा सकता है। महामारियों से लड़ने के लिये उस क्षेत्र के लिये एक आकस्मिक योजना तैयार करके रखनी चाहिये। प्रारम्भ से ही समय रहते सतर्क करने से और नियमित परीक्षण करने से प्रारम्भिक अवस्था में ही रोग को नियंत्रित किया जा सकता है इससे विकराल रूप में महामारी को फैलने से पहले ही रोका जा सकता है। कुछ बीमारियाँ जो महामारी का रूप ले सकती हैं उनका वर्णन नीचे किया जा रहा है:

(अ) डेंगू (ज़िल्लेंथी)

डेंगू को ब्रेक बोन फीवर (इंश्री'डुल्लली गीपी१, हड्डी तोड़ बुखार) या डांडीफीवर (उल्लटि त्थेपी१) के नाम से भी जाना जाता है। यह बहुत तेज, संक्रमित, मच्छरों

द्वारा उत्पन्न, रक्तस्राव होने वाला बुखार है। बुखार के साथ ही इसमें जोड़ों में असहनीय दर्द और अकड़न होती है इसीलिये इसका नाम ब्रेक बोन फीवर (हड्डी तोड़ बुखार) भी है। डेंगू मच्छरों द्वारा स्थानांतरित एक वाइरस के कारण होता है। यह मच्छर एडिस एजिप्टी या एशियन टाइगर मच्छर के नाम से जाना जाता है। यदि मच्छर किसी ऐसे व्यक्ति को प्रथम तीन दिनों में काट ले जो इस रोग से ग्रसित है तो वह उस रोग के कीटाणुओं का वाहक बन जाता है। मच्छर में 8-10 दिन तक इस वाइरस को प्रभावशाली बनने में लगते हैं। इसके बाद वह मच्छर जीवन भर इस वाइरस को वहन करता है। त्वचा पर काटने से वाइरस मानव शरीर में प्रवेश कर जाता है। इसके लिये कोई विशेष उपचार नहीं है। इसलिये बचाव और सुरक्षा पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। मच्छरों पर नियंत्रण करने से डेंगू को फैलाने से रोका जा सकता है।

(ब) एचआईवी और एड्स

साल 2001 में रहस्यात्मक रूप से प्रतिरक्षा तंत्र की विकृति की आरम्भिक रिपोर्ट के 20 साल हो गये थे जिसे एड्स (या एक्वायर्ड इम्यूनो डेफिशियंसी सिंड्रोम) के नाम से जाना जाता है। यह रोग प्रतिरक्षा तंत्र की विकृति का रोग है और जानलेवा है। इस महामारी के कारण विश्व भर में 21 मिलियन लोग मारे जा चुके हैं। अनुमान है कि 2001 तक 36 मिलियन लोग एचआईवी के संक्रमण को लेकर जी रहे हैं। यह बीमारी एक वाइरस से फैलती है वाइरस का नाम एचआईवी (ह्यूमन इम्यून वाइरस) है। यह वाइरस प्रायः समागम से अथवा रक्त संचारण से फैलता है।

(स) मैड काऊ रोग बोवाइन स्पांजिफार्म एनसिफालोपैथी)

बोवाइन स्पांजिफार्म एनसिफालोपैथी (बीएसई या मैड काऊ रोग) पशुओं (मवेशियों) में एक संक्रमित एजेंट के कारण होता है जिसका इन्क्यूबेशन काल बहुत लंबा प्रायः दो से पाँच साल के बीच का होता है। लक्षणों के प्रकट होने के बाद एक साल में मृत्यु हो जाती है। इसका कोई उपचार या बचाव के तरीके अभी तक ज्ञात नहीं हैं।

सर्वप्रथम यह रोग 1986 में यूनाइटेड किंगडम में देखा गया। वहाँ यह मैड काऊ रोग एक महामारी की तरह फैला था, विशेषकर दक्षिणी इंग्लैंड में। मैड काऊ रोग के फैलने के बाद मनुष्य में फैलने वाले मस्तिष्क ज्वर में सम्बन्ध चिन्ता का विषय बन गया। वहाँ पर संक्रमित बीफ (गौमांस) खाना इसका कारण हो सकता है।

1. आदमी की लापरवाही के कारण होने वाली तीन आपदाओं का नाम बताइये।
2. सड़क दुर्घटनाओं से कैसे बचा जा सकता है?
3. रिहाइशी इलाकों से दूर रसायनों का भंडारण करना क्यों आवश्यक है।
4. आग की आपदा के कोई दो कारण बताइये।
5. एचआईवी (लक्कर)/एड्स (अक्कर) जैसी बीमारियों को आपदा क्यों कहा जाता है?

सामुदायिक स्तर पर आपदा प्रबन्धन

जब कभी कोई भी आपदा आती है तब अनेक सरकारी और गैर सरकारी संस्थाएं और समाज (समुदाय) आपदा प्रबन्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उनकी तैयारी, प्रतिक्रिया, पुनःप्राप्ति और बचाव का विस्तृत वर्णन इस प्रकार है: आपदा प्रबन्धन के चार मुख्य घटक होते हैं: तैयारी समाज और संस्थाएं आपदा के दुष्प्रभावों का सामना करने के लिये तैयार हैं या नहीं।



स्वच्छता का उचित प्रबन्ध न होना ही बीमारी फैलने का प्रमुख कारण है। स्वच्छता न होने से जल दूषित हो जाता है जिसमें बीमारियों को फैलाने वाले कीटाणु पैदा होते हैं और पनपते हैं।

बदलता मौसम भी बीमारी का कारण है। बदलता मौसम कीटों के प्रजनन के लिये अनुकूल समय होता है। जनसंख्या (उदाहरण पर्यटक और प्रवासी) गरीबी और भीड़ का प्रतिरोधी न होना, बीमारियों का वाहक है।

पर्यावरण सामाजिक मुद्दे, समस्याएँ, संघृत विकास



सामाजिक मुद्दे एवं पर्यावरण: अपोषणीय से पोषणीय या संघृत विकास की ओर पृथ्वी तथा इसके निवासियों का भविष्य हमारी क्षमताओं से संबद्ध पर्यावरणीय अनुरक्षण तथा परिरक्षण पर निर्भर करता है। इसी संदर्भ में पर्यावरण के दीर्घावधिक उपयोग एवं अभिवृद्धि के लिये संघृत विकास की संकल्पना का विकास हुआ है। 1990 के दशक में यह माना जाने लगा कि पर्यावरणीय संसाधनों के अतिदोहन या अविवेकपूर्ण तरीकों से उपयोग करने पर पर्यावरणीय ह्रास तथा अस्थिरता उत्पन्न हो रही है। यह सर्वाधिक विकासशील देशों में देखा गया है।

पोषणीयता या संघृतता सभी प्राकृतिक पर्यावरणीय तंत्रों का एक अन्तर्निमित लक्षण है, जो मानवीय हस्तक्षेप को न्यूनतम स्तर पर स्वीकार करता है। यह किसी तंत्र की क्षमता तथा उसके सतत प्रवाह को अनुरक्षित रखने के लिये संबद्ध करता है, जिसके फलस्वरूप वह तंत्र अपना स्वस्थ अस्तित्व रख पाता है। पर्यावरणीय संसाधनों के मानवीय उपयोग तथा पर्यावरणीय तंत्रों में हस्तक्षेप के कारण यह अन्तःनिर्मित क्षमता विकृत हो जाती है, जो इसे असंघृत बना देती है।

इसके विपरीत अर्थशास्त्रियों का तर्क है कि संसाधनों के दोहन तथा अवनयन से शोध एवं विकास को बढ़ावा मिलता है तथा संसाधनों के नए विकल्पों के बारे में खोज की ओर अग्रसर होते हैं, लेकिन हर सम्भावना की भी एक सीमा होती है। संरक्षणवादी एवं पारिस्थितिकीविद एक लम्बे समय से प्राकृतिक पर्यावरणीय तंत्रों में विद्यमान पोषणीयता से अवगत थे, लेकिन संघृत विकास की संकल्पना का विकास दो दशक पूर्व ही हुआ। संघृत विकास शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग विश्व संरक्षण रणनीति में 1980 में किया गया, लेकिन यह विस्तार से 1987 में पर्यावरण एवं विकास पर विश्व आयोग द्वारा प्रचारित किया गया। भावी पीढ़ी की अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता में ह्रास किए बिना वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करना ही संघृत विकास है।

संघृत विकास की संकल्पना में निम्नांकित दो संकल्पनाएँ निहित हैं- आवश्यकताओं की संकल्पना पर विचार किया जाना चाहिए जिसमें विशेष रूप से विश्व के गरीब लोगों की आवश्यकताओं पर बल दिया जाए।

वर्तमान एवं भविष्य की आवश्यकताओं को पूर्ण करने वाली पर्यावरणीय क्षमता पर प्रौद्योगिकी और सामाजिक संगठन द्वारा निर्धारित सीमाओं पर विचार किया जाए। लम्बे समय से यह मान्यता रही है कि पृथ्वी तथा इसके निवासियों का भविष्य प्रकृति के अनुरक्षण एवं संचयन की हमारी क्षमताओं पर आधारित रहा है। प्रकृति प्रदत्त जीवन निर्वाहन व्यवस्था को बचाने में हमारी क्षमताओं में कमी आते ही पर्यावरण असंतुलित हो जाता है। इसी संदर्भ में संघृत विकास से संबंधित निम्न प्रसंग महत्वपूर्ण हैं-

“ पोषणीयता या संघृतता सभी प्राकृतिक पर्यावरणीय तंत्रों का एक अन्तर्निमित लक्षण है, जो मानवीय हस्तक्षेप को न्यूनतम स्तर पर स्वीकार करता है। यह किसी तंत्र की क्षमता तथा उसके सतत प्रवाह को अनुरक्षित (टॉलरेंस) रखने के लिये संबद्ध करता है, जिसके फलस्वरूप वह तंत्र अपना स्वस्थ अस्तित्व रख पाता है। पर्यावरणीय संसाधनों के मानवीय उपयोग तथा पर्यावरणीय तंत्रों में हस्तक्षेप के कारण यह अन्तःनिर्मित क्षमता विकृत हो जाती है।



सभी नव्यकरणीय संसाधनों का पूर्ण उपयोग संघृत है।
पृथ्वी पर जीवन की विविधता संरक्षित है।
प्राकृतिक पर्यावरणीय तंत्रों का ह्रास कम हो गया है।

संघृत विकास के सिद्धांत

संघृत विकास की मान्यता है कि उपयुक्त प्रविधि एवं सामाजिक व्यवस्था द्वारा परिस्थितिकी तंत्र से पर्याप्त मात्रा में संसाधनों की प्राप्ति हो सकती है, जो मानव समाज की वर्तमान एवं भावी जरूरतों की पूर्ति कर सकते हैं, स्पष्ट यह ऐसा विकास नहीं जो पर्यावरण में विद्यमान संसाधनों के उपयोग पर नियंत्रण रखे जैसा कि पर्यावरण संरक्षण की मान्यता है। लेकिन यह पर्यावरण संरक्षण से हटकर संसाधनों के दोहन पर अंकुश नहीं लगाकर उनकी अभिवृद्धि पर बल देता है जिसके परिणामस्वरूप मानव एवं पर्यावरण के मध्य एक ऐसी परिवर्तनशील व्यवस्था का उद्भव होता है, जो संसाधनों के विदोहन, प्रौद्योगिकी विकास तथा संस्थागत परिवर्तनों के द्वारा मानव समाज की वर्तमान एवं भाव आवश्यकताओं के मध्य सामंजस्य स्थापित करने को महत्त्व देता है। इस प्रकार संघृत विकास निम्नलिखित सिद्धांतों पर आधारित है।

1. सामुदायिक जीवन की देखभाल एवं सम्मान करना।
2. मानव जीवन की गुणवत्ता में सुधार।
3. पृथ्वी की सहन क्षमता एवं विविधता का संरक्षण करना।
4. अनव्यकरणीय संसाधनों की गुणवत्ता का ह्रास को कम करना।
5. पृथ्वी की निर्वाहन क्षमता को बनाए रखना।
6. व्यक्तिगत दृष्टिकोण तथा नियमों में परिवर्तन।
7. सक्षम समुदायों द्वारा अपने पर्यावरण की देखभाल करना
8. समग्र विकास तथा संरक्षण के लिये एक राष्ट्रीय आधार तैयार करना
9. विश्वव्यापी गठबंधन का निर्माण करना।

इस प्रकार संघृत विकास पर्यावरण के ऐसे सकारात्मक संरक्षण पर बल देता है, जिसमें पर्यावरण के जैविक तथा अजैविक घटकों के रक्षण, अनुरक्षण, पुनर्स्थापना, दीर्घकालिक दोहन एवं अभिवृद्धि को समग्र रूप में महत्त्व प्रदान किया गया है। इस प्रकार संघृत विकास में निम्नांकित मुद्दे समाहित हैं-

संसाधनों के उपयोग के प्रतिरूपों की अन्तर्पीठिय उलझन

इसमें इस तथ्य पर बल दिया जाता है कि पर्यावरणीय धरोहर को संरक्षित करने के लिये प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के बारे में कितनी प्रभावकारी निर्णयन प्रक्रिया अपनाई जाए ताकि भावी पीढ़ियों को लाभ मिल सके।

निष्पक्षता पूर्ण संबंध

इसमें संसाधनों पर किसी की पहुँच अधिक है? प्रतियोगी दावेदारों में उपलब्ध संसाधनों का आवंटन कितनी ईमानदारी या पूर्णता के साथ है? आदि तथ्यों पर बल दिया जाता है।

समय संस्तर

लघु अवधि के आर्थिक लाभ या दीर्घ अवधि की पर्यावरणीय स्थिरता की दिशा में संसाधनों का आवंटन कितना निर्णय उन्मुखी है।

संघृत विकास पर्यावरण ह्रास को न्यूनतम हानि पहुँचाने वाली प्रौद्योगिकी को विकास, जनसंख्या नियंत्रण, संसाधन संरक्षण, भावी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए वर्तमान संसाधन उपयोग की रणनीति बनाने आदि पर निर्भर है। यद्यपि यह परिस्थितिकी तंत्र के उपयोग की कोई निरपेक्ष सीमा स्वीकार नहीं करता वरन इसमें उपयुक्त प्रौद्योगिकी विकास द्वारा संसाधनों की अभिवृद्धि कर आवश्यकताओं की पूर्ति पर बल देता है।

जल संरक्षण

विश्व में जल संकट निरंतर बढ़ता जा रहा है। 21वीं शताब्दी के इस प्रथम दशक में विश्व की 50 प्रतिशत जनसंख्या प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में जल संकट को महसूस कर रही है जिसके अंतर्गत दुनिया की 40 प्रतिशत आबादी का नेतृत्व करने वाले 80 देश आते हैं जो जल संकट की भयंकर चपेट में हैं। जल के

“

विश्व में जल संकट निरंतर बढ़ता जा रहा है। 21वीं शताब्दी के इस प्रथम दशक में विश्व की 50 प्रतिशत जनसंख्या प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में जल संकट को महसूस कर रही है जिसके अंतर्गत दुनिया की 40 प्रतिशत

आबादी का नेतृत्व करने वाले 80 देश आते हैं जो जल संकट की भयंकर चपेट में हैं। जल के मुख्य स्रोत नदियाँ हैं तथा विश्व की 50 प्रतिशत जनसंख्या 250 नदी बेसिनों में निवास करती हैं।



मुख्य स्रोत नदियाँ हैं तथा विश्व की 50 प्रतिशत जनसंख्या 250 नदी बेसिनों में निवास करती हैं। इनमें अनेक नदियाँ पूर्णरूपेण किसी एक देश में ही स्थित हैं। लेकिन कुछ नदियाँ अन्तर्देशीय हैं जिनका जल विभिन्न अनुपात में समझौतों के तहत उपयोग में लिया जाता है। प्रादेशिक तथा विश्व स्तर पर सभी देशों को स्वच्छ जल की मात्रा को संरक्षित करने की आवश्यकता है जिसके लिये विभिन्न भौगोलिक अवस्थितियों तथा परिस्थितियों में उपयुक्त विधि अपनाकर जल को संरक्षण प्रदान करना चाहिए। समय के साथ बढ़ती माँग एवं आर्थिक गतिविधियों की विविधता के संदर्भ में जल का उपयोग प्रतिरूप भी परिवर्तित हुआ है जिसे यद्यपि मूल रूप में पुनर्स्थापित नहीं किया जा सकता, वरन् समय के साथ बदलते परिवेश में संरक्षित किया जा सकता है। इसके लिये निम्नांकित विधियाँ कारगर सिद्ध होंगी-

जल की प्रदूषण से सुरक्षा

पृथ्वी पर उपलब्ध कुल स्वच्छ जल यदि प्रदूषण मुक्त रहे तो दुनिया की वर्तमान जनसंख्या की जलापूर्ति संबंधी सम्पूर्ण कार्यों के लिये पर्याप्त लेकिन शुद्ध जल का बड़ा भाग बढ़ती आर्थिक क्रियाओं तथा नगरीयकरण आदि के कारण जगत के उपयोग के योग्य नहीं रहा है। महासागरीय जल सागरीय पारिस्थितिकी तंत्र के रूप में पृथ्वी की एक प्रमुख पर्यावरणीय व्यवस्था है। लेकिन विगत शताब्दी में भारी मात्रा में प्रदूषण फैला है। सतही जल मुख्यतः नदियों व झीलों तथा भूमिगत जल भूगुह में विभिन्न गहराइयों में मिलता है जिसे प्रदूषित कर दिया गया है। नदियों के किनारे स्थित बड़े शहरों से विभिन्न अपशिष्टों का बिना उपचार के नदियों में प्रत्यक्ष विसर्जन किया जा रहा है। इसी प्रकार प्रसिद्ध झीलों तथा सागर तटों पर पर्यटन व्यवसाय ने युद्ध स्तर पर जल प्रदूषण फैलाया है। मानव अपनी जल संबंधी आवश्यकताओं के लिये भूजल पर सर्वाधिक निर्भर रहता है लेकिन कुछ विशिष्ट औद्योगिक इकाइयों ने भूमि के सुरक्षा कवच में स्थित इस जल राशि को भी प्रदूषित कर दिया है।

जल का पुनर्वितरण

भू-सतह पर पाया जाना वाला जल समान रूप से वितरित नहीं है। वितरण का वर्तमान प्रतिरूप भी संकट का कारण बन जाता है। अफ्रीका महाद्वीप में संसार की सर्वाधिक जल विद्युत सम्भाव्यता पायी जाती है क्योंकि यहाँ भूमध्यरेखीय प्रदेशों में जल की प्राप्ति अधिक है जबकि अफ्रीका के उत्तर में स्थित संसार का सबसे बड़े मरुस्थल सहारा वर्षभर जल संकट से ग्रस्त रहता है। सहारा के उत्तर में स्थित ह्वसहेलह प्रदेश में आने वाले सूखे विश्व प्रसिद्ध है। इसी प्रकार भारत के पूर्वोत्तर भाग में संसार की सर्वाधिक वर्षा (मोसिनराम 1187 सेमी.) प्राप्त होती है जबकि पश्चिम में 50 सेमी. वर्षा होती है, परिणामस्वरूप पूर्वोत्तर भारत में ब्रह्मपुत्र तथा इसकी सहायक नदियों में प्रतिवर्ष आने वाले जल का 60 प्रतिशत से अधिक भाग बिना उपयोग के ही लवणीय सागर में मिल जाता है। जबकि पश्चिमी राजस्थान में नदियाँ वर्ष के अधिकांश समय में शुष्क रहती हैं। अतः कम आवश्यकता वाले क्षेत्रों से अधिक आवश्यकता वाले क्षेत्रों को जलापूर्ति करके जल संकट को कम किया जा सकता है। इसके लिये सतह जल संग्रह स्थलों का निर्माण करके अतिरिक्त जल को अभावग्रस्त क्षेत्रों में एकत्रित करके आपूर्ति की जा सकती है। यह कार्य जलाशयों तथा नहरी जाल विकसित करके ही सम्पन्न हो सकता है। इस दृष्टि से भारत में चल रही नदियों को जोड़ने की योजना कारगर सिद्ध होगी। वर्षा से प्राप्त वह जल जो नदियों द्वारा बिना उपयोग में लिये ही बह जाता है, जलाशयों का निर्माण करके ऐसे जल को संग्रहीत किया जाता है, जिससे कृषि, उद्योगों, नगरों आदि को जल की पूर्ति की जाती है। जलाशयों में एकत्रित जल में परिवहन तथा मत्स्यन की सुविधाएँ भी रहती हैं। नदियों में बाढ़ों के प्रकोप से बचने के उद्देश्य से भी ये जलाशय बनाए जाते हैं जिनके द्वारा बाढ़ से बचाव के साथ ही उस जल का विविध रूपों में उपयोग करते हैं।

भूमिगत जल का विवेकपूर्ण उपयोग

विश्व स्तर पर भूजल कुल जल आपूर्ति का 25 प्रतिशत पूरा करता है। शेष 75 प्रतिशत नदियों, झीलों आदि सतही जलस्रोतों से होती है। भूजल की उपलब्ध मात्रा के अनुपात में इसकी माँग निरंतर बढ़ती जा रही है जिस कारण भूजल की मात्रा कम होती जा रही है। भूजल का दोहन एक बार होने के उपरांत पुनः पूर्ति काफी लम्बे समय में पूर्ण हो पाती है, अतः भूजल की पुनः पूर्ति के अनुपात में ही दोहन

किया जाना चाहिए। भारत में भूजल का सर्वाधिक उपयोग कृषि कार्यों में किया जाता है। कृषि जलवायु दशाओं के अनुसार जल की माँग वाली फसलें न बोकर व्यापारिक महत्त्व की फसलों को बढ़ावा दिया जा रहा है जिस कारण भूजल का अतिदोहन किया गया है। राजस्थान के 1984 में कुल 237 विकास खंडों में से 203 भूजल दोहन की दृष्टि से सुरक्षित वर्ग में थे लेकिन विगत दो दशकों में भूजल के युद्धस्तर पर किए गए दोहन के कारण सुरक्षित विकास खंडों की संख्या घटकर वर्ष 2001 में केवल 49 रह गई तथा शेष खंड भूजल दोहन की दृष्टि से अंधकारमय वर्ग में चले गए जहाँ भविष्य में विविध कार्यों हेतु आवश्यक मात्रा में भूजल उपलब्ध नहीं रहा है।

जनसंख्या नियंत्रण

जनसंख्या में तीव्र वृद्धि तथा जल संसाधन में प्रादेशिक रूप में मात्रात्मक एवं गुणात्मक कमी आने से जल संकट ने उग्र रूप ले लिया है। निरंतर जल की माँग बढ़ती जा रही है। जनसंख्या वृद्धि के साथ ही कृषि एवं उद्योगों का विस्तार तथा नगरीयकरण बढ़ा है जिससे स्वच्छ जल की माँग भी बढ़ी है। सन 1700 से लेकर 2000 के दशक तक जल की माँग में वृद्धि विकासशील देशों में अधिक रही है। सन 2001 तक सम्पूर्ण दुनिया के लिये प्रतिवर्ष आवश्यक मात्रा 4350 क्यूबिक किलोमीटर आकलित की गई है। इसका 60 प्रतिशत कृषि में, 30 प्रतिशत उद्योगों में तथा 10 प्रतिशत रसोई, स्नान व पेयजल में आवश्यक है। अतः जनसंख्या नियंत्रण के द्वारा भी जल की माँग को नियंत्रित किया जा सकता है तथा साथ ही बढ़ती जनसंख्या द्वारा किए जा रहे जल के गुणात्मक ह्रास को रोका जा सकता है। सन 2025 तक विश्व की जनसंख्या 8 करोड़ हो जाएगी जिसे मद्देनजर रखते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ ने स्पष्ट किया है कि समय रहते जनसंख्या नियंत्रण नहीं किया गया तो सम्पूर्ण विश्व को गम्भीर जल संकट का सामना करना पड़ेगा। संयुक्त राष्ट्र एवं केन्द्र सरकार ने वर्ष 2003 को ह्यस्वच्छ जल वर्ष घोषित किया है।

सिंचाई की उन्नत विधियों का उपयोग

विश्व स्तर पर वार्षिक जल के उपयोग में से 69 प्रतिशत कृषि क्षेत्र में उपयोग होता है। कृषि क्षेत्र में आवश्यक जल की पूर्ति सतही जलस्रोत तथा भूमिगत जल से होती है। सिंचाई की उन्नत विधि अपनाकर जल के बड़े भाग को संरक्षित किया जा सकता है। सिंचाई में अन्य सभी आवश्यकताओं की तुलना में दोगुने जल की आवश्यकता होती है। फव्वारा तथा बूँद-बूँद सिंचाई विधियों में जल की 50 प्रतिशत बचत होती है। बूँद-बूँद या टपक सिंचाई पद्धति में सतह पर छिद्रदार पाइप का जल फैलाया जाता है जिसे फसल को प्रत्यक्ष रूप में पानी मिल जाता है। इस पद्धति में वाष्पीकरण से हानि नहीं होती है तथा लगभग 95 प्रतिशत जल का उपयोग हो जाता है। इस प्रकार सिंचाई में जहाँ जल का सर्वाधिक उपयोग होता है। संरक्षण के लिये फसल के प्रतिरूप के अनुसार उन्नत सिंचाई पद्धतियाँ अपनाई जानी चाहिए।

वनावरण में वृद्धि

जलीय परिसंचरण के अंतर्गत प्रतिवर्ष भू-सतह पर वर्षा के रूप में विभिन्न मात्रा में जल प्राप्त होता है। यह जल सतही जलस्रोतों द्वारा प्रवाहित होता हुआ सागरों तक पहुँचता है। इसका कुछ भाग स्थिर जलस्रोतों (झील एवं तालाब) में संग्रहित हो जाता है तथा कुछ मात्रा में भू-सतह के अंदर रिसकर भूजल का रूप ले लेता



इसके लिये सतह जल संग्रह स्थलों का निर्माण करके अतिरिक्त जल को अभावग्रस्त क्षेत्रों में एकत्रित करके आपूर्ति की जा सकती है। यह कार्य जलाशयों तथा नहरी जाल विकसित करके ही सम्पन्न हो सकता है। इस दृष्टि से भारत में चल रही नदियों को जोड़ने की योजना कारगर सिद्ध होगी।

है। विगत शताब्दी में तीव्र गति से किए गए वनोन्मूलन के कारण वर्षाजल का अधिकांश भाग बिना भूमिगत हुए लवणीय सागरों में मिल रहा है। विश्व में सर्वाधिक वर्षा प्राप्त करने वाले क्षेत्र चेरापूँजी में विगत दशक में जल संकट उत्पन्न हो गया है क्योंकि यहाँ चूना पत्थर खनन हेतु वनावरण को नष्ट कर दिया गया। फलस्वरूप वर्षाजल तीव्रता से प्रवाहित होकर नदियों में मिल जाता है। ऐसा ही उत्तरांचल के देहरादून क्षेत्र में हो रहा है।

कृषि प्रतिरूप में परिवर्तन

कृषि जलवायु दशाओं के अनुसार फसल बोने पर अतिरिक्त जल की आवश्यकता नहीं होती है लेकिन विकास के वर्तमान दौर में तीव्रता से बदलते फसल प्रतिरूप के अंतर्गत लाभकारी फसलों ने स्थान पाया है। इन व्यापारिक फसलों को अधिक जल की आवश्यकता होती है। राजस्थान के उत्तरी-पूर्वी भाग में जल उपलब्धता के अनुपात में फसलें नहीं बोई गई तथा विगत तीन दशकों में सघन कृषि अपना ली गई। जल की उपलब्धता कम होने तथा फसलों में जल की अधिक माँग के कारण भूजल का अतिदोहन किया गया। फलस्वरूप भयंकर जल संकट उत्पन्न हो गया। अतः कृषि जलवायु दशाओं के अनुकूल फसल प्रतिरूप अपनाया जाए। जल की कम उपलब्धता वाले क्षेत्रों में कृषिवानिकी तथा बागानी कृषि को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

बाढ़ प्रबंधन

विश्व में बाढ़ के रूप में स्वच्छ जल का बड़ा भाग उपयोग में न आकर विनाशक बन जाता है। भारत के कुल क्षेत्रफल 328 करोड़ हेक्टेयर में से 4 करोड़ हेक्टेयर क्षेत्र बाढ़ प्रभावित है जिसमें से 32 करोड़ हेक्टेयर भूमि को बाढ़ से बचाया जा सकता है। तटबंधों व नहरों का निर्माण करके बाढ़ के नुकसान से बचाव के साथ-साथ जल के बड़े भाग को संरक्षित किया जा सकता है। सघन वृक्षारोपण भी बाढ़ से सुरक्षा प्रदान करके जल को मृदा में शोषित करने में सहायक है। भारत में इस दृष्टि से गंगा, यमुना, महानदी, दामोदर, कोसी आदि के अपवाह तंत्रों को बाढ़ प्रबंधन के अंतर्गत लेकर कुल 1.44 रु. करोड़ हेक्टेयर भूमि को सीमा तक बाढ़ से सुरक्षा प्रदान की गई है।

उद्योगों में जल की बचत

विश्व स्तर पर वार्षिक जल के उपयोग का 23 प्रतिशत औद्योगिक क्षेत्र में उपयोग होता है। कुछ विशेष उद्योगों में जल की खपत अधिक मात्रा में होती है तथा कुछ में जल के बड़े भाग को प्रदूषित कर दिया जाता है। रंगाई उद्योग तथा चमड़ा उद्योग इसी प्रकार के उद्योग हैं। एक टन इस्पात के निर्माण में 300 टन तक जल की आवश्यकता होती है। उद्योगों में जल की खपत जल की मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों रूपों में होती है। विकसित देशों में उद्योगों में जल के उपयोग का अनुपात अधिक (50 प्रतिशत) होता है जिसकी आपूर्ति 75 प्रतिशत सतही जलस्रोतों तथा 25 प्रतिशत भूमिगत जल द्वारा होती है। उद्योगों में जल को प्रदूषण से बचाने के साथ ही शुद्ध करके पुनः उपयोग का चक्र विकसित किया जाना चाहिए। क्योंकि सामान्यतः किसी औद्योगिक इकाई द्वारा एक बार उपयोग में लिया गया जल भू-सतह पर छोड़ दिया जाता है जो पुनः शोधन कर उपयोग में न लाने पर अन्य जलस्रोतों को भी प्रदूषित करता है। अतः उद्योगों में जल की मात्रा में कमी लाते हुए पुनः उपयोग किया जाना चाहिए।

शहरी अपशिष्ट जल का पुनः उपयोग

बढ़ते नगरीयकरण से शहरों में जल की माँग में वृद्धि हुई है। विश्व के अनेक देशों में शहरों एवं कस्बों में अपशिष्ट जल के उपचार की व्यवस्था नहीं है जिससे बड़ी मात्रा में जल पुनः उपयोग में आने के स्थान पर दूसरे जल स्रोतों को भी प्रदूषित करता है। यमुना के किनारे स्थित दिल्ली, आगरा, मथुरा आदि शहरों में यह स्थिति दृष्टिगत होती है जबकि अनेक देशों में शहरी जल को उपचारित करके शहर के निकटवर्ती खेतों में सब्जियों तथा फल उगाने में किया जाता है। शहरों में उपयोग में आने के उपरांत विसर्जित अपशिष्ट जल को उपचार के उपरांत नगरीय परिधि में कृषि उपयोग में लाने से जल संरक्षण के साथ ही विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति भी हो सकती है। नियोजित नगर विकास की नीतियों में इन नियमों का समावेश होना चाहिए।

(७) नगर निकायों द्वारा जल संरक्षण

नगर निकायों द्वारा व्यक्तिगत आवश्यकता वाले जल के संरक्षण के लिये जल माँग एवं आपूर्ति दोनों पक्षों का प्रबंधन किया जाना चाहिए। शहरों में वर्षाजल को मकानों की छतों पर एकत्रित करने की व्यवस्था को नियमबद्ध लागू करना आवश्यक है।

वर्षाजल का संचयन

भारत में पारम्परिक जल संग्रह स्थल जनसंख्या के एक बड़े भाग की जलापूर्ति करने में सक्षम रहे हैं लेकिन समय के साथ इनका अवनयन हुआ है। पारम्परिक जलस्रोतों में संग्रहीत जल का उपयोग कृषि एवं पेयजल दोनों रूपों में किया जाता रहा है। सिंचाई के लिये उपयोग में लायी गई पारम्परिक जल संरक्षण की पद्धतियों में पहाड़ी कुद्वल, जिंग (लद्दाख) कूल, अरुणाचल की जल कुंडियाँ जिन्हें खूप कहते हैं, नागालैंड की जाबो पद्धति, हरियाणा के आबी तालाब, असम के डाले पोखर, महाराष्ट्र के बंधरगारे, कर्नाटक के केरे, तमिलनाडु के इरी (तालाब), अंडमान निकोबार के जैकवेल तथा राजस्थान के नाडी, टांका, कुंड, खडीन कुई, बेरी, बावड़ी, झालरा टोबा आदि महत्त्वपूर्ण हैं।

पारम्परिक जल संग्रह प्रणालियों की शुरूआत जावा में सर्वप्रथम 3000 ई. पू. विशाल जलागार के निर्माण से हुई। भारत में हड़प्पा युगीन धौलावीरा की बस्तियों (3000-1500 ई.पू.) में उन्नत जल संचय और नालियों की व्यवस्था का पता चलता है। भारत में वर्षा की प्रकृति के अनुसार ही ये जल संरक्षण की विधियाँ विकसित की गई थी लेकिन बढ़ती जनसंख्या के भरण-पोषण हेतु कृषि विस्तार किया गया जिसके कारण इनका अवनयन हुआ है। किसी भी पारम्परिक जलस्रोतों का संरक्षण उसके जलीय भाग तक ही सीमित न होकर संपूर्ण अपवाह तंत्र तक विस्तृत होता है जहाँ से वर्षाजल प्रवाहित होकर उसमें संग्रहीत होता है। निरंतर बढ़ते कृषि क्षेत्र के कारण इनका अपवाह क्षेत्र नष्ट हो गया, जिसके फलस्वरूप इनमें जल की प्राप्ति कम हो गई तथा इनका अस्तित्व संकट में आ गया है।

इन जल संग्रह स्थलों को संरक्षित करके ही जल संकट से निजात पा सकते हैं। किसी भी भौगोलिक क्षेत्र में जब तक वर्षाजल को पूर्णरूपेण संरक्षित नहीं किया जाएगा तब तक जल संरक्षण की संकल्पना पूर्ण नहीं होगी। अतः मृत हो रहे पारंपरिक जल संग्रह स्थलों को पुनर्जीवित करने के लिये इनकी निगरानी रखनी होगी। आज संपूर्ण दुनिया इस तथ्य से अवगत हो गई है कि विशाल मात्रा में पाया जाने वाला जल भी बिना संरक्षण के हमारी पकड़ से दूर हो जाएगा। इस दृष्टि से गाँव स्तर पर पारंपरिक जल स्रोतों का स्वामित्व निजी होना चाहिए जिसका समर्थन विश्व बैंक ने किया है।

प्रकृति में उपलब्ध कुल जल संसाधन का एक बड़ा भाग महासागरों में पड़ा है जो लवणीय होने के कारण जैविक समुदाय के लिये उपयोग के योग्य नहीं है। जलमंडल का केवल 26 प्रतिशत भाग ही शुद्ध जल के रूप में है जिसका 77.23 प्रतिशत भाग हिमटोपियों, हिमखंडों तथा हिमनदों के रूप में जमा हुआ है। अतः उपयोग योग्य शुद्ध जल का केवल 20.77 प्रतिशत ही है जो भूजल, मृदा, नदी, स्वच्छ जलीय झीलों तथा नदियों में वितरित है। हिम के रूप में जमा जल मानवीय उपयोग से काफी दूर है जो आर्कटिक क्षेत्र, अण्टार्क्टिक महाद्वीप तथा उच्च पर्वतीय क्षेत्रों में स्थित है। पृथ्वी के जलीय परिदृश्य का अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि यहाँ बड़ी मात्रा में जल पाए जाने पर भी उसका आंशिक भाग ही जैविक समुदाय के उपयोग योग्य है जबकि बढ़ती जनसंख्या के साथ

बढ़ते नगरीयकरण से शहरों में जल की माँग में वृद्धि हुई है। विश्व के अनेक देशों में शहरों एवं कस्बों में अपशिष्ट जल के उपचार की व्यवस्था नहीं है जिससे बड़ी मात्रा में जल पुनः उपयोग में आने के स्थान पर दूसरे जल स्रोतों को भी प्रदूषित करता है। यमुना के किनारे स्थित दिल्ली, आगरा, मथुरा आदि शहरों में यह स्थिति दृष्टिगत होती है जबकि अनेक देशों में शहरी जल को उपचारित करके शहर के निकटवर्ती खेतों में सब्जियों तथा फल उगाने में किया जाता है।

जल की मांग भी सतत रूप में बढ़ रही है।

जीवमंडल में पाया जाने वाला जैविक समुदाय मुख्यतः धरातलीय एवं भूजल का ही उपयोग करता है जो सीमित मात्रा में उपलब्ध है तथा जिसका मुख्य स्रोत वर्षाजल है। भू-सतह को प्राप्त होने वाले वर्षाजल का एक बड़ा भाग प्रतिवर्ष बिना उपयोग में लिये प्रवाहित होकर लवणीय सागरों में मिल जाता है, परिणामस्वरूप जल की कमी पूर्ववत् बनी रहती है। अतः वर्षाजल के दक्षतम उपयोग (डस्रडे वरी) द्वारा संतुलित रूप में जलापूर्ति सम्भव है। वर्षाजल का संग्रहण विभिन्न उद्देश्यों के लिये किया जाता है जिनमें घरेलू उपयोग, कृषि के लिये, अकृषि भूमि में प्रवाह नियंत्रण के लिये वर्षाजल का संचयन मुख्य है।

वर्षाजल के संचयन के लिये भारत में विभिन्न परिस्थितिकीय क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न पद्धतियाँ विकसित की गई हैं जिनमें प्राचीन काल से वर्षाजल का संचयन किया जाता रहा है। इनमें संचित जल को घरेलू तथा सिंचाई कार्यों में उपयोग में लिया जाता कश्मीर में 12वीं सदी में सिंचाई व्यवस्था पूर्ण विकसित थी। पूर्वोत्तर राज्यों में 200 वर्ष पूर्व पथरीली भूमि से बांस की नलियों द्वारा जल संरक्षण की पद्धतियाँ अपना ली गई थी जो वर्तमान समय में भी विद्यमान है।

पश्चिमी भारत में कुंड, कुई, टांके, तालाब, बावडियाँ आदि 500 वर्ष पूर्व विद्यमान थी जिनमें वर्षा के पानी को संरक्षित करके उपयोग में लाया जाता रहा है। पूर्वी घाट को पहाड़ियों में लोगों ने मध्य पूर्व की तकनीकी के अनुसार पहाड़ियों में नीचे कुओं तक सुरंगें बनाई जिनसे जल अंतःस्फुटित होकर कुओं को पूरित करता है। इसी प्रकार पूर्वी पहाड़ियों में वर्तमान बूँद-बूँद सिंचाई प्रणाली की तरह, ही पान के बागानों में सिंचाई हेतु बांस की नलियों द्वारा विकसित की हैं जहाँ पर कोई विकल्प नहीं है वहाँ वर्षा के पानी को तालाबों में एकत्रित करके सिंचाई करते हैं जिसे मध्य प्रदेश में हवेली कहते हैं।

10.5 वर्षाजल को संग्रहित करने के लिये विभिन्न कृषि जलवायु क्षेत्रों में परंपरागत जल स्रोतों में सुधार के लिये सिफारिशें क्र.सं.

कृषि जलवायु क्षेत्र
वर्तमान तरीका
संस्तुति

- उत्तरी-पश्चिमी हिमालय के नमी वाले क्षेत्र
छत्तों के ऊपर का पानी एकत्रित करना, झरनों के पानी को मोड़कर जमा करना, गाँव के तालाब, पहाड़ी ढालों से प्राप्त पानी का जमा करना
छत्तों के ढाँचों में सुधार, नालीदार चदरों का प्रयोग जिससे अधिक पानी जुटाया जा सके, पानी को प्रदूषण से बचाने के लिये ढाँचों का सही तरह से निर्माण करना
- हिमालय के निचले क्षेत्र
तालाब एवं पहाड़ी ढलानों से बहने वाले पानी को जमा करना छत्तों द्वारा पानी एकत्रित
छत्तों पर पड़ने वाले पानी को जमा करने के लिये उपर्युक्त व्यवस्था बनाना
- उत्तरी-पूर्वी क्षेत्र (नमी एवं अधिक वर्षा वाले)
छत्तों द्वारा पानी एकत्रित करना, बारहमासी झरनों तथा अन्य जल स्रोतों को छत्तों पर पड़ने वाले पानी को जमा करने के लिये उपर्युक्त व्यवस्था बनाना छत्तों पर गिरने वाले जल को एकत्रित करने की व्यवस्था लाना
- असम, बंगाल के नमी वाले मैदानी क्षेत्र
तालाब, एनिकट, बांध, नाले कंटूर बांध
तालाबों के निर्माण में सुधार, पानी के प्रदूषण को रोकना व गंदा साफ करना।
- सतलज गंगा का अर्द्धशुष्क जलोढ़ क्षेत्र
तालाब, नाले, कंटूर बांध
तालाबों के निर्माण में सुधार पानी के प्रदूषण को रोकना
- उत्तर प्रदेश के अर्द्धशुष्क और शुष्क क्षेत्र
नाडी, टांका, खडीन, एनिकट, नाले, कन्टूर बांध
टांका और नाडी के डिजाइनों में सुधार, अन्तःस्थल बांध ढलवा तार
- विंध्यन के मध्यवर्ती अर्द्धशुष्क क्षेत्र सुधार
तालाब, बांध, कंटूर बांध, नाले अन्तःस्थल बांधारे
नाडी, टांका डिजाइनों में सुधार, ढलवाताल, बांधारे बनाना
- अधिक वर्षा वाले छोटा नागपुर के पठारी क्षेत्र
तालाब, एनिकट, बांध, नाले, कन्टूर बांध
तालाबों में रिसने व वाष्पीकरण द्वारा नष्ट हो रहे पानी को बचाने हेतु उनकी संरचना

में सुधार व गाद को साफ करना

9 काली मिट्टी सुनिश्चित और नर्मदा घाटी क्षेत्र वर्षा वाले मालवा पठार तालाब, रोकने वाले बांध अन्तःस्थल बांध

वर्तमान व्यवस्था में सुधार

10परिवर्ती वर्षा वाले दक्षिण के पठार का अनिश्चित वर्षा वाला दक्षिण मध्य भाग तालाब, बांध रिसावदार बांध, बंधारा नाले, अन्तःस्थल बांध, कंटूर बांध समतल पेटी वाले तालाब, पानी के संचालन से जुड़ी व्यवस्था में सुधार, काम में लायी जा रही व्यवस्थाओं में सुधार

11छत्तीसगढ़ के पठारी क्षेत्र

तालाब, बांध नाले, रिसावदार बांध, बंधारा व अन्तःस्थल बांध, कंटूर बांध समतल पेटी वाले तालाब, पानी संचालन के व्यवस्था में सुधार

12 दक्षिणी-पूर्वी लाल मिट्टी का क्षेत्र

तालाब, बांध रिसावदार तालाब, अन्तःस्थल बांध

समतल पेटी वाले तालाब पानी के संचालन से जुड़ी व्यवस्था में सुधार, भूजल का बेहतर प्रबंध

13 दक्षिणी के अनियमित वर्षा और मिश्रित वर्षा वाले क्षेत्र

तालाब, जलाशय, रिसावदार तालाब, नाले, अन्तःस्थल बांध

पानी के संचालन से जुड़ी व्यवस्था में सुधार, समतल पेटी वाले तालाब, भूजल का बेहतर प्रबंध

14 दक्षिण के दो प्रकार के वर्षा वाले क्षेत्र

जलाशय, तालाब रिसावदार तालाब, नाले बांध, कंटूर बांध

काम में लाई जाने वाली व्यवस्थाओं में सुधार

15 पूर्वी तटीय क्षेत्र

तालाब

सुरक्षित रखे

10.6 राजस्थान में वर्षाजल का संचयन

पानी के उचित प्रबंध हेतु पश्चिमी राजस्थान में आज भी पराती (लोहे का बड़ा बर्तन) में चौकी रखकर उस पर बैठकर स्नान करते हैं, ताकि शेष बचा पानी अन्यत्र घरेलू उपयोग में आ सके। राज्य में निम्नलिखित जल संरक्षण की संरचनाएँ महत्त्वपूर्ण हैं-

- तालाब: बरसाती पानी को संचित करने का तालाब प्रमुख स्रोत है। प्राचीन समय में बने इन तालाबों में अनेक प्रकार की कलाकृतियाँ बनी हुई हैं। इन्हें हर प्रकार से रमणीक एवं दर्शनीय स्थल के रूप में विकसित किया जाता है। इनमें अनेक प्रकार के भित्ति चित्र इनके बरामदों, तिबारों आदि में बनाए जाते हैं। कुछ तालाबों की तलहटी, के समीप कुओं बनाते थे जिन्हें बेरी कहते हैं।
- झीलें राजस्थान में जल का परम्परागत ढंग से सर्वाधिक संचय झीलों में होता है। यहाँ पर विश्व प्रसिद्ध झीलें स्थित हैं। जिनके निर्माण में राजा-महाराजाओं, बनजारों एवं आम जनता का सम्मिलित योगदान रहा है। विश्व प्रसिद्ध पुष्कर झील का अस्तित्व धार्मिक भावना से ओत-प्रोत है। इन तालाबों से सिंचाई के लिये भी जल का उपयोग होता है। इसके अतिरिक्त इनका पानी रिसकर बावडियों में पहुँचता है जहाँ से इसका उपयोग पेयजल के रूप में करते हैं।

“

बरसाती पानी को संचित करने का तालाब प्रमुख स्रोत है। प्राचीन समय में बने इन तालाबों में अनेक प्रकार की कलाकृतियाँ बनी हुई हैं। इन्हें हर प्रकार से रमणीक एवं दर्शनीय स्थल के रूप में विकसित किया जाता है। इनमें अनेक प्रकार के भित्ति चित्र इनके बरामदों, तिबारों आदि में बनाए जाते हैं।

3. नाडी: नाडी एक प्रकार का पोखर होता है, जिसमें वर्षाजल संचित होता है। इसका आगोर विशिष्ट प्रकार का नहीं होता है। राजस्थान में सर्वप्रथम पक्की नाडी निर्माण का विवरण सन 1520 में मिला है, जब राव जोधाजी ने जोधपुर के निकट एक नाडी बनवाई थी। पश्चिमी राजस्थान में लगभग प्रत्येक गाँव में एक नाडी अवश्य मिलती है। नाडी बनाते समय बरसाती पानी की मात्रा एवं जल ग्रहण क्षेत्र को ध्यान में रखकर ही जगह का चुनाव करते हैं। इनमें संचित पानी इनकी क्षमता के अनुसार चलता है। नाडी निर्माण करने वाले स्थान से ही उसका आगोर एवं जल निकास तय होता है। रेतीले मैदानी क्षेत्रों में नाडियाँ 3 से 12 मीटर गहरी होती हैं। इनका जल ग्रहण क्षेत्र (आगोर) भी बड़ा होता है।

4. बावड़ी: राजस्थान में कुआँ व सरोवर की तरह ही वापी (बावड़ी) निर्माण की परंपरा अति प्राचीन है। राजस्थान में बावड़ी निर्माण का मुख्य उद्देश्य वर्षाजल का संचय रहा है। आरम्भ में ऐसी बावड़ियाँ हुआ करती थी जिनमें आवासीय व्यवस्था हुआ करती थी। कालिदास ने रघुवंश में शातकर्ण ऋषि के एक कीड़ा सरोवर का उल्लेख किया है।

5. झालरा: झालराओं का कोई जलस्रोत नहीं होता है। ये अपने से ऊँचाई पर स्थित तालाबों या झीलों के रिसाव से पानी प्राप्त करते हैं। इनका स्वयं का कोई आगोर नहीं होता है। झालराओं का पानी पीने के लिये उपयोग में नहीं आता था। उनका जल धार्मिक रीति-रिवाजों को पूर्ण करने, सामूहिक स्नान व अन्य कार्यों हेतु उपयोग में आता था।

6. टोबा: नाडी के समान आकृति वाला जल संग्रह केन्द्र टोबा कहलाता है। टोबा का आगोर नाडी से अधिक गहरा होता है। इस प्रकार थार के रेगिस्तान में टोबा एक महत्वपूर्ण पारम्परिक जल स्रोत हैं। सघन संरचना वाली भूमि जिसमें पानी का रिसाव कम होता है। टोबा निर्माण हेतु उपयुक्त स्थान माना जाता है। इसका ढलान नीचे की ओर होना चाहिए। इसके जल का उपयोग मानव व पशुओं द्वारा किया जाता है। टोबा के आस-पास नमी होने के कारण प्राकृतिक घास उग जाती है, जिसे जानवर चरते हैं।

जलग्रहण प्रबंधन

जलग्रहण वह भौगोलिक इकाई क्षेत्र है, जिसमें गिरने वाला जल एक नदी या एक-दूसरे से जुड़ती हुई कई छोटी नदियों के माध्यम से एकत्रित होकर एक स्थान से होकर बहता है।

ढालू एवं पर्वतीय क्षेत्रों में केवल देखने से ही जलग्रहण क्षेत्रों की पहचान की जा सकती है। नदी के संगम स्थल से ऊपर की ओर का क्षेत्र जिसमें पड़ने वाला जल इस स्थान से होकर बह रहा है, उस नदी के जलग्रहण क्षेत्र की सीमा निर्धारित करेगा। जैसे विकासखंड, गाँव व जिला आदि की अपनी एक भौगोलिक सीमा होती है, परंतु उक्त सीमा प्रकृति द्वारा निर्धारित होती है और इसमें प्रशासकीय आवश्यकताओं हेतु परिवर्तन नहीं किया जा सकता है।

सामान्यतः कुछ लक्षण छोटे अथवा बड़े हर जलग्रहण में विद्यमान रहते हैं, जैसे-

1. हर जलग्रहण क्षेत्र का सम्पूर्ण पानी सिर्फ एक निकास से जलग्रहण की सीमा पार करता है।

2. कोई भी क्षेत्र एक ही श्रेणी के दो जलग्रहण क्षेत्रों में नहीं आता है। विकास से संबंधित पूर्व के अनुभवों पर आधारित विशेषकर सूखा सम्भावित व पर्वतीय क्षेत्रों में यह महसूस किया गया कि विभिन्न विकास कार्यक्रमों का परस्पर समन्वय अधिकतम सर्वांगीण विकास के लिये आवश्यक है। विकास के नाम पर पिछले कुछ दशकों में विकास संसाधनों का अंधाधुंध दोहन किया गया है। फलतः अधिकांश क्षेत्रों में संसाधनों की उपलब्धता में अत्यधिक कमी का अनुभव किया जा रहा है, जो कि ढाँचागत विकास पर भी विपरीत प्रभाव डाल रही हैं।

अब समय की मांग है कि तेजी से कम होते संसाधनों को संरक्षित एवं पुनर्जीवित किया जाए। उपलब्ध संसाधनों को पुनर्जीवित करना उनको संरक्षित किए बिना कठिन है। भूमि एवं जल संरक्षण परस्पर जुड़े हुए हैं व इनका यह संबंध जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करता है। इनको संरक्षित करने के लिये सर्वाधिक उपयुक्त तरीका यह होगा कि हम अपने प्रयासों को एक सीमित क्षेत्र के अंदर केन्द्रित करें। प्राथमिक संसाधनों के परस्पर सुधार संबंध में लाने तथा इसके उचित प्रबंधन हेतु भूमि एवं जल के द्वारा निर्धारित क्षेत्र जलग्रहण में कार्य करना ही सर्वाधिक उपयुक्त है।

जलग्रहण क्षेत्र की सीमा के अंतर्गत होने वाली विभिन्न प्रक्रियाएँ उपलब्ध संसाधनों के ऊपर प्रभाव डालती है। किसी भी विकास प्रक्रिया का टिकाऊ

(पोषणीय) होना संसाधनों के परस्पर संबंधों को गहराई से समझने व परिस्थितियों के अनुरूप कार्य करने पर निर्भर है। जलग्रहण विकास कार्यक्रम जहाँ प्राथमिक संसाधनों के बेहतर उपयोग द्वारा पैदावार बढ़ाने का एक समन्वित प्रयास है, वहीं इसमें इस बात का ध्यान रखा गया है कि प्राकृतिक संतुलन पर किसी प्रकार का प्रतिकूल असर न पड़े।

जलग्रहण विकास कार्यक्रम की तकनीक स्थानीय समस्याओं पर अपना ध्यान केन्द्रित करती है और स्थानीय लोह के सहयोग से परंपरागत ज्ञान का लाभ उठाते हुए इनका समाधान तलाशने का प्रयास करती है। स्थानीय लोगों के सहयोग से तलाशे गए समाधान समाज में आसानी से प्रचलित किए जा सकते हैं वैसे ही सदियों से संसाधनों का उपयोग परोक्ष रूप से जलग्रहण की सीमाओं द्वारा ही निर्धारित किया जाता रहा है। उदाहरण के तौर पर शुष्क एवं पहाड़ी क्षेत्रों में आज हम जो भूमि उपयोग देखते हैं, वह प्राकृतिक संसाधनों के बेहतर उपयोग पर ही आधारित है और यह जलग्रहण की सीमाओं द्वारा संचालित है।

जलग्रहण की सीमा निर्धारण

हर जलग्रहण क्षेत्र किसी न किसी जलधारा से जुड़ा होता है और इसे प्रायः उसी जलधारा के नाम से जाना जाता है। वह पूरा का पूरा क्षेत्र जो इस जलधारा को पोषित करता है जलग्रहण की सीमा में आता है। जलधारा के चारों ओर के क्षेत्र में ऊँचे स्थानों व पहाड़ियों को मिलाने वाली रेखा साधारणतः जलग्रहण की सीमा का निर्धारण करती है। निश्चित श्रेणी का हर जलग्रहण क्षेत्र एक विशिष्ट स्थान घेरता है, अतः कोई भी स्थान एक ही श्रेणी के दो या अधिक जलग्रहण की सीमा में नहीं आ सकता। जलग्रहण विकास कार्यक्रमों को आरम्भ करने से पहले जलग्रहण क्षेत्र की समस्याओं का निर्धारण अत्यंत आवश्यक है। यह काम बहुत ही सरल है व निम्नलिखित बातें इस कार्य में सहायक होंगी-

सर्वप्रथम भारतीय सर्वेक्षण विभाग के भू-आकृति मानचित्र में संबंधित जलग्रहण क्षेत्र को ढूँढिए

इस क्षेत्र की जलधाराओं का अध्ययन कीजिए और ऐसा स्थान ढूँढिए जिससे होकर संबंधित जलग्रहण क्षेत्र का समस्त जल बाहर जाता है एवं उच्च श्रेणी की जलधारा को पोषित करता है।

चुने हुए स्थान के चारों ओर ऐसे ऊँचे बिन्दुओं की पहचान कीजिए जिनके दूसरी ओर का पानी बहकर संबंधित जलधारा में न आए

इन बिन्दुओं को मिलाने पर हमें उस जलग्रहण क्षेत्र की सीमाएँ मिलेंगी जिसमें कार्य करना चाहते हैं

अगर इच्छित क्षेत्र पूरी तरह से संबंधित जलग्रहण क्षेत्र में नहीं आता, तो इससे उच्च श्रेणी का जलग्रहण बनाएँ

4. किसी मुख्य नदी के दोनों ओर कई छोटे जलग्रहण क्षेत्र बनाने के बाद भी कुछ क्षेत्र किसी भी जलग्रहण क्षेत्र की सीमाओं में नहीं आते हैं और ये क्षेत्र इस नदी के वृहद जलग्रहण क्षेत्र में आएँगे।

बदलते समय की चुनौतियों का सामना करने के लिये यह सुनिश्चित किया जाए कि विकास नीतियों में आया परिवर्तन जो कि मरुस्थलीय व पर्वतीय क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियों के पूर्णतः अनुरूप है, वास्तविक अर्थों में निरूपित हो सके। गाँव स्तर पर यह अनुभव किया जा रहा है कि कार्यक्रम क्रियान्वयन से संबंधित कार्यकर्ता विकास गतिविधियों को करने में सक्षम है परंतु प्रभावी योजना निर्धारण व जलग्रहण प्रबंध से संबंधित तकनीकी सहायता का अभाव है।



विकास से संबंधित पूर्व के अनुभवों पर आधारित विशेषकर सूखा सम्भावित व पर्वतीय क्षेत्रों में यह महसूस किया गया कि विभिन्न विकास कार्यक्रमों का परस्पर समन्वय अधिकतम सर्वांगीण विकास के लिये आवश्यक है। विकास के नाम पर पिछले कुछ दशकों में विकास संसाधनों का अंधाधुंध दोहन किया गया है। फलतः अधिकांश क्षेत्रों में संसाधनों की उपलब्धता में अत्यधिक कमी का अनुभव किया जा रहा है।

जलग्रहण विकास कार्यक्रम के उद्देश्य

प्राथमिक संसाधनों के विकास की एक ऐसी रणनीति तैयार करना जिसके द्वारा हम अपने अल्पकालीन एवं दीर्घकालीन उद्देश्यों की पूर्ति सहजता से कर सकें। बेहतर भू-उपयोग एवं उत्पादन में पर्याप्त वृद्धि करना पानी के बहाव को नियंत्रित कर भूमि कटाव रोकना

जल संरक्षण एवं भूगर्भिक जल में वृद्धि करना

बाढ़ नियंत्रण, जलाशयों एवं नदियों में गाद का जमाव रोकना वैज्ञानिक और तकनीकी रूप से उपयुक्त कृषि, बागवानी एवं चारागाह पद्धतियों का विकास करना संक्षेप में, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जलग्रहण विकास कार्यक्रमों का उद्देश्य संसाधनों के बेहतर प्रबंधन द्वारा पोषणीय उत्पादकता प्राप्त कर स्थानीय लोगों के जीवन स्तर को सुधारना है।

जलग्रहण विकास कार्यक्रम में बाधाएँ

वर्तमान परिस्थितियों में कई प्राकृतिक एवं मानव जनित स्थितियाँ हैं, जो कि विकास की सामान्य गति को प्रभावित करती हैं, जिनमें प्रमुख निम्न हैं-

- अशिक्षा के कारण जागरूकता का अभाव
 - सहभागिता का अभाव एवं स्थानीय राजनीति
 - कठिन पहुँच कठिन भौगोलिक परिवेश
 - संवेदनशील पर्यावरण
 - तकनीकी जानकारी व उपयुक्त मानव क्षमता का अभाव
 - सही आकड़ों एवं सूचना तकनीकी का अभाव
 - अनुपयोगी व अकुशल विकासात्मक ढाँचा?
 - धन का अभाव
 - क्रियान्वयन एजेंसी एवं ग्रामीणों में परस्पर संशय का भाव
- इनके अतिरिक्त स्थान विशेष की अपनी भी कुछ व्यावहारिक कठिनाइयाँ हो सकती हैं।

पर्यावरण नैतिकता

प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह पर्यावरणीय शुद्धता तथा संरक्षण पर सर्वाधिक ध्यान दे। पर्यावरणीय समस्याओं को समझने के लिये शिक्षित होना भी आवश्यक है। वर्तमान समय में सूचना तथा संचार साधनों के विकास के कारण संसार के किसी भी कोने में घटित होने वाली घटना चारों ओर तीव्र गति से पहुँच जाती है।

इसी प्रकार विद्यालय में अध्ययनरत छोटे-छोटे विद्यार्थियों को जब शिक्षकों द्वारा गलत काम के लिये मना किया जाता है तो वे उनके प्रति सचेत हो जाते हैं तथा अपने गुरुजनों की आज्ञा का पालन करते हैं।

इसी प्रकार सामान्यतया जनसाधारण में भी पर्यावरणीय नैतिक मूल्यों का होना आवश्यक है। जनसाधारण के द्वारा ऐसा कोई कार्य नहीं किया जाना चाहिए जिससे पर्यावरण को क्षति पहुँचे जैसे पॉलिथीन थैलियों को उपयोग में नहीं लेना, जल को अनायास नहीं बहाना वृक्ष लगाना तथा बाग-बगीचों एवं वनों का संरक्षण करना, अपशिष्ट पदार्थों को ऐसी जगह डालना जिससे कोई नुकसान न हो तथा उनको परिवर्तित कर अहानिकारक बनाना आदि पर विशेष ध्यान देना चाहिए। इसी के साथ-साथ कृत्रिम वस्तुओं के अति उपयोग से भी बचना चाहिए। अकेले द्वारा कार्य का न होना आदि विचार मन में नहीं लाने चाहिए। इन सभी बातों पर ध्यान देने पर पर्यावरण का संरक्षण अपने आप हो सकता है। बड़े लोग स्वयं अपने ज्ञान तथा बुद्धि द्वारा एवं छोटे बड़ों के ज्ञान से पर्यावरण संरक्षण के प्रति सजग रहना ही पर्यावरण नैतिकता है।

पर्यावरणीय समस्याएँ

स्वच्छ वातावरण किसी भी समुदाय के समुचित विकास के लिये अत्यंत जरूरी है। पश्चिमी दुनिया में औद्योगीकरण के पश्चात आई तीव्र समृद्धि के बाद से पर्यावरणीय समस्याओं का श्रीगणेश हुआ। सम्पन्नता की होड़ में प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन किया गया और उसका परिणाम आज हमारे सामने पर्यावरणीय समस्याओं के रूप में प्रकट हो रहा है। बढ़ते शहरीकरण से कस्बों में बेतहाशा भीड़ है, अत्यधिक ध्वनि प्रदूषण और अस्वास्थ्यकर स्थितियाँ हैं जो मानव जीवन

के लिये हानिकारक हैं। वन विनाश से मौसमी चक्र में परिवर्तन हुआ है और भूजल सतह नीची हो गई। मनुष्य ने अपने निजी स्वार्थ के लिये समुद्रों, नदियों तथा अन्य जलस्रोतों को प्रदूषित कर दिया है, जिससे जल की पर्याप्त मात्रा होते हुए भी उसके गुणात्मक ह्रास से जल संकट उत्पन्न हुआ। तीव्र औद्योगिक क्रियाओं के कारण ओजोन परत के विनाश से वातावरण को गंभीर खतरा बन गया। विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों के अविवेकपूर्ण तथा अतिदोहन से पर्यावरण विभिन्न रूप से असंतुलित हो गया।

वर्तमान में मानवीय गतिविधियों के पर्यावरण के प्रति अविवेकपूर्ण दोहन की प्रवृत्ति अपनाने के कारण पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं, जिनका पृथ्वी पर विभिन्न रूपों में कमोबेश प्रभाव परिलक्षित हो रहा है। प्रमुख पर्यावरणीय समस्याएँ निम्नलिखित हैं-

जलवायु में परिवर्तन

पृथ्वी के साथ मनमानी छेड़छाड़ से सदियों से संतुलित जलवायु के कदम लड़खड़ा गए हैं। तीव्र औद्योगीकरण एवं वाहनों के कारण धरती दिन-प्रतिदिन गरमाती जा रही है। जलवायु परिवर्तन के कारण ध्रुवों की बर्फ पिघल रही है। पिछली सदी के दौरान औसत तापमान 0.3 से 0.6 डिग्री सैल्सियस की वृद्धि होने मात्र से ही जलवायु डगमगा गई है और खतरनाक नतीजे सामने आने लगे हैं। इस दौरान महासागरों का जल स्तर 10.25 सेंटीमीटर ऊँचा हो गया है, जिसमें 27 सेमी की बढ़ोतरी बढ़े हुए तापमान के कारण पानी के फैलाव से हुई है। जलवायु एक जटिल प्रणाली है, इसमें परिवर्तन आने से वायुमंडल के साथ ही महासागर, बर्फ, भूमि, नदियाँ, झीलें तथा पर्वत और भूजल भी प्रभावित होते हैं। इन कारकों के परिवर्तन से पृथ्वी पर पायी जाने वाली वनस्पति और जीव जंतुओं पर भी प्रभाव परिलक्षित होता है। सागर के वर्षा वन कहलाए जाने वाले मूंगा की चट्टानों पर पाए जाने वाली रंग-बिरंगी वनस्पतियाँ प्रभावित हो रही हैं। जलवायु परिवर्तन से सूखा पड़ेगा जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव खाद्यान्न उत्पादन पर पड़ेगा। जल की उपलब्धता भी घटेगी, क्योंकि वर्तमान समय में कुल स्वच्छ पानी का 50 प्रतिशत मानवीय उपयोग में लाया जा रहा है।

जलवायु परिवर्तन से कृषि के साथ ही वनों की प्राकृतिक संरचना भी बदल सकती है। सूक्ष्म वनस्पतियों से लेकर विशाल वृक्षों तक का तापमान और नमी का एक विशेष सीमा में अनुकूलन रहता है। इसमें परिवर्तन होने से ये वनस्पतियाँ या तो अपना स्थान परिवर्तित कर लेंगी या सदा के लिये विलुप्त हो जाएगी। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि बढ़ती जनसंख्या एवं शहरीकरण के कारण इन्हें दूसरा रास्ता ही अपनाना होगा। इस प्रकार जलवायु परिवर्तन से विश्व के एक-तिहाई वनों को खतरा है। कुछ तापमान से वनाग्नि की घटनाएँ भी बढ़ रही हैं। वनाग्नि से वायुमंडल की कार्बनडाइ ऑक्साइड की मात्रा बढ़ सकती है। जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से अनिश्चितता की स्थिति में आने वाले मुख्य क्षेत्र?

- नदियों एवं झीलें में जल की अनुक्रिया
- उष्णकटिबंधीय चक्रवातों की बारम्बारता
- स्थायी हिम के पिघलने का प्रतिरूप हिमनदों
- हिमटोपियों की अनुक्रिया
- सागर तल में उत्थान की सीमा
- सागर तल के उत्थान से पुलिन क्षेत्रों की अनुक्रिया
- प्रवाल भित्तियों, डेल्टा तथा आर्द्र भूमि की स्थिति



इसी प्रकार सामान्यतया जनसाधारण में भी पर्यावरणीय नैतिक मूल्यों का होना आवश्यक है। जनसाधारण के द्वारा ऐसा कोई कार्य नहीं किया जाना चाहिए जिससे पर्यावरण को क्षति पहुँचे जैसे पॉलिथीन थैलियों को उपयोग में नहीं लेना, जल को अनायास नहीं बहाना वृक्ष लगाना तथा बाग-बगीचों एवं वनों का संरक्षण करना, अपशिष्ट पदार्थों को ऐसी जगह डालना।

पृथ्वी को जलवायु परिवर्तन होने से कई संक्रामक रोगों का प्रकोप भी तीव्र गति से बढ़ रहा है। ठंडे देशों में लू जैसी हवाएँ चलने लगी है। 1995 के जुलाई माह में सिकागो में एक सप्ताह तक गर्म हवाएँ (लू) चली। जिससे 50 लोग मारे गए। जलवायु परिवर्तन एवं मलेरिया में अनुकूल संबंध है, क्योंकि मलेरिया फैलाने वाले मच्छर और मलेरिया परजीवि दोनों को ही ठंडी जलवायु रास नहीं आती है, बढ़ते तापमान में ये स्वतंत्र कार्य करते हुए अनेक संक्रामक रोग फैलाते हैं। रवाण्डा में सन 1960 में एक डिग्री सैल्सियस तापमान बढ़ने से मलेरिया में दोगुनी वृद्धि हो गई। कुख्यात डेंगू बुखार भी तापमान वृद्धि से ही होता है। वैज्ञानिक का मानना है कि जलवायु परिवर्तन के कारण पुनः उत्पन्न होने वाले संक्रामक रोगों का सर्वाधिक कहर विकासशील देशों को झेलना पड़ेगा। अतः प्रकृति की ओर वापसी का मूल मंत्र अपनाना होगा।

विश्व तापमान में वृद्धि

औद्योगिकरण की बढ़ती प्रक्रिया के कारण वायुमंडल में कार्बनडाइ ऑक्साइड की मात्रा बढ़ी है, जिसमें हरित ग्रह प्रभाव को जन्म दिया है। पृथ्वी पर पाई जाने वाली कार्बनडाइ ऑक्साइड की मात्रा बढ़ने से धरती की सतह से परावर्तित किरणों द्वारा उत्सर्जित होने वाली तापीय ऊर्जा को वायुमंडल से बाहर जाने से रोकती है। इस प्रकार तापीय ऊर्जा के वायुमण्डल में सान्द्रण से धरती के औसत तापमान में वृद्धि होती है जिसे विश्व व्यापी तापन कहते हैं।

वैज्ञानिकों का मानना है कि विश्व तापमान में वृद्धि के कहर से पृथ्वी की जलवायु परिवर्तित होगी जिसके तहत वर्षा में कमी आएगी। वर्षा की कमी का प्रत्यक्ष प्रभाव कृषि पर पड़ेगा तथा सूखे की स्थिति उत्पन्न होगी। तापमान वृद्धि एवं वर्षा की कमी के कारण वन क्षेत्र तेजी से घटेगा जिससे जैव विविधता का भी ह्रास होगा। तापमान वृद्धि के लिये कार्बन डाइऑक्साइड के अतिरिक्त मिथेन, क्लोरोफ्लोरोकार्बन यौगिक तथा नाइट्रस ऑक्साइड भी उत्तरदायी है। भू-मंडल के गरमाने से नजदीकी और दूरगामी दोनों प्रभाव मानव स्वास्थ्य एवं पर्यावरण के लिये घात हों। नजदीकी प्रभावों में तापीय वृद्धि के कारण मृत्यु सूखा, तूफान, बाढ़ एवं पर्यावरण अवनयन प्रमुख है। दूरगामी प्रभावों में संक्रमण एवं संबंधित रोग, खाद्य समस्या, अकाल तथा जैव विविधता को खतरा पैदा होगा। इनके अतिरिक्त ताप वृद्धि से ध्रुवीय एवं कुछ पर्वतीय बर्फ पिघलने से समुद्री किनारे पर स्थित कई शहर डूब सकते हैं।

अम्ल वर्षा

मानव के लिये जल विभिन्न उपयोगों हेतु महत्वपूर्ण है। यह जल मुख्य रूप से वर्षा से प्राप्त होता है। वर्तमान समय में मानव जनित स्रोतों से निःसृत सल्फर डाइ ऑक्साइड वायुमंडल में पहुँचकर जल से मिश्रित होकर सल्फेट तथा सल्फ्यूरिक अम्ल का निर्माण करती है। जब यह अम्ल वर्षा के साथ धरातल पर पहुँचता है तो इसे अम्ल वर्षा कहते हैं। जल की अम्लता को मापते हैं, जब जल का ढल-7 हो तो उसे तटस्थ जल कहते हैं। सामान्य वर्षा का ढल 5 होती है, लेकिन ये मानक 4 से कम होता है तो यह जल जैविक समुदाय के लिये हानिकारक होता है। जितनी अधिक मात्रा में सल्फर डाइ ऑक्साइड और नाइट्रोजन ऑक्साइड का सान्द्रण वातावरण में होगा उतना ही वर्षाजल का ढल घटेगा।

वैज्ञानिकों का मानना है कि अम्ल वर्षा सल्फर डाइ ऑक्साइड और नाइट्रोजन ऑक्साइड उगलने वाले औद्योगिक एवं परिवहन स्रोतों के क्षेत्रों तक सीमित नहीं होती वरन् वह स्रोत क्षेत्रों से दूर अत्यधिक विस्तृत क्षेत्रों को प्रभावित करती है, क्योंकि अस्त वर्षा के उत्तरदायी कारक प्रदूषक (जैसे- सल्फर डाइ ऑक्साइड) गैसीय रूप में होते हैं, जो हवा एवं बादलों द्वारा दूर तक फैल जाते हैं। कभी-कभी अम्ल वर्षा को झील कातिल भी कहते हैं, क्योंकि यहाँ के विभिन्न जल स्रोतों, झीलों, तालाबों एवं छोटे बड़े जल भण्डारों आदि के जल जीवों की मृत्यु का उत्तरदायी कारक अश्व वर्षा को माना गया है।

अम्ल वृष्टि के कारण मृदा उत्पादकता प्रभावित होती है। अम्लता के कारण मृदाओं के खनिज तथा अन्य पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। अम्ल वर्षा वनों को भी प्रभावित करती है। अनेक ऐतिहासिक इमारतें तथा स्मारक जो संगमरमर तथा लाल पत्थर से निर्मित हैं उन पर अम्ल वृष्टि से संश्लरण के कारण क्षति हो रही है। भारत में ताजमहल, मोती मस्जिद, लाल किला आदि को अम्ल वृष्टि से क्षति हो रही है। भारत में वर्तमान समय में अम्ल वृष्टि की समस्या अमरिकी एवं पश्चिमी देशों की तुलना में इतनी विकराल नहीं है।

10.9.4 ओजोन परत का क्षयीकरण

धरती के लिये रक्षा कवच की तरह काम करने वाली ओजोन गैस की परत हानिकारक पराबैंगनी किरणों को धरती पर आने से रोकती है। ओजोन के ह्रास के लिये क्लोरोफ्लोरो कार्बन गैस उत्तरदायी है।

ओजोन गैस

वायुमंडल में 30-60 किमी की ऊँचाई पर ओजोन गैस की परत पाई जाती है, जिसका निर्माण ऑक्सीजन के अणुओं के टूटकर मिलने से होता है। इस ऊँचाई पर तीव्र पराबैंगनी किरणों के कारण पर्याप्त तापमान मिलता है जिसके कारण ड2 के अणु टूटकर ड+ड हो जाते हैं तथा दूसरे ड2 से मिलकर ओजोन (ड3=ड2+ड) का निर्माण करते हैं। इसका निर्माण 30-60 किमी की ऊँचाई पर होता है तथा न ही इससे नीचे हो पाता है क्योंकि 60 किमी. की ऊँचाई पर पर्याप्त दबाव नहीं मिल पाता है जो इनके संलयन के लिये आवश्यक है। इसी प्रकार 30 किमी से नीचे दबाव तो पर्याप्त मिलता है लेकिन यहाँ ऑक्सीजन अणुओं के संलयन के लिये आवश्यक तापमान पर्याप्त मात्रा में नहीं मिल पाता है अतः इसी कारण 30 किमी. से नीचे तथा 60 किमी. से ऊपर ओजोन गैस नहीं मिलती है। इसकी सर्वाधिक सघनता भूमध्य रेखीय क्षेत्रों में मिलती है। ध्रुवीय क्षेत्रों में इसकी सघनता कम ऊँचाई पर मिलती है। प्रकृति का प्रत्येक तत्व मानव कल्याण के लिये होता है, लेकिन जब मानव उससे अनावश्यक छेड़-छाड़ करने लगता है तो उसके दुष्परिणाम परिलक्षित होने लगते हैं। ओजोन भी इससे अछूती नहीं है।

वायुमंडल में पाई जाने वाली ओजोन की परत सूर्य की पराबैंगनी किरणों को अवशोषित कर उसके दुष्प्रभाव से हमारी रक्षा करती है। सूर्य से आने वाली पराबैंगनी किरणें मानव त्वचा पर प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं जिस कारण त्वचा कैंसर होने की संभावना रहती है। पर्यावरण सुरक्षा एजेंसी के एक प्रतिवेदन के अनुसार ओजोन की मात्रा में 1 प्रतिशत की कमी होने पर त्वचा कैंसर से पीड़ित मनुष्यों की संख्या में 2 प्रतिशत की वृद्धि हो जाती है।

हरित गृह प्रभाव

मानव की प्रकृति विरोधी नीतियों एवं कार्यों के कारण संतुलित जलवायु के कदम लड़खड़ा गए हैं, इसी संदर्भ में पृथ्वी के वायुमंडल में कुछ विशेष गैसों की मात्रा इस सीमा तक बढ़ गई कि धरती की ऊष्मा या गर्मी बाहर नहीं निकल पा रही है, इससे उत्पन्न प्रभाव को हरित गृह प्रभाव कहते हैं।

ऑक्सफोर्ड शब्दकोष के अनुसार- वायुमंडल में मानव जनित कार्बनडाइ ऑक्साइड के आवरण प्रभाव के कारण पृथ्वी की सतह की प्रगामी तापन को हरित गृह प्रभाव कहते हैं।

हिम का पिघलना

जलवायु परिवर्तन के तहत तापमान बढ़ने के कारण संसार के सबसे बड़े स्वच्छ जलीय भाग, जो बर्फ के रूप में पाए जाते हैं, पिघल रहे हैं। नूतन वर्षों में किए गए शोध के उपरांत वैज्ञानिकों ने बताया है कि ग्रीनलैंड एवं अण्टार्क्टिका में हिमावरण में ह्रास हो रहा है। यह भी आश्चर्यजनक तथ्य है कि अण्टार्क्टिका के ही अन्य हिस्सों में तापमान घटा है, जबकि प्रायद्वीप भाग का तापमान तीव्रता से बढ़ रहा है, जिस पर शोध कार्य जारी है। भारत की प्रमुख नदी गंगा का मुख्य जलस्रोत गंगोत्री हिमनदी भी तीव्रता से पीछे हट रहा है।



मानव के लिये जल विभिन्न उपयोगों हेतु महत्वपूर्ण है। यह जल मुख्य रूप से वर्षा से प्राप्त होता है। वर्तमान समय में मानव जनित स्रोतों से निःसृत सल्फर डाइ ऑक्साइड वायुमंडल में पहुँचकर जल से मिश्रित होकर सल्फेट तथा सल्फ्यूरिक अम्ल का निर्माण करती है। जब यह अम्ल वर्षा के साथ धरातल पर पहुँचता है तो इसे अम्ल वर्षा कहते हैं। जल की अम्लता को मापते हैं, जब जल का ढल -7 हो तो उसे तटस्थ जल कहते हैं।

बिना ऑपरेशन के भी हो सकता है किडनी स्टोन का सफाया

किडनी मानव शरीर के सबसे महत्वपूर्ण अंगों में से एक है। ये पेट की गुहा के पीछे स्थित होते हैं। किडनी के दो मुख्य कार्य हैं: पहला, मानव शरीर से हानिकारक विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालना और दूसरा, शरीर में पानी, रासायनिक और खनिज स्तरों को बनाए रखना। इनका अंतिम उत्पाद मूत्र रूप में होता है। स्वस्थ जीवन के लिए, व्यक्ति के गुर्दे का स्वस्थ होना बहुत जरूरी है। मनुष्य प्रतिदिन विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थों का उपभोग करता है जो बाद में ऊर्जा में परिवर्तित हो जाते हैं, यह प्रक्रिया विषाक्त पदार्थों के रूप में सह-उत्पादों का निर्माण करती है जो शरीर के लिए खतरनाक हो सकते हैं। ऐसे जहरीले पदार्थों का संचय स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है।

क्यों बनती है किडनी में पथरी

आमतौर पर शरीर में पानी की कमी से गुर्दे की पथरी बन सकती है। ये पत्थर या तो मटर के आकार के हो सकते हैं या गोल्फ की गेंद जैसे विशाल भी हो सकते हैं। वे आमतौर पर कुछ अन्य योगिकों के साथ कैल्शियम ऑक्सालेट से बने होते हैं और संरचना में क्रिस्टलीय होते हैं। गुर्दे की पथरी का निर्माण आपको शरीर के निचले पेट क्षेत्र में पेशाब करने के दौरान दर्द दे सकता है। इसकी वजह से वजन कम होने, बुखार, मतली, हेमट्यूरिया आदि की समस्या हो सकती है। गुर्दे की पथरी ज्यादातर सर्जरी द्वारा हटा दी जाती है; हालाँकि कुछ लोग आयुर्वेदिक उपचार की मदद से इन पत्थरों से छुटकारा पा सकते हैं।

क्या कहते हैं एक्सपर्ट

कैलाश नेचुरोपैथी हॉस्पिटल, ग्रेटर नोएडा के चिकित्सा प्रभारी, डॉक्टर उमाशंकर शर्मा कहते हैं कि, डाई यूरिटिकस (मूत्रवर्धक) चीजों के सेवन से 9 से 10 एमएम के किडनी स्टोन को मूत्र के रास्ते बाहर निकाला जा सकता है, इसके साथ-साथ हमें अपनी जीवनशैली को बेहतर बनाने की जरूरत है। स्वस्थ खानपान के साथ पानी भी भरपूर मात्रा में पीना चाहिए। इससे किडनी की सफाई होती रहती है। रोजाना एक्सरसाइज भी जरूर करनी चाहिए। कुछ मूत्रवर्धक खाद्य पदार्थ हैं जिनके माध्यम से किडनी स्टोन को बिना ऑपरेशन के भी निकाला जा सकता है।

लेमन जूस के साथ ऑलिव ऑयल

नींबू का रस और खाद्य तेल का संयोजन थोड़ा अजीब लग सकता है लेकिन यह एक बहुत प्रभावी किडनी स्टोन का आयुर्वेदिक उपचार है। जो लोग अपने गुर्दे से पत्थरों को हटाने की इच्छा रखते हैं, उन्हें प्राकृतिक रूप से इस तरल को रोजाना पीना चाहिए जब तक कि पथरी निकल न जाए। नींबू का रस पत्थरों को तोड़ने में मदद करता है जबकि जैतून का तेल उनके लिए स्नेहक के रूप में कार्य करता है ताकि बिना किसी परेशानी से स्टोन बाहर निकल सके। गुनगुने पानी में आधा नींबू का रस डालकर रोजाना पी सकते हैं।

तुलसी के रस के साथ पानी पीना

यह हमें हाइड्रेटेड रहने में मदद करता है और यह रोगमुक्त जीवन के लिए शरीर में पानी के स्तर को बनाए रखता है। यह पाचन और अवशोषण की प्रक्रिया को बढ़ावा देता है। आमतौर पर, एक स्वस्थ इंसान को दिन में 7-8 गिलास पानी पीने की सलाह दी जाती है। पानी विषहरण के लिए सबसे अच्छा है और हमारे शरीर से अनावश्यक विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालने में मदद करता है जो कि गुर्दे के साथ-साथ अन्य अंगों को और नुकसान पहुंचा सकता है। गुर्दे की पथरी से पीड़ित लोगों को मूत्र के माध्यम से इन पत्थरों को बाहर निकालने के लिए बहुत सारा पानी पीना चाहिए। सर्वोत्तम प्रभावों के लिए, तुलसी के रस के साथ पानी पीना चाहिए, क्योंकि तुलसी को शरीर में तरल पदार्थ, खनिज और यूरिक एसिड संतुलन बनाए रखने के लिए बेहतर माना जाता है।

नारियल पानी



नारियल पोषक तत्वों से भरा है और स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा है। नारियल पानी जो एक कच्चे हरे नारियल के अंदर मौजूद होता है, स्वास्थ्य के लिए बेहद अच्छा होता है और अगर किसी को किडनी में पथरी है तो इसका सेवन करना चाहिए। यह गुर्दे की पथरी के आयुर्वेदिक उपचार का एक अच्छा रूप है और पथरी को गलाने में मदद करता है और अंत में मूत्र के माध्यम से बाहर निकाल देता है।

नींबू का रस और खाद्य तेल का संयोजन थोड़ा अजीब लग सकता है लेकिन यह एक बहुत प्रभावी किडनी स्टोन का आयुर्वेदिक उपचार है। जो लोग अपने गुर्दे से पत्थरों को हटाने की इच्छा रखते हैं, उन्हें प्राकृतिक रूप से इस तरल को रोजाना पीना चाहिए जब तक कि पथरी निकल न जाए। नींबू का रस पत्थरों को तोड़ने में मदद करता है जबकि जैतून का तेल उनके लिए स्नेहक के रूप में कार्य करता है।

मां नहीं, सुपर माँ बन कर रहती है



आधुनिक युग की माएं बस मां का कर्तव्य ही नहीं निभाती, उसके साथ-साथ बच्चों के विकास हेतु हर पहलु पर उनका साथ निभाती हैं। गर्भकाल से लेकर उनके विकास, स्कूल, एक्स्ट्रा हॉबी क्लासेज, पौष्टिक आहार, स्पोर्ट्स पढ़ाई, करियर और उनके शौक का पूरा ध्यान रखती हैं। उनके साथ क्वालिटी टाइम बिताने के लिए पूरा ध्यान रखती हैं।

बदलती विचारधारा और जीवनशैली के साथ उन्होंने समझौता करना सीख लिया है ताकि उनका बच्चा आधुनिक दौर में पीछे न छूटने पाए। कामकाज के साथ साथ घर परिवार को कैसे संभालना है, अच्छी तरह से समझती हैं। घर पर रहने वाली माँ भी घर की जिम्मेदारियों के साथ बाहर की सारी जिम्मेदारियों का बीड़ा खुशी से उठाती हैं।

कुशल प्रबंधक है आज की माँ:-

इस प्रतियोगिता वाले युग में हर मां चाहती है उनका बच्चा हर क्षेत्र में अच्छा हो। इसके लिए वह इस तरह का तालमेल बैठाती है कि बच्चे पर विशेष नजर रहे और घर भी इग्नोर न हो। मां दफ्तर अगर जाती है वहां से भी अपने घर और बच्चे पर पूरी नजर रखने का प्रयास करती है। प्रातः जल्दी उठकर बच्चों के लिए पौष्टिक नाश्ता, लंच और स्नैक्स तैयार कर उन्हें स्कूल भेजना, स्वयं आफिस भागना, फिर घर आकर उनके साथ खेलना, होमवर्क कराना, रात्रि में खाने की तैयारी और अगले दिन की तैयारी में लग जाती है। बच्चों के दिनभर के क्रियाकलापों की पूरी जानकारी भी रखती है। बच्चों के करियर की पूरी जानकारी रखना आदि सभी जगह संतुलन बना कर चलती है।

दोस्ती का हाथ बढ़ाती है माँ:-

आजकल की मां बच्चे के साथ दोस्त बन कर रहती है, उनकी बात सुनती है, समय समय पर प्यार से जरूरी हिदायतें देती है, गलती होने पर डांटने के स्थान पर प्यार से समझाती है ताकि वह अपनी गलतियों को मां से छुपा न पाए। मां इतनी नजदीक होती है कि अधिकतर बच्चे मां से हर बात शेयर करते हैं जिससे वह मां के साथ साथ उनकी हमराज भी बन जाती है। बात-बात में प्यार से बच्चों को उनकी सीमाएं बताना भी नहीं भूलती ताकि बच्चे भटकने न पाए।

“

इस प्रतियोगिता वाले युग में हर मां चाहती है उनका बच्चा हर क्षेत्र में अच्छा हो। इसके लिए वह इस तरह का तालमेल बैठाती है कि बच्चे पर विशेष नजर रहे और घर भी इग्नोर न हो। मां दफ्तर अगर जाती है वहां से भी अपने घर और

बच्चों पर पूरी नजर रखने का प्रयास करती है। प्रातः जल्दी उठकर बच्चों के लिए पौष्टिक नाश्ता, लंच और स्नैक्स तैयार कर उन्हें स्कूल भेजना, स्वयं आफिस भागना, फिर घर आकर उनके साथ खेलना, होमवर्क कराना, रात्रि में खाने की तैयारी।



बच्चों का कमरा भी सजाती है:-

आजकल की माएं बच्चों से विचार विमर्श कर उनकी राय जानने का प्रयास करती हैं कि उनके कमरे को कैसे आधुनिक बनाया जाए। बच्चों की आयु अनुसार उनके इंटीरियर में बदलाव लाती रहती हैं ताकि उन्हें अपने कमरे में पढ़ाई, बैठने, सोने, छोटे हैं तो खिलौनों से खेलने में आनंद आए। कमरे की वाइट वाशिंग, उससे मैच करते परदे, बैडशीट्स का भी पूरा ध्यान रखती हैं।

बच्चों को देती हैं क्वालिटी टाइम:-

नौकरी करने वाली माएं बच्चे को पूरा वक्त देने में असमर्थ होती हैं, फिर भी आफिस से फोन पर संपर्क बनाएं रखती हैं ताकि हर पल की जानकारी उन्हें मिलती रहे। छुट्टी के बाद और छुट्टी के दिन वह बच्चों के साथ क्वालिटी टाइम बिताती हैं। उनके साथ घूमना, अच्छे विषयों पर बातें करना, उनकी पसंद की शापिंग कराना, नए विषयों की जानकारी देना, उनके मित्रों के बारे में बात करना, स्कूल आदि के बारे में मस्ती करते हुए उनके साथ समय बिताती हैं।

नई तकनीकों से वाकिफ कराती हैं:-

बच्चों के प्रोजेक्ट और एडवांस जानकारी के लिए बच्चों को कंप्यूटर फ्रेंडली बनाने में मदद करती हैं। बच्चों को ब्लाग्स पर लिखने के लिए प्रेरित करती हैं, ई-लर्निंग प्रोग्राम दिलवाती हैं। बच्चों को सोशल नेटवर्किंग, चैटिंग सीखाती हैं। दिमाग तेज करने वाले एजुकेशनल गेम्स से भी वाकिफ कराती हैं। इस तरह बच्चों को आधुनिक तकनीकों के लिए जागरूक करने में मदद करती हैं।

बच्चों के साथ अपनी फिटनेस का भी पूरा ध्यान रखती है:-

हर मां बच्चों और परिवार की फिटनेस पर विशेष ध्यान देती है पर सुपर मॉम परिवार के साथ अपनी फिटनेस पर भी उतना ही ध्यान देती है और समझती है कि अगर वह फिट है तभी परिवार को भी फिट रख पाएगी। अपने अच्छे व्यक्तित्व के लिए भी जागरूक रहती है। समय-समय पर पार्लर जाना, स्पा का आनंद लेना,

डेस सेंस सुधारना, अपनी सुंदरता में वृद्धि लाना आदि। बच्चों को गर्व महसूस हो कि उनकी मां युवा और सुंदर है। अगर मां फिट रहती है तो बच्चे भी अपनी फिटनेस पर ध्यान देते हैं और बचपन से ही फिटनेस के लिए सजग रहते हैं। मां स्वस्थ रहने के साथ अपने पौष्टिक आहार का भी ध्यान रखती है।

कुकिंग में भी आज की माएं ज्यादा स्मार्ट हैं:-

आधुनिक पढ़ी लिखी मां जानती है कि बच्चों के लिए जंक फूड अच्छा नहीं है इसलिए वह विभिन्न रेसीपीज पढ़कर कुछ नया बच्चों के लिए तैयार करती हैं जो पौष्टिक भी हो और स्वादिष्ट भी। उसका प्रयास होता है कि बच्चा चाव से उसके हाथ का भोजन खा सके।

बच्चों के करियर पर भी ध्यान देती हैं:-

आज की माएं अंदर से स्वयं तो मजबूत रहती हैं और बच्चों के भविष्य को सुरक्षित बनाने के लिए पूरा योगदान देती हैं। बच्चे को अगर दूर पढाई के लिए भेजना पड़े तो आसानी से भेज देती हैं। किस क्षेत्र में बच्चा जाए तो भविष्य सुरक्षित रहेगा। इस बात पर भी खुले विचारों से बच्चे के साथ डिस्कस करती हैं।

“

नौकरी करने वाली माएं बच्चे को पूरा वक्त देने में असमर्थ होती हैं, फिर भी आफिस से फोन पर संपर्क बनाएं रखती हैं ताकि हर पल की जानकारी उन्हें मिलती रहे। छुट्टी के बाद और छुट्टी के दिन वह बच्चों के साथ क्वालिटी टाइम बिताती हैं। उनके साथ घूमना, अच्छे विषयों पर बातें करना, उनकी पसंद की शापिंग कराना, नए विषयों की जानकारी देना, उनके मित्रों के बारे में बात करना, स्कूल आदि के बारे में मस्ती करते हुए उनके साथ समय बिताती हैं।

आत्मरक्षार्थ पराक्रमी बनना होगा



हम अपनी ऐतिहासिक भूलों से कुछ सीखना नहीं चाहते। 1947-48 में हम कश्मीर से पाकिस्तानी सेना व कबाइलियों को खदेड़ने के स्थान पर संयुक्त राष्ट्र संघ में कश्मीर समस्या को सुलझाने के लिए चले गये थे। जम्मू-कश्मीर राज्य का स्वतंत्रा भारत में विलय पत्रा के अनुसार पूर्ण विलय के उपरांत भी उसको विवादित बनाने में संयुक्त राष्ट्र संघ के हस्तक्षेप के दोषी हमारे तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व.जवाहरलाल नेहरू ही थे। परिणामस्वरूप आज 70 वर्ष उपरांत भी हमारी देवतुल्य भूमि के 75114 वर्ग किलोमीटर ;गुलाम कश्मीर या पी.ओ.के.द्ध पर पाकिस्तान अवैध रूप से काबिज है और जम्मू-कश्मीर की जनता अलगाववाद व आतंकवाद के कारण विस्फोटक स्थिति से जूझने को विवश है।

दशकों से कश्मीर समस्या को केंद्र बना कर पाकिस्तान

बार-बार हमको जखम देता आ रहा है। हजार बार यु(की धमकी देने वाले पाकिस्तान के जिहादी संकल्पों को अवश्य समझना होगा। उसी संदर्भ में पाक स्थित आतंकवादी संगठन जैश-ए-मोहम्मद का सरगना मौलाना मसूद अजहर हमारे लिए लगभग 25 वर्षों से बहुत बड़ी समस्या बना हुआ है। मुख्यतः जम्मू-कश्मीर में व पंजाब सहित भारत के विभिन्न क्षेत्रों में मसूद अजहर अपने प्रशिक्षित आतंकवादियों व आत्मघाती मानव बम ;पिफदायीनद्ध द्वारा सैकड़ों-हजारों निदोषों का रक्त बहाने के अतिरिक्त अरबों रूपयों की भारतीय सम्पत्ति को नष्ट कर चुका है। इसी परिपेक्ष्य में देश का एक वर्ग हृदयकंधर प्लेन हाईजैक कांड 1999-2000ह् में इस खूंखार आतंकी मौलाना मसूद व दो अन्य आतंकियों को भारत की जेलों से रिहा करके कंधर ;अपफगानिस्तानद्ध में जाकर छोड़ने को बड़ी गलती मानता है। इसके उचित समाधान के लिए भारत अपनी रणनीति के अनुसार मसूद अजहर को पिछले लगभग 10 वर्षों से अंतरराष्ट्रीय आतंकवादी घोषित कराके उसको व उसके संगठन पर पूर्णतः प्रतिबंध लगवाना चाहता है। परंतु चीन

अपने स्वार्थों के कारण हमारे लिए बाध बना हुआ है। तीन बार वर्ष 2009, 2016 व 2017 में हम पहले ही चीन के कारण यू.एन.ओ. में असफल हो चुके हैं। लेकिन हम पुलवामा कांड के बाद अब चौथी बार भी चीन के कारण ही ऐसा करवाने में पिफर असफल हुए। चीन ने कुछ तकनीकी आधार पर इस बार अपने वीटो पावर का प्रयोग किया। जबकि इसका मुख्य कारण पाकिस्तान में ग्वादर बंदरगाह का पीओके ;गुलाम कश्मीरद्ध से निकलने वाले मार्ग पर चीन की चल रही अरबों-खरबों की योजनाओं ही होनी चाहिये। इस क्षेत्रा में जैश-ए-मोहम्मद के अधिकांश आतंकवादियों की सक्रियता होने के कारण चीन के लगभग दस हजार से अधिक कर्मचारियों की सुरक्षा की चिंता भी तो चीन की प्राथमिकता है। आज देश का प्रबु(समाज स्व.नेहरू जी की अदूरदर्शिता पर भी प्रश्नचिन्ह लगा कर कह रहा है कि चीन को यू.एन.ओ. की सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य क्यों बनवाया था? क्या चीन हमारे त्याग व उदारता को भूल गया? विशेष चिंतन का विषय यह है कि प्राचीन काल में चीन हमारी ज्ञानवान संस्कृति

“

चीन ने कुछ तकनीकी आधार पर इस बार अपने वीटो पावर का प्रयोग किया। जबकि इसका मुख्य कारण पाकिस्तान में ग्वादर बंदरगाह का पीओके ;गुलाम कश्मीरद्ध से निकलने वाले मार्ग पर चीन की चल रही अरबों-खरबों की योजनाओं ही होनी चाहिये। इस क्षेत्रा में जैश-ए-मोहम्मद के अधिकांश आतंकवादियों की सक्रियता होने के कारण चीन के लगभग दस हजार से अधिक कर्मचारियों की सुरक्षा की चिंता भी तो चीन की प्राथमिकता है।



से प्रभावित होकर बड़े स्तर पर हमारे आचार्यों से अधिक ज्ञान पाने के लिए उन्हें आमंत्रित करता था। वहां के राजा हमारे आचार्यों को विशेष आतिथ्य देते थे। इतिहास से यह भी ज्ञात होता है कि एक बार एक अत्यधिक तेजस्वी आचार्य को चीन के सम्राट ने अपनी सेना भेज कर भी उठवाया था। परंतु उन महान आचार्य का सम्मान करते हुए उनके माध्यम से भारतीय संस्कृति और ज्ञान का चीन में व्यापक प्रसार व प्रचार हुआ था। आज उसी संस्कृति के उद्गम क्षेत्रा भारत को जिहादियों के अत्याचारों द्वारा पददलित होते हुए चीन क्यों देखना चाहता है? जबकि वह स्वयं तो इस्लामिक आतंकवादियों से सुरक्षित रहना चाहता है पिपर भी वह भारत की इनसे मुक्ति में बाधक बन रहा है।

ऐसे में क्या हमको अपने सामर्थ्य, बल और पराक्रम पर भरोसा करना अनुचित होगा? क्या हम अमरीका द्वारा ऐवटाबाद ;पाकइ में मारे गए ओसामा विन लादेन के समान दाऊद इब्राहिम, अजहर मसूद व हापिफज सईद आदि मोस्ट वांटेड आतंकियों को नहीं मार सकते? ध्यान रहे एक बार हमारे पूर्व सेना प्रमुख जनरल वी. के. सिंह ;जो आज केंद्रीय सरकार में राज्य मंत्री भी हैइ ने कहा था कि हमारी सेनायें ऐवटाबाद जैसी कार्यवाही करने में सक्षम है। तो अब अवसर है कि चीन की वीटो पावर को चुनौती देते हुए हमें अपने पराक्रम का परिचय देना होगा। इसके लिए एक विशेष स्ट्राइक द्वारा अमरीकी रणनीति के समान मसूद अजहर का वध करके उसको समुद्र में डुबो देना चाहिये। 14 फरवरी को पुलवामा ;जम्मू-कश्मीरइ में सी.आर.पी.एफ. के कापिफले पर पिफदायीन हमले में लगभग 40 सैनिकों के बलिदान से भारतीय जनमानस का धैर्य टूट गया था। देशवासियों के आक्रोश को शांत करने के लिए केंद्र सरकार को आक्रामक होना ही था।

अतः बालाकोट ;पाकिस्तानइमें स्थित जैश-ए-मोहम्मद के एक बड़े प्रशिक्षण केंद्र पर वायुसेना द्वारा 26 फरवरी को शक्तिशाली एयर स्ट्राइक करके भारत ने आक्रामक रूप दिखाते हुए अपने पराक्रम का परिचय दिया। इससे भयभीत होकर आज पाकिस्तान भारी दबाव में है। साथ ही इस्लामिक आतंकवाद के विरोध में अंतरराष्ट्रीय मत हमारे पक्ष में है। इसलिये वर्तमान अनुकूल परिस्थिति में हम पाकिस्तान पर और अधिक दबाव डालने की स्थिति में है। पिपर भी हमने अपनी स्वयं की सामर्थ्य को कम आंका और संयुक्त राष्ट्र संघ की ओर बढ़ें। जहां चीन की कुटिलता में पफंस गए और मसूद अजहर पर अंकुश लगाने में असपफल हुए। हमें विचार करना होगा कि क्या हम अपने ही सामर्थ्य से पाकिस्तान पर दबाव बना कर ऐसे आतंकियों पर नकेल नहीं डाल सकते?

आज देश में चारों ओर मसूद अजहर के कारण चीन से व्यापार आदि संबंधों को तोड़ने की मांग उठ रही है। जबकि हमें सर्वप्रथम पाकिस्तान से सारे संबंध तोड़ कर उसे आतंकी राष्ट्र घोषित करना चाहिये। यह दुःखद है कि अभी हमारे जखम भरें भी नहीं है कि हम करतारपुर कॉरिडोर बनाने की शीघ्रता में पाकिस्तानसे वार्ता कर रहे हैं। जबकि हमको पाकिस्तान को आतंकी देश घोषित करना अत्यंत

आवश्यक है। पाक व भारत के मध्य रेल व रोड मार्गों को बंद करने के साथ-साथ सिंधु जल संधि को अपने पक्ष में करना भी पाकिस्तान पर दबाव बनाएगा। कुछ अन्य संबंध हम पहले ही तोड़ चुके हैं। इन दबावों के कारण पाकिस्तान सम्भवतः मसूद अजहर पर कोई कठोर कार्यवाही करने का विचार कर सकता है? ध्यान रहे कि मौलाना मसूद अजहर पाकिस्तान का पाला हुआ सांप है चीन का नहीं। इसलिये चीन के स्थान पर पाकिस्तान का पूर्ण बहिष्कार करना अधिक कूटनीतिज्ञ होगा। वर्तमान स्थिति में यह भी विचार करना आवश्यक होगा कि जिहादियों का विशेष लक्ष्य गजवा-ए-हिन्द के लिए भारत की धृती को रक्तरंजित करना है। इसलिए इसका पूर्ण समाधन करना ही होगा। हमारे पास उच्च प्रशिक्षित सुरक्षाबलों व गुप्तचर संस्थाओं का बड़ा वर्ग शासकीय आदेश के प्रति बंध हुआ है। ऐसे में विशेष रणनीति के साथ अपने सामर्थ्य का सदुपयोग करते हुए आतंकियों के नेटवर्क, स्लीपिंग सेलों व अन्य अड्डों पर बार-बार स्ट्राइक करके उनको नेस्तानाबूद करने से पाकिस्तान स्थित मसूद व हापिफज जैसे आतंकी सरगनाओं की भी कमर टूटेगी। पाक-परस्त संकीर्ण राजनीति करने वाले कुछ स्थानीय तत्व अपने आप देशद्रोहिता की आत्मग्लानि से पीड़ित हो जाएंगे। आज वैसे भी सत्ताहीनता की पीड़ा से जूझने वाले नेताओं की राष्ट्रभक्ति के प्रति राष्ट्रवादी समाज में अनेक संदेह उभर रहे हैं। इसीलिए भारतीय जनमानस आक्रोश और जोश के साथ शासन व प्रशासन से कंधे से कंध मिला कर चलने को तैयार है और इन विपरीत परिस्थितियों में उसने किसी वैध आह्वान पर आतंकियों पर टूटने का मन बना लिया है। अतः आचार्य चाणक्य के शतकों पुराने संदेश को समझ कर उसे चरितार्थ करने का आज अवसर है। उन्होंने कहा था कि संसार में कोई किसी को जीने नहीं देता, प्रत्येक व्यक्ति व राष्ट्र अपने ही बल व पराक्रम से जीता है। अब देश को आत्मरक्षार्थ अपने बल और पराक्रम का परिचय देना होगा।

“

अतः बालाकोट पाकिस्तान में स्थित जैश-ए-मोहम्मद के एक बड़े प्रशिक्षण केंद्र पर वायुसेना द्वारा 26 फरवरी को शक्तिशाली एयर स्ट्राइक करके भारत ने आक्रामक रूप दिखाते हुए अपने पराक्रम का परिचय दिया। इससे भयभीत होकर आज पाकिस्तान भारी दबाव में है। साथ ही इस्लामिक आतंकवाद के विरोध में अंतरराष्ट्रीय मत हमारे पक्ष में है।

नव-संवत्सर इतिहास का एक गौरवपूर्ण दिन

हमारे पास काल वा समय की अवधि की जो गणनायें हैं वह मुख्यतः दिन, सप्ताह, माह व वर्ष में होती हैं। यदि सृष्टि की उत्पत्ति, मानवोत्पत्ति अथवा वेदोत्पत्ति का काल जानना हो तो वह वर्ष व वर्षों में बताया जाता है। वैदिक गणनाओं में वर्ष की अवधि सामान्यतः 360 दिन मानी जाती है। लगभग इतनी अवधि पूरी होने पर वर्ष वा संवत्सर बदलते हैं। दिनांक 18-3-2018 से सृष्टि संवत् 1,96,08,53,119 आरम्भ हो रहा है, वहीं यह दिवस विक्रमी संवत् 2075 का प्रथम होगा। अंग्रेजी वर्ष आरम्भ होने पर इसको मानने वाले लोग परस्पर शुभकामनाओं का आदान प्रदान करते हैं। उन्हीं के अनुकरण से हमारे भी अनेक बन्धु इसी प्रकार से एक दूसरे को शुभकामनायें एवं बधाई देने लगे हैं। इस नये नवसंवत्सर के प्रथम दिन का यही महत्व है कि इतने वर्ष पूर्व सृष्टि, वेद व मानव का आरम्भ यहां हुआ था तथा महान पराक्रमी आर्य वा हिन्दू राजा विक्रमादित्य शकों को युद्ध में पराजित कर राज्यारूढ़ हुए थे। विक्रमादित्य जी की राजधानी उज्जैन मानी जाती है। विक्रमादित्य एक आदर्श राजा थे। वह राजा राम, योगेश्वर श्री कृष्ण एवं वैदिक परम्पराओं को मानने वाले राजा थे। उनकी स्मृति बनाये रखने के लिए तत्कालीन विद्वानों ने 2074 वर्ष पूर्व इस विक्रमी संवत्सर को आरम्भ किया था।

हम जिस संसार में रहते हैं वह व समस्त ब्रह्माण्ड ईश्वर से निर्मित व संचालित है। वेदों में ईश्वर, जीवात्मा, प्रकृति सहित मनुष्यों के कर्तव्य एवं अकर्तव्यों का विस्तृत वर्णन व ज्ञान है। हमारी यह सृष्टि बिना कर्ता व उपादान कारण के अस्तित्व में नहीं आई है अपितु सच्चिदानन्द, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, निराकार, सर्वान्तयामी, अनादि, नित्य, अनुत्पन्न, अजर, अमर, अविनाशी और अनन्त ईश्वर ही इस सृष्टि का रचयिता, धाराक व पालक है। अतः सृष्टि बनाने का कार्य ईश्वर ने किसी काल विशेष में आरम्भ किया होगा और किसी विशेष समय पर इस सृष्टि का निर्माण सम्पन्न हुआ होगा। यह भी निश्चित है कि ब्रह्माण्ड वा हमारे सौर्य मण्डल के बन जाने वा इसमें जल, वायु, अग्नि व अन्य सभी आवश्यक पदार्थों की उपलब्धि होने तथा जिस स्थान विशेष (अनेक प्रमाणों से यह स्थान तिब्बत था) पर मानव सृष्टि अस्तित्व में आई, वह भी इस सृष्टि का कोई दिन विशेष रहा होगा। यदि उपलब्ध जानकारी के आधार पर कहें तो उस दिन चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का दिन था। मनुष्यों की उत्पत्ति के साथ ही ईश्वर को सृष्टि उत्पत्ति के आदि काल में उत्पन्न युवावस्था वाले स्त्री-पुरुषों को जीवन के व्यवहार करने के लिए भाषा व व्यवहार ज्ञान की भी उपलब्धि करनी थी अन्यथा उनका सामान्य जीवन प्रवाह सम्भव न होता। अतः ईश्वर ने इसी दिन, चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को, चार ऋषियों, अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को, वेदों का ज्ञान देने के साथ इतर मनुष्यों को परस्पर व्यवहार करने के लिए भाषा का ज्ञान भी दिया होगा। बहुत से विद्वान इस अनुमान व मान्यता से मतभेद रख सकते हैं। ऐसे विद्वान महानुभावों से हमारा निवेदन है कि वह या तो वैदिक मान्यताओं को स्वीकार करें या अपनी बातों को युक्ति व प्रमाण सहित प्रस्तुत करें जिससे इस विषय की भ्रान्तियों का निराकरण हो सके।

आर्य पर्व पद्धति के लेखक पं. भवानीप्रसाद जी का कथन है कि यह इतिहास बन गया कि सृष्टि का आरम्भ चैत्र के प्रथम दिन अर्थात् प्रतिपदा को हुआ था, क्योंकि सृष्टि का प्रथम मास वैदिक संज्ञानुसार मधु कहलाता था और वही फिर ज्योतिष में चान्द्र काल गणनानुसार चैत्र कहलाने लगा था। इसी की पुष्टि में ज्योतिष के हिमाद्रि ग्रन्थ में यह श्लोक आया है ह्यचैत्रे मासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि। शुक्लपक्षे समग्रन्तु, तदा सूर्यादये सति। अर्थात् चैत्र शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन सूर्योदय के समय ब्रह्मा ने जगत् की रचना की। यह भी बता दें कि औरंगजेब के समय में भी भारत में नवसंवत्सर का पर्व मनाने की प्रथा थी। इसका उल्लेख औरंगजेब ने अपने पुत्र मोहम्मद मोअज्जम को लिखे पत्र में किया है जिसमें वह कहता है कि काफिर हिन्दूओं का यह पर्व है। यह दिन राजा विक्रमादित्य के राज्याभिषेक की तिथि है। भारतीय नव संवत्सर की यह विशेषता है कि यह ऐसी ऋतु में आरम्भ होता है कि जब न अधिक शीत होता है, न उष्णता और न ही वर्षा ऋतु। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन वातावरण बहुत सुहावना व मनोरम होता है। खाद्यान्न गेहूं की फसल लगभग तैयार हो जाती है। सभी वृक्ष व वनस्पतियां हरे भरे होते हैं जो



आंखों को आल्लादित करते हैं। सर्वत्र नये नये पुष्प अपनी सुन्दरता से एक नये काव्य की रचना करते प्रतीत होते हैं। यह समस्त वातावरण व प्राकृतिक सौन्दर्य अपने आप में एक उत्सव सा ही प्रतीत होता है। यही ऋतु मानवोत्पत्ति के लिए उपयुक्त प्रतीत होती है। यदि अन्य ऋतुओं में मानवोत्पत्ति होती तो हमारे आदि स्त्री-पुरुषों को असुविधा व कठिनाई हो सकती थी। ईश्वर के सभी काम निर्दोष होते हैं। अतः यह उसी का परिणाम है कि मानव सृष्टि उत्पत्ति ईश्वर ने एक सुन्दर व सुरम्य स्थान तिब्बत जहां पर्वत व वन हैं, शुद्ध वायु बहती है तथा जल भी सुलभ है, की थी। हमें यह अनुभव होता है कि इस दिन हमें अपने आदि पूर्वजों को स्मरण कर स्वयं को उन जैसा चरित्रवान्, ज्ञानी व स्वस्थ व्यक्ति बनाने का संकल्प वा प्रयास करना चाहिये। यदि विश्व के सभी लोग परस्पर मिल कर उस आदिकालीन स्थिति पर विचार करें तो अविद्या व अज्ञान पर आधारित तथा मनुष्यों के दुःख के प्रमुख कारण मत-मतान्तरों से मनुष्यों को अवकाश मिल सकता है और संसार में एक ज्ञान व विवेक से पूर्ण वैदिक मत स्थापित हो सकता है जिससे संसार में सुख, शान्ति व कल्याण का वातावरण बन सकता है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नवसंवत्सर के दिन ही मयार्दा पुरुषोत्तम राजा रामचन्द्र जी के अयोध्या आकर सिंहासनारूढ़ होने की मान्यता भी प्रचलित है। विद्वान मानते हैं कि इसी दिन महाभारत युद्ध के समाप्त होने पर राजा युधिष्ठिर जी का राज्याभिषेक हुआ था। आदर्श महापुरुष, ऋषि व वैदिक संस्कृति के अनुरागी रामचन्द्र जी का जन्म दिवस रामनवमी का महापर्व पर्व भी इस दिवस के ठीक नवें दिन नवमी को होता है।

आर्यसमाज की स्थापना चैत्र शुक्ल पंचमी को हुई थी। यह भी भारत के इतिहास की एक युगान्तरकारी घटना है जिससे समस्त विश्व के मानवों को ईश्वर व जीवात्मा से सम्बन्धित यथार्थ ज्ञान व ईश्वरोपासना की सत्य व प्रामाणिक विधि प्राप्त हुई थी। सन्धोपासना की यह विधि ऋषि दयानन्द प्रोक्त है। अतः न केवल चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का दिन अपितु पूरा पक्ष ही महत्वपूर्ण है। इस पर्व को देश व विश्व में मनाया जाना चाहिये।

“

हम जिस संसार में रहते हैं वह व समस्त ब्रह्माण्ड ईश्वर से निर्मित व संचालित है। वेदों में ईश्वर, जीवात्मा, प्रकृति सहित मनुष्यों के कर्तव्य एवं अकर्तव्यों का विस्तृत वर्णन व ज्ञान है।

हमारी यह सृष्टि बिना कर्ता व उपादान कारण के अस्तित्व में नहीं आई है अपितु सच्चिदानन्द, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, निराकार, सर्वान्तयामी, अनादि, नित्य, अनुत्पन्न, अजर, अमर, अविनाशी और अनन्त ईश्वर ही इस सृष्टि का रचयिता, धाराक व पालक है।

ईश्वरोपासना के रहस्य को जानने का पर्व

शिवरात्रि एक पौराणिक पर्व है। फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को यह पर्व मनाया जाता है। इस पर्व में शिवपुराण की कथा सुनते हैं और उपवास रखकर मन्दिरों में शिव की पिण्डी पर जल आदि चढ़ाकर वा जलसे उस मूर्ति को स्नान कराने सहित वहां बेल-पत्र, फूल व फल आदि चढ़ाये जाते हैं। रात्रि को मन्दिरों में जागरण करने की प्रथा है जो अब बहुत कम हो गई है। प्रश्न यह है कि क्या ऐसा करने से ईश्वर व उसके सहाय की प्राप्ति हो सकती है? यह प्रश्न इतना सरल नहीं है जितना समझा जाता है। आज का युग ज्ञान व विज्ञान का युग है। आज हम किसी भी विषय में विचार कर उससे सम्बन्धित बातों को पूर्णरूपेण या अधिकांशतः जान सकते हैं। पौराणिक रीति से मूर्तिपूजा करने से कुछ भी प्राप्त नहीं होता, ऐसा वेदों के मर्मज्ञ, वेदज्ञ, ईश्वर के साक्षात्कर्ता ऋषि दयानन्द का मन्तव्य है। वह बताते हैं कि मूर्ति जड़ पदार्थों से बनती है। जड़ पदार्थों वा मूर्ति में किसी मनुष्य की भावना व विचारों को जानने, समझने व सुनने की शक्ति नहीं होती। जड़ पदार्थों का उपयोग तो हम भवन निर्माण आदि कार्यों में ही अधिकांशतः करते हैं तथा यही इसका सदुपयोग है। जड़ पदार्थों से इच्छानुसार मूर्ति की शकल भी बनाई जा सकती है। मूर्ति का गुण जड़त्व चेतन व ज्ञानयुक्त नहीं है। यदि हम अपनी बात किसी को समझाना चाहते हैं तो हमें अपनी भाषा में बोल कर व बाड़ी-लैंग्वेज के द्वारा समझाना होता है। जिससे बात करते हैं व जिसके लिए विचार प्रस्तुत करते हैं, वह सत्ता ज्ञानयुक्त चेतन पदार्थ होना चाहिये। हमारी आत्मा चेतन पदार्थ है। इसे जीव व जीवात्मा भी कहते हैं। इसके गुण ज्ञान व कर्म हैं। हमारी जीवात्मा स्वाभाविक ज्ञान रखती है और इसे भाषा के ज्ञान, उपदेश श्रवण, अध्ययन, चिन्तन व मनन सहित ईश्वर की उपासना से बढ़ा भी सकते हैं। ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप अर्थात् सत्तावान, चेतनस्वरूप तथा आनन्दस्वरूप सहित निराकार, सर्वव्यापक, सर्वान्तार्यामी आदि गुणों वाला है। ईश्वर चेतन, सर्वव्यापक व सर्वान्तार्यामी होने के कारण ही हमारी आत्मा के विचारों व भावों को जानता है तथा हम मुंह से बोलकर व मन में विचारकर ईश्वर से जो प्रार्थना करते हैं उसे वह अपने सर्वान्तार्यामी सत्ता व गुण से जान लेता है। अतः ईश्वर की उपासना किसी मूर्ति के द्वारा न करके हमें ईश्वर को अपनी आत्मा व शरीर में विद्यमान जानकर उसके गुणों का ध्यान करते हुए करनी चाहिये। ईश्वर हमारे मन की बातों को जानता व मुंह से बोली बातों को सुनता भी है तथा उन्हें हमारी पात्रता के अनुसार पूरी भी करता है। इसी को विस्तार से समझाने के लिये प्राचीन काल में महर्षि पतंजलि ने योगदर्शन शास्त्रीय ग्रन्थ का प्रणयन किया था जिसमें धारणा व ध्यान के द्वारा ही ईश्वर प्राप्ति व ईश्वर साक्षात्कार का उल्लेख किया गया है। मूर्तिपूजा का आरम्भ महाभारत के ढाई हजार वर्षों बाद जैन व बौद्ध मतों की स्थापना के बाद हुआ। हिन्दुओं ने जैन आदि मतों का अनुकरण कर ही मूर्तिपूजा को अपनाया क्योंकि तब तक सामान्यजन ईश्वर के निराकार स्वरूप की उपासना की विधि को भूल चुके थे। यज्ञों में हिंसा के कारण बौद्धमत के यज्ञों के विरुद्ध प्रचार से लोग यज्ञों से दूर जा चुके थे। योग दर्शन एवं ऋषि दयानन्द प्रदर्शित सन्ध्या व ईश्वरोपासना ही ईश्वर की प्राप्ति व साक्षात्कार की विधि है। हम वेद व ऋषियों द्वारा वर्णित ईश्वर के गुणों को जानकर उसका ध्यान, चिन्तन-मनन, भजन, उसका पठन-पाठन तथा ईश्वर के मुख्य व निज नाम ह्यओ३म्ह व गायत्री मन्त्र आदि का जप करके ही सच्ची उपासना को प्राप्त हो सकते हैं। हम जो भी काम करें उसके लिये हमें विद्वानों की शरण में जाकर उसे जानना व समझना होता है और उनको समझ कर व सन्तुष्ट होने पर ही उस हमें उपासना के कार्य को करना चाहिये। उपासना से इतर कार्यों में हम ऐसा करते भी हैं। अतः ईश्वरोपासना वा ईश्वर प्राप्ति के लिये हमें प्रामाणिक व वेदानुकूल उपनिषदों, योग आदि दर्शन ग्रन्थों सहित वेद एवं सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, आर्याभिनयन आदि का अध्ययन करना चाहिये। इन ग्रन्थों का अध्ययन व स्वाध्याय करके हम ईश्वर की उपासना का स्वरूप व विधि को भी जान सकेंगे। समाज में दो प्रकार के विद्वान होते हैं। एक परम्परा का पालन करने वाले व दूसरे ज्ञानी, चिन्तक, विचारक, विवेकी, तर्क व युक्ति का आश्रय लेकर उचित-अनुचित व सत्यासत्य का निर्णय करने वाले विद्वान। इस दूसरे प्रकार के विद्वानों की शरण में जाकर हम ईश्वर उपासना की सच्ची



व यथार्थ विधि सीख सकते हैं। परम्परा का पालन करने वाले, अशुद्ध ज्ञान रखने वाले, सत्यासत्तों व सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय न करने वाले, विद्वानों की संगति तथा सदाचार से दूर रहने वाले मनुष्य व लोग ईश्वर की उपासना के सच्चे स्वरूप व विधि को नहीं जान सकते। यही कारण है कि हमारे समाज में मूर्तिपूजा प्रचलित है। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने मूर्तिपूजा करने में अनेक दोष व हानियों का उल्लेख सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ में किया है। उन्होंने यह भी बताया है कि देश की पराधीनता व आर्य हिन्दुओं के पतन में सबसे प्रमुख भूमिका मूर्तिपूजा, अवतारवाद का काल्पनिक सिद्धान्त तथा फलित ज्योतिष में अन्धी श्रद्धा आदि कृत्य रहे हैं। यदि हम वेदों के मार्ग पर चल रहे होते, महाभारत के बाद हमने यज्ञों में पशु हिंसा न की होती, ईश्वर की उपासना की सच्ची विधि को न छोड़ा होता, ज्ञान व सद्कर्मों का समाज में महत्व होता, अज्ञानियों की बातों को महत्व न दिया होता और स्वविवेक से सभी विषयों की परीक्षा कर उन्हें स्वीकार किया होता तो हमारा जो पतन हुआ व अब भी कई अर्थों में है, वह कदापि न होता। हमारा कर्तव्य है कि हम अपने सभी स्वार्थों व पूर्वाग्रहों को भूलकर शुद्ध ज्ञान के आधार पर ईश्वरोपासना की सत्य विधि का निश्चय करें तभी हम पतन से बच सकते हैं। ऋषि दयानन्द ने वेदों, उपनिषदों व दर्शनों का अध्ययन करने सहित तर्क, युक्ति व अपने वैदुष्य एवं विवेक के आधार पर वेदानुकूल सन्ध्या वा ईश्वरोपासना की विधि हमें प्रदान की है। वह विधि वर्तमान में उपलब्ध सभी उपासना पद्धतियों में सर्वोत्तम है। आप इसे पढ़ेंगे तो पायेंगे कि यही सच्ची उपासना की विधि है।

“

ईश्वर हमारे मन की बातों को जानता व मुंह से बोली बातों को सुनता भी है तथा उन्हें हमारी पात्रता के अनुसार पूरी भी करता है। इसी को विस्तार से समझाने के लिये प्राचीन काल में महर्षि पतंजलि ने योगदर्शन शास्त्रीय ग्रन्थ का प्रणयन किया था जिसमें धारणा व ध्यान के द्वारा ही ईश्वर प्राप्ति व ईश्वर साक्षात्कार का उल्लेख किया गया है। मूर्तिपूजा का आरम्भ महाभारत के ढाई हजार वर्षों बाद जैन व बौद्ध मतों की स्थापना के बाद हुआ।

हिंदूराष्ट्र स्वप्नद्रष्टा : बंदा वीर बैरागी



पृष्ठों के उत्तुंग शिखर पर
स्मृति की है शीतल छाँह ।
इतिहास पुरुष वहां भजते माला,
बदल देते हैं काल प्रवाह ॥

बक़िमचंद्र चटर्जी भारतीय इतिहास के एक अच्छे अध्येता के रूप में जाने जाते रहे हैं । उन्होंने भारतीय इतिहास पर चिंतन करते हुए लिखा है : — अरब एक प्रकार से दिग्विजय रहे हैं । उन्होंने जहां आक्रमण किया वहीं जीते । वे केवल 2 देशों से पराजित होकर लौटे हैं । पश्चिम में फ्रांस और पूर्व में भारत । मोहम्मद की मृत्यु के 6 वर्षों के भीतर उन्होंने मिस्र और सीरिया , 10 वर्षों के भीतर ईरान , एक वर्ष में अफ्रीका और स्पेन , 80 वर्षों के भीतर काबुल और 8 वर्षों में तुर्किस्तान पर अधिकार करने में सफलता प्राप्त की। परंतु 100 वर्ष में भी भारत पर वे काबिज नहीं हो पाये । मोहम्मद बिन कासिम ने सिंध जीता था , पर बाद में राजपूतों द्वारा खदेड़ दिए गए थे। इतिहास के बारे में बक़िम चंद्र चटर्जी

“

बंदा बैरागी भारत की उस राष्ट्र परंपरा के ही प्रतिनिधि पुरुष हैं , जिसने इस देश में सदा से एक राष्ट्र होने के स्पष्ट प्रमाण दिए । राष्ट्र निर्माण के लिए केवल व्यक्तियों का समूह मात्र होना ही पर्याप्त नहीं होता , अपितु उस जनसमूह के भीतर एक ऐसी चेतना भी काम कर रही होनी अपेक्षित है जो अपने देश , धर्म , संस्कृति , इतिहास पुरुषों आदि के प्रति समान रूप से श्रद्धाभाव रखती हो और जब इनमें से किसी पर भी कहीं कोई संकट आए ।

का यह निष्कर्ष पूर्णतया सटीक है। भारत ही वह देश है जो इस्लामिक आक्रांताओं से अपनी संस्कृति की रक्षा करने में सफल रहा। इस्लाम को मानने वाले बादशाहों ने लंबे झूठे साम्राज्य भारत के भीतर स्थापित किए, बड़े झूठे नरसंहारों का आयोजन किया। सवा झूठा सवा मन जनेऊ प्रतिदिन उतरवाकर धड़ाधड़ हिंदुओं का धर्मांतरण करने या उनकी सामूहिक हत्याएं करने के भी बड़े झूठे नरसंहार किए, संकल्प लिए और उनके अनुसार कार्य भी किया, परंतु इन सबके उपरांत भी वे कभी भारत की आत्मा का धर्मांतरण नहीं कर पाए। भारत की अंतश्चेतना की जिजीविषा बनी रही और भारत को लड़ने के लिए प्रेरित करती रही। बस, भारत की इसी अंतश्चेतना का प्रतिबिंब बनकर पंजाब में बंदा बैरागी काम कर रहे थे अर्थात् इतिहास का एक ऐसा दैदीप्यमान नक्षत्र जो भारतीयता को बनाए रखने के लिए संकल्पित था और इस्लाम को भारत में परास्त करना जिसके जीवन का उद्देश्य बन चुका था।

बंदा बैरागी भारत की उस राष्ट्र परंपरा के ही प्रतिनिधि पुरुष हैं, जिसने इस देश में सदा से एक राष्ट्र होने के स्पष्ट प्रमाण दिए। राष्ट्र निर्माण के लिए केवल व्यक्तियों का समूह मात्र होना ही पर्याप्त नहीं होता, अपितु उस जनसमूह के भीतर एक ऐसी चेतना भी काम कर रही होनी अपेक्षित है जो अपने देश, धर्म, संस्कृति, इतिहास पुरुषों आदि के प्रति समान रूप से श्रद्धाभाव रखती हो और जब इनमें से किसी पर भी कहीं कोई संकट आए तो उस संकट के समाधान के लिए उचित समय आने पर एक साथ, एक स्वर से विरोध में उठ खड़ी हो। भारत के तथाकथित पराधीनता के काल में हमें ऐसे स्पष्ट लक्षण प्रत्येक बादशाह या सुल्तान के शासनकाल में दिखाई देते रहे, जब लोगों ने उत्तर झूठे दक्षिण, पूर्व झूठे पश्चिम का भेद छोड़कर किसी शासक से लड़ने को अपना सर्वोपरि कर्तव्य या राष्ट्रधर्म घोषित किया।

**उत्तर हो चाहे दक्षिण हो,
पूर्व हो जाए पश्चिम हो।
बिखरी सर्वत्र छटा एक ही
अब भारत मेरा स्वाधीन हो।।**

कुछ लोगों का मानना होता है कि नेता से जनता का निर्माण होता है। यह बात कदापि सही नहीं हो सकती है। जनापेक्षाएं शासकों को किसी ऐसे खूंट से बांधे रखती हैं, जो उसे मयादाहीन और असंतुलित नहीं होने देती हैं। शासक को भी अनैतिक कार्यों के करते समय जनता का उतना ही भय होता है जितना जनता को किसी अनैतिक कार्य को करते समय कानून का भय होता है। राष्ट्र के भीतर की वह सामूहिक चेतना किसी भी नेता का निर्माण करती है, जिसे वहां के रहने वाले लोग सामान्यतः स्वाभाविक रूप से और सामूहिक रूप से सब चाहते हैं। जैसे भारतवर्ष में सभी राष्ट्रवासियों की एक सामूहिक चेतना उनकी एक सामूहिक इच्छा के रूप में काम कर रही थी कि विदेशियों को यहां से भगाना है और भारत के धर्म, संस्कृति और इतिहास की या उसके प्रतीकों की रक्षा व सुरक्षा करनी है। इसी भावना ने यहां पर बंदा बैरागी या उनके पूर्ववर्ती या उनके बाद के अनेकों इतिहास पुरुषों का निर्माण किया। 1909 में गांधी जी ने हिंद स्वराज में लिखा था :— अंग्रेजों ने पढ़ाया है कि उन्होंने भारत को एक राष्ट्र बनाया है। यह बात गलत है। भारत अंग्रेजों के आने से पहले भी एक राष्ट्र था। गांधी जी का भारतीय इतिहास के संदर्भ में यह महत्वपूर्ण मत स्वीकरणीय है। वास्तव में गांधीजी के कई सिद्धांतों की हत्या उनके ही तथाकथित अनुयायी बने कांग्रेसियों ने की है। इतिहास के संदर्भ में जितनी भी गलत धारणाएं बनाई गईं या इतिहास लेखन करते समय जितना उसका विकृतिकरण किया गया है, उसका श्रेय गांधी जी के शिष्य पंडित जवाहरलाल नेहरू को जाता है। यदि भारतीय इतिहास के संदर्भ में गांधीजी के इस सिद्धांत के अनुसार कांग्रेस की सरकारें चलतीं तो इतिहास कुछ दूसरा ही होता।

गांधी जी की इस धारणा के विपरीत भारत में संघों का स्वरूप प्राचीन काल से देखने की मूर्खता की गई और ऐसा प्रचारित व प्रसारित किया गया कि जैसे भारत न तो कभी राष्ट्र था और न ही कभी एक ईकाई के रूप में काम कर रहा था या संगठित था। जैसा कि पार्थ चटर्जी कहते हैं :- देश का इतिहास लिखने के बदले उसके खंडों का इतिहास लिखा जाए। भारत एक ईकाई नहीं है। बकिम चंद्र चटर्जी ही लिखते हैं कि : झूठा इतिहास से हमें ज्ञात होता है कि पराधीनता के परिणाम में पराधीन जाति की बौद्धिक रचनाशीलता समाप्त हो जाती है। उन्होंने यह भी लिखा है कि :— भारत, इतने समय से पराधीन क्यों है ? यूरोप के लोगों का कहना है कि भारतीय कमजोर होते हैं, लेकिन अंग्रेजों ने

भारत पर कैसे राज्य स्थापित किया ? क्या वे भारतीयों की सहायता के बिना यहां जीत सकते थे ? भारत के बाहर उन्होंने साम्राज्य का विस्तार भारतवासियों की सहायता से किया।

कुछ लोग बड़ी सहजता से यह कह दिया करते हैं कि यदि विदेशी जातियों ने भारत पर शासन किया तो उसमें यहां के लोगों का सहयोग मिला तभी वह इसमें सफल हो पाए। उनका ऐसा कहने का अभिप्राय यह होता है कि भारत के लोगों ने भारत के विरुद्ध ही गद्दारी की तभी वह विदेशी जातियां यहां पर शासन स्थापित करने में सफल हो पाईं। वास्तविकता यह है कि यह बात भ्रम फैलाने के लिए की जाती है। सच यह भी है कि भारत के लोग जिसको अपना मान लेते हैं, उसके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना उनका स्वाभाविक और परंपरागत गुण है। यद्यपि समाज के जागरूक लोग इन विदेशी जातियों के शासकों को अपना न मानने के लिए भारतवासियों को जगाते रहे। इसके उपरांत भी कुछ मुट्टी भर लोग ऐसे भी रहे जो जयचंद की भूमिका निभाते रहे। विदेशी जातियां शासन करने में इन ह्यजयचंदों ह्य के कारण सफल हुईं। इन जयचंदों का इतिहास भारत का इतिहास नहीं हो सकता। हां, यह भारतीय इतिहास के काले धब्बे अवश्य हो सकते हैं।

जयचंदों के कारने पतन हुआ और क्लेश।

ईर्ष्या, घृणा बढ़ गए, बढ़ा भयंकर द्वेष।।

दक्षिण में औरंगजेब के लिए शिवाजी एक भारी चुनौती बन चुके थे। उनसे उलझकर सुलझने का कोई उपाय औरंगजेब निकाल नहीं पा रहा था। इधर पंजाब में बैरागी ने मराठों की ही तर्ज पर क्रांति मचा रखी थी। औरंगजेब बहुत भारी भ्रकम साधनों का स्वामी होने के उपरांत भी हमारे दो शेरों अर्थात् दक्षिण में छत्रपति शिवाजी महाराज और पंजाब में बंदा वीर बैरागी का उचित प्रतिकार नहीं कर पा रहा था। एक कस्बा साढोरा था, वहाँ के हिंदू इस कस्बे के मुसलमान मुखिया उस्मान खान के दुर्व्यवहार और दुराचार से बहुत दुखी हो चुके थे। उस समय इस राक्षस उस्मान खान का व्यवहार इतना निकृष्ट और अत्याचार पूर्ण हो चुका था कि वह किसी की भी बहू बेटी को नहीं देख रहा था। उसे इस बात का अहंकार था कि वह मुस्लिम है और उसके ऊपर मुगल बादशाहों की पूरी छत्रछाया बनी हुई है। इससे हिंदू अपनी अस्मिता की सुरक्षा के लिए बंदा बैरागी की ओर निहार रहे थे। उस्मान खान ने मंदिर विध्वंस करा झूठे करारकर वहां पर अनेकों मस्जिदें बनवा डाली थीं। जब उसकी बारी आई तब उसने निकट के बहुत से मुसलमान अपनी सहायता के लिए एकत्र किए। क्योंकि अब बंदा बैरागी की भूकूटी उस पर तन चुकी थी। उस्मान खान भी समझ गया था कि तेरे पापों का हिसाब अब होने ही वाला है। फलस्वरूप 11 माह संवत् 1764 को दिन भर लड़ाई होती रही। विनोद सिंह ने बैरागी से जाकर कहा :- लोग तो मर रहे हैं और तुम माला जप रहे हो। ऐसा सुनकर बंदा बैरागी क्रोधित हो उठा। तब उसने स्वयं आकर युद्ध क्षेत्र में बाण वर्षा आरंभ की। उसके बाणों की वर्षा से मुसलमान भयभीत होकर भागने लगे। कहते हैं कि पति पत्नी को छोड़ गया, मां बेटी को छोड़कर भाग निकली। किसी को भी अपने संबंधी तक को बचाने की सुध नहीं थी। सबको अपने प्राणों की चिंता पड़ी थी। किसी भी प्रकार से स्वयं सुरक्षित स्थान पर पहुंच जाना ही लोगों के जीवन का तात्कालिक उद्देश्य हो गया। सर्वत्र पापियों और अत्याचारियों का सफाया होने लगा। निरंतर दो दिन तक लूट होती रही। पूरा शहर पूर्णतया सुनसान हो गया। उस्मान खान को एक वृक्ष से बांधकर बैरागी ने मरवा डाला।

“

अंग्रेजों ने पढ़ाया है कि उन्होंने भारत को एक राष्ट्र बनाया है। यह बात गलत है। भारत अंग्रेजों के आने से पहले भी एक राष्ट्र था। गांधी जी का भारतीय इतिहास के संदर्भ में यह महत्वपूर्ण मत स्वीकरणीय है। वास्तव में गांधीजी के कई

सिद्धांतों की हत्या उनके ही तथाकथित अनुयायी बने कांग्रेसियों ने की है। इतिहास के संदर्भ में जितनी भी गलत धारणाएं बनाई गईं या इतिहास लेखन करते समय जितना उसका विकृतिकरण किया गया है।

भारतीय खाने पर दुनिया में क्यों छिड़ी बहस



आम तौर पर भारतीय खानपान की दुनिया भर में तारीफ होती है लेकिन इस बार उसकी आलोचना करने को लेकर दुनिया भर में बवाल मच गया है।

एक अमरीकी शिक्षाविद् ने भारतीय भोजन को 'बकवास' करार दिया और अंतरराष्ट्रीय खानपान जगत में सांस्कृतिक असहिष्णुता और नस्लवाद से जुड़ी बहस को हवा मिल गई. अंतरराष्ट्रीय मामलों के प्रोफेसर टॉम निकोल्स ने लिखा, "भारतीय खानपान बकवास है और हम ऐसे जताते हैं कि वो बकवास नहीं है." निकोल्स की आलोचना करने वालों का कहना है कि ये निराधार है.

इस टिप्पणी के बाद प्रवासियों के अनुभवों को लेकर चर्चा छिड़ी ही, साथ ही अमरीका में कितने लोगों ने खानपान को लेकर नस्लवाद का सामना किया, इस पर भी बहस शुरू हुई. रोड आइलैंड के यूएस नेवल वॉर कॉलेज में पढ़ाने वाले निकोल्स ने ये बयान तब दिया था, जब एक ट्विटर यूजर ने 'खाने को लेकर विवादित मत' जाहिर करने की बात कही थी. और इस टिप्पणी के तुरंत बाद तीखी प्रतिक्रिया देखने को मिली. सेलेब्रिटी शेफ पद्मा लक्ष्मी ने लिखा, "क्या आपकी

“

इस टिप्पणी के बाद प्रवासियों के अनुभवों को लेकर चर्चा छिड़ी ही, साथ ही अमरीका में कितने लोगों ने खानपान को लेकर नस्लवाद का सामना किया, इस पर भी बहस शुरू हुई. रोड

आइलैंड के यूएस नेवल वॉर कॉलेज में पढ़ाने वाले निकोल्स ने ये बयान तब दिया था, जब एक ट्विटर यूजर ने 'खाने को लेकर विवादित मत' जाहिर करने की बात कही थी.



जबान जायका नहीं समझती?" एक अन्य यूजर ने लिखा, "कल्पना कीजिए कि पूरी जिंदगी बेस्वाद गुजारनी पड़ी." न्यूयॉर्क के एक पूर्व सरकारी वकील प्रीत भरारा ने ट्वीट किया, "टॉम, मैं तुम्हें एक शानदार जगह लेकर चलूंगा।"

दूसरों ने कहा कि निकोल्स ने शायद भारतीय व्यंजनों में से 'एक फोसदी से भी कम' का स्वाद लिया है. उन्होंने बाद में खुद भी स्वीकार किया कि उन्होंने केवल अमरीकी और ब्रिटिश भारतीय रेस्तरां में खाना खाया है.

निकोल्स के शुरूआती ट्वीट ने इस ओर भी ध्यान दिलाया कि प्रवासियों के जीवन में खाना क्या भूमिका अदा करता है. कुछ का कहना था कि अमरीका में अंतरराष्ट्रीय व्यंजनों को कई बार

'एथनीक फूड' कहा जाता है और साथ ही 'सस्ता' भी.

इसलिए कई लोग 'भारतीय स्ट्रीट फूड के उन अमरीकी वर्जन' से वाकिफ हैं, जिनमें असली भारतीय स्वाद नहीं बसता.

एक यूजर ने लिखा, "असल में कोई 'भारतीय' खाना नहीं है."

"इसी तरह कोई करी प्रलेवर नहीं होता. ना ही कोई चाय टी होती है." उन्होंने बताया कि चाय दरअसल टी का हिन्दी अनुवाद है और करी, डिश की कि स्म है, ना कि कोई प्रलेवर. अन्य लोग इस बारे में भी बात कर रहे हैं कि कैसे अल्पसंख्यकों के प्रति नस्लवादी टिप्पणियों में खाने के गंध और स्वाद का जिक्र लंबे समय से होता रहा है और वे निकोल्स पर असहिष्णुता का आरोप लगाते हैं. सायरा राव लिखती हैं, "मुझसे कहा जाता है कि मुझमें से अजीब गंध आती है, मेरे खाने से अजीब गंध आती है कि भारतीय सड़कों पर रहते हैं इसलिए हमारा सबकुछ खराब होता है."

सायरा के मां-बाप प्रवासी हैं और उनका जन्म अमरीका में हुआ है.

इस हैशटैग के साथ अमरीकी राष्ट्रपति पद की उम्मीदवादी कमला हैरिस ने खाना बनाने की वीडियो सोशल मीडिया पर शेयर किया. कमला की मां के परिवार का ताल्लुक दक्षिण भारत से है.

खान-पान का शौक रखने वाले कुछ लोगों ने इस विवाद को सीधे तौर पर खारिज

कर दिया है और भारतीय व्यंजनों से भरी थाली का फोटो शेयर करते हुए लिखा है, "मैं देख रहा हूँ कि ट्विटर पर किसी ने भारतीय भोजन के बारे में नस्लवादी विचार रखे हैं. खैर यह (व्यंजन से भरी थाली) मेरे लिए काफी है."

एबीसी न्यूज के सीनियर रिपोर्टर टेरी मोरन ने कहा था कि "चाइनीज फूड एक थका हुआ भोजन है. यह काफी उबाऊ, अधिक नमक और पूरी तरह से भूलने वाला भोजन है."

उनकी इस टिप्पणी पर भी लोगों ने सवाल उठाया था. एक व्यक्ति ने उनकी इस टिप्पणी पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए लिखा था कि इनकी जानकारी काफी कम है और ये "पूरे भोजन और असंख्य क्षेत्रीय किस्मों को नजरअंदाज" कर रहे हैं.

एशियन फूड को पसंद करने वाले लोगों ने मोरन पर आरोप लगाया कि वो रेस्टोरेंट के खाने के आधार पर पूरे व्यंजन पर टिप्पणी कर रहे हैं. उनका कहना है कि उन्होंने वहां का कभी असली स्वाद नहीं चखा होगा, जहां दुनिया की सबसे बड़ी आबादी रहती है.

“

"इसी तरह कोई करी प्रलेवर नहीं होता. ना ही कोई चाय टी होती है." उन्होंने बताया कि चाय

दरअसल टी का हिन्दी अनुवाद है और करी, डिश की कि स्म है, ना कि कोई प्रलेवर. अन्य लोग इस बारे में

भी बात कर रहे हैं कि कैसे अल्पसंख्यकों के प्रति नस्लवादी टिप्पणियों में खाने के गंध और स्वाद का जिक्र लंबे समय से होता रहा है और वे निकोल्स पर असहिष्णुता का आरोप लगाते हैं.

तापमान बढ़ने से समुद्र में घट रही है ऑक्सीजन



जलवायु परिवर्तन और पोषक तत्वों से पैदा होने वाले प्रदूषण की वजह से महासागरों में ऑक्सीजन घट रही है। इससे मछलियों की कई प्रजातियां खतरे में घिर गई हैं।

प्रकृति के लिए काम करने वाले समूह 'आईयूसीएन' के एक गहन अध्ययन के जरिए ये जानकारी सामने आई है।

शोधकर्ताओं का कहना है कि कई दशकों से इस बात की जानकारी है कि समुद्र में पोषक तत्व कम हो रहा है लेकिन अब जलवायु परिवर्तन की वजह से स्थिति लगातार खराब होती जा रही है।

अध्ययन के जरिए जानकारी मिली है कि 1960 के दशक में महासागरों में 45 ऐसे स्थान थे, जहां ऑक्सीजन कम थी लेकिन अब इनकी संख्या बढ़कर 700 तक पहुंच गई है।

शोधकर्ताओं का कहना है कि ऑक्सीजन की कमी के कारण ट्यूना, मार्लिन और शार्क सहित कई प्रजातियों को खतरा है।

काफी समय से माना जाता है कि खेतों और कारखानों से नाइट्रोजन और फास्फोरस जैसे रसायनों के निकलने से महासागरों को खतरा रहता है और समुद्र में ऑक्सीजन का स्तर प्रभावित होता है। तटों के करीब ये अभी भी ऑक्सीजन की मात्रा घटने का प्रमुख कारक है।

लेकिन, हाल के वर्षों में जलवायु परिवर्तन से खतरा बढ़ गया है। अधिक मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड निकलने से जब तापमान बढ़ता है तो अधिकांश गर्मी समुद्र सोख लेता है। इसके कारण पानी गर्म होता है और ऑक्सीजन घटने लगती है। वैज्ञानिकों के अनुमान के मुताबिक साल 1960 से 2010 के बीच महासागरों में ऑक्सीजन की मात्रा दो फीसदी घटी है।

मछलियों पर मंडराता खतरा

ऑक्सीजन में कमी का ये वैश्विक औसत है और हो सकता है कि ये ज्यादा न लगे लेकिन कुछ जगहों पर ऑक्सीजन की मात्रा में 40 फीसद तक कमी आने की आशंका जाहिर की गई है।

ऑक्सीजन की मात्रा में थोड़ी भी कमी समुद्री जीवन पर बड़ा असर डाल सकती है। पानी में ऑक्सीजन की कमी होना जेलीफिश जैसी प्रजातियों के माकूल है लेकिन ट्यूना जैसी बड़ी और तेजी से तैरने वाली प्रजातियों के लिए ये स्थिति अच्छी नहीं है।

आईयूसीएन की मिन्ना एप्स ने कहा, "हम डी-ऑक्सीजनेशन के बारे में जानते हैं, लेकिन हमें इसके जलवायु परिवर्तन से संबंध के बारे में जानकारी नहीं थी और ये चिंता बढ़ाने वाली स्थिति है।" उन्होंने बताया, "बीते 50 सालों में ऑक्सीजन की मात्रा में चार गुना तक कमी आई है और अगर उत्सर्जन की मात्रा खासी

“

प्रकृति के लिए काम करने वाले समूह 'आईयूसीएन' के एक गहन अध्ययन के जरिए ये जानकारी सामने आई है।

शोधकर्ताओं का कहना है कि कई दशकों से इस बात की जानकारी है

कि समुद्र में पोषक तत्व कम हो रहा है लेकिन अब जलवायु परिवर्तन की वजह से स्थिति लगातार खराब होती जा रही है। अध्ययन के जरिए जानकारी मिली है कि 1960 के दशक में महासागरों में 45 ऐसे स्थान थे।



नियंत्रण में भी रहे तो भी महासागरों में ऑक्सीजन कम होती जाएगी."

ट्यूना, मार्लिन और कुछ शार्क जैसे प्रजाति ऑक्सीजन की कमी को लेकर विशेष रूप से संवेदनशील हैं और यह एक यह बुरी खबर है.

बड़ी मछलियों को अधिक ऊर्जा की जरूरत होती है. शोधकर्ताओं के अनुसार, ये जीव समुद्रों के उथले स्थान पर आ रहे हैं जहां ऑक्सीजन की मात्रा अधिक है. हालांकि, यहां इनके पकड़े जाने का खतरा अधिक रहता है.

अगर दुनिया के देशों का उत्सर्जन पर रोक लगाने को लेकर मौजूदा रवैया बरकरार रहा तो साल 2100 तक महासागरों की ऑक्सीजन तीन से चार प्रतिशत तक घट सकती है.

दुनिया के उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में इसके बुरे असर की संभावना है. जैव विविधता में सबसे समृद्ध जलस्तर के ऊपरी 1,000 मीटर में बहुत नुकसान होने की आशंका है.

क्या है उपाय?

ऑक्सीजन में कमी धरती के जनजीवन के लिए भी नुकसानदेह है. मिन्ना एप्स ने कहा कि अगर ऑक्सीजन कम होती है तो इसका मतलब है कि जैव विविधता को नुकसान पहुंचेगा. ऐसे में फिसलन भरी ढलान कम हो जाएगी और जेलिफिश की संख्या अधिक हो जाएगी.

उन्होंने कहा कि "यह महासागरों में ऊर्जा और बायो केमिकल साइकलिंग की स्थिति को बदल देगा और हमें नहीं पता कि समुद्र में इन जैविक और रासायनिक बदलावों का वास्तव में क्या प्रभाव पड़ सकता है."

उन्होंने कहा कि महासागरों में हो रहे बदलाव को रोकने की जिम्मेदारी दुनिया के राजनेताओं की है. यही वजह है कि ये रिपोर्ट सीओपी25 में जारी की गई है. रिपोर्ट के सह संपादक डैन लैफोले ने कहा, "महासागरों की ऑक्सीजन कम होने से समुद्र के इकोसिस्टम पर खतरा बढ़ गया है. समुद्री पानी का तापमान बढ़ने और खारेपन की वजह से यहां पहले से ही संकट की स्थिति है." उन्होंने कहा कि ऑक्सीजन की कमी वाले इलाकों को बढ़ने से रोकने के लिए ग्रीनहाउस से निकलने वाली गैसों पर प्रभावी तरीके से रोक लगाने की जरूरत है. इसके साथ ही खेती और दूसरी जगहों से पैदा होने वाले प्रदूषण पर काबू पाना भी जरूरी है.

“

बड़ी मछलियों को अधिक ऊर्जा की जरूरत होती है. शोधकर्ताओं के अनुसार, ये जीव समुद्रों के उथले स्थान पर आ रहे हैं जहां ऑक्सीजन की मात्रा अधिक है. हालांकि, यहां इनके पकड़े जाने का खतरा अधिक रहता है. अगर दुनिया के देशों का उत्सर्जन पर रोक लगाने को लेकर मौजूदा रवैया बरकरार रहा तो साल 2100 तक महासागरों की ऑक्सीजन तीन से चार प्रतिशत तक घट सकती है.

कितना महंगा होने जा रहा है मोबाइल इंटरनेट



भारत ऐसा देश है जहां पर मोबाइल डेटा की दरें दुनिया में सबसे कम हैं. यहां पर चीन, जापान और दक्षिण कोरिया से भी सस्ता मोबाइल डेटा मिलता है. लेकिन आने वाले समय में भारतीय ग्राहकों को इसी डेटा के लिए ज्यादा रकम चुकानी पड़ सकती है. ऐसा इसलिए क्योंकि दो प्रमुख टेलिकॉम कंपनियों ने जल्द ही मोबाइल डेटा का दाम बढ़ाने की घोषणा की है. भारतीय बाजार में एयरटेल और वोडाफोन-आइडिया की राजस्व के मामले में आधे से ज्यादा हिस्सेदारी है. ये दोनों ही कंपनियां जल्द ही मोबाइल डेटा को महंगा करने वाली हैं. हाल ही में दोनों कंपनियों ने चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में 10 अरब डॉलर का घाटा दिखाया है. ऊपर से सुप्रीम कोर्ट ने एक पुराने मामले को निपटाते हुए हाल ही में आदेश दिया है कि सभी टेलिकॉम कंपनियों को 90,000 करोड़ रुपए की रकम सरकार को देनी होगी. इसी के बाद वोडाफोन ने हाल ही में बयान जारी किया है, मोबाइल डेटा आधारित सेवाओं की तेजी से बढ़ती मांग के बावजूद भारत में मोबाइल डेटा के दाम दुनिया में सबसे कम हैं. वोडाफोन आइडिया 1 दिसंबर 2019 से अपने टैरिफ की दरें उपयुक्त ढंग से बढ़ाएगा ताकि इसके ग्राहक विश्वस्तरीय डिजिटल अनुभव लेते रहें. एयरटेल की ओर से भी इसी तरह का बयान जारी किया गया है. नई दरें क्या होंगी, इस बारे में अभी तक कोई जानकारी नहीं मिल पाई है. जियो ने भी अभी तक ऐसी कोई घोषणा नहीं की है. कंपनियां क्यों डेटा का दाम बढ़ा रही हैं, किस हद तक यह कीमत बढ़ेगी और आम आदमी पर इसका कितना फर्क पड़ेगा?

क्यों बढ़ेंगे दाम

पहले टेलिकॉम सेक्टर में कई कंपनियां थीं और उनमें प्रतियोगिता के कारण डेटा

की कीमतें गिरी थीं. ये कीमतें इसलिए भी गिरी थीं क्योंकि दुनिया के दूसरे देशों की तुलना में भारत में ग्राहकों की संख्या तेजी से बढ़ रही थी. भारत में 22 टेलिकॉम सर्कल हैं और उनमें तीन कैटेगरीज हैं- सर्कल्स (जैसे कि ओडिशा) में जियो, एयरटेल व दूसरी कंपनियां नए ग्राहक बनाना चाहती थीं. ऐसा इसलिए, क्योंकि यहां के ग्राहक हर महीने डेटा पर बेशक कम रकम खर्च करते हैं लेकिन इनकी संख्या इतनी है कि आपकी कुल कमाई अच्छी हो जाती है. इसी कारण वे कुछ समय के लिए नुकसान सहकर भी ग्राहकों को आकर्षित करना चाह रही थी. वह दौर अब खत्म हो गया है. साथ ही कंपनियां भी कम बची हैं, इसलिए स्वाभाविक है कि डेटा की कीमत बढ़ेगी.

“

मोबाइल डेटा आधारित सेवाओं की तेजी से बढ़ती मांग के बावजूद भारत में मोबाइल डेटा के दाम दुनिया में सबसे कम हैं. वोडाफोन आइडिया 1 दिसंबर 2019 से अपने टैरिफ की दरें उपयुक्त ढंग से बढ़ाएगा ताकि इसके ग्राहक

विश्वस्तरीय डिजिटल अनुभव लेते रहें. एयरटेल की ओर से भी इसी तरह का बयान जारी किया गया है. नई दरें क्या होंगी, इस बारे में अभी तक कोई जानकारी नहीं मिल पाई है. जियो ने भी अभी तक ऐसी कोई घोषणा नहीं की है.



कितनी बढ़ोतरी होगी

एकदम बहुत बढ़ोतरी बड़ी नहीं होगी क्योंकि कंपनियां एकदम से 15-20 प्रतिशत दाम नहीं बढ़ा सकतीं। इसलिए हर कंपनी अपने हिसाब से योजना बनाएगी कि और देखेगी कि किस सेगमेंट से कितना राजस्व बढ़ना है। दरअसल कंपनियां श्रवरेज रेवेन्यू पर यूजरश यानी प्रति व्यक्ति होने वाली कमाई को देखती है। अभी भारत में यह हर महीने लगभग 150 रुपए से कुछ कम है। आम भाषा में ऐसे समझें कि एक आम व्यक्ति हर महीने 150 रुपए खर्च कर रहा है। तो कंपनियां ऐसी योजना ला सकती है कि अभी आप महीने में 100 रुपए का प्लान ले रहे हैं तो 120 रुपए का प्लान लीजिए, हम आपको 100 रुपए वाले प्लान से दोगुना डेटा देंगे। इससे कंपनियां की 20 फीसदी कमाई तो बढ़ जाएगी लेकिन उनका डेटा का खर्च उतना नहीं बढ़ेगी कि परेशानी होने लगे। फिर भी, कंपनियां को अगर राजस्व बढ़ाना है तो ऐसा तभी हो सकता है जब वे मोटा खर्च करने वाले ग्राहकों से और पैसा खर्च करवाएंगी।

एजीआर पर सुप्रीम कोर्ट का फैसला वोडाफोन-आइडिया और एयरटेल के घाटा दिखाने के साथ-साथ हाल ही में लाइसेंस फीस से जुड़े विवाद पर सुप्रीम कोर्ट का फैसला आया है। मामला है एजीआर यानी अडजस्टेड ग्रॉस रेवेन्यू का। यह 15 साल पुराना केस है, जिसमें सुप्रीम कोर्ट का अभी फैसला आया है। जब मोबाइल सर्विस शुरू हुई थी, तो ऑपरेटरों से सरकार फिक्स्ड लाइसेंस फीस लेती थी। यानी आपके 100 ग्राहक हों या लाखों, आपको इसके एवज में निश्चित रकम देनी है। लेकिन अगस्त 1999 में नई पॉलिसी आई जिसके मुताबिक ऑपरेटरों को सरकार के साथ रेवेन्यू शेयर करना होगा।

यानी आपको 100 रुपए की कमाई में से भी निश्चित प्रतिशत सरकार को देना होगा और हजारों-करोड़ की कमाई में से भी। इससे सरकार की कमाई भी बढ़ गई क्योंकि टेलिकॉम कंपनियां भी बढ़ गई और उनके ग्राहक बढ़ने से सरकार को भी फायदा हुआ। लेकिन एजीआर का झगड़ा ये है कि इसमें किस-किस चीज को शामिल किया जाए। अब यह टेलिकॉम कंपनियों की कि स्मत खराब है कि इसी दौर में सुप्रीम कोर्ट का फैसला उनके खिलाफ आया है और उन्हें भारी-भरकम लंबित रकम सरकार को चुकानी होगी। अब इसका समाधान यह

हो सकता है कि सुप्रीम कोर्ट के फैसले को सरकार ही नया कानून लाकर बदलकर कंपनियों को राहत दे या फिर डिपार्टमेंट ऑफ टेलिकॉम कहे कि हम आपके यह रकम एकमुश्त नहीं लेंगे, आप धीरे-धीरे एक निश्चित अवधि में दे दीजिए।

दाम बढ़ाने से डर क्यों नहीं

प्रश्न यह उठता है कि जब कोई कंपनी डेटा को महंगा करेगी तो क्या उसके ग्राहक अन्य कंपनियों के पास नहीं चले जाएंगे? मोबाइल नंबर पोर्टेबिलिटी (एमएनपी) अधिक सफल नहीं हुआ है। फिर बात आती है विकल्पों की। बीएसएनएल को भी मिला दिया जाए तो भारत में चार ही टेलिकॉम ऑपरेटर हैं। यानी ग्राहकों के पास बहुत विकल्प नहीं हैं। अगर आज की तुलना 2008-10 से करें तो तब देश में 13 टेलिकॉम ऑपरेटर थे। अब स्थिति उल्टी हो गई है। पहले प्राइसिंग पावर यानी मूल्य तय करने की ताकत कंपनियों के पास नहीं थी। उस समय ग्राहकों के पास विकल्प बहुत थे। इसीलिए प्रतियोगिता के कारण कंपनियां मूल्य बढ़ाने से पहले सोचती थीं। लेकिन अब कम ऑपरेटर रह जाने के कारण प्राइसिंग पावर कंपनियों के पास आ गई है।

“

एजीआर पर सुप्रीम कोर्ट का फैसला वोडाफोन-आइडिया और एयरटेल के घाटा दिखाने के साथ-साथ हाल ही में लाइसेंस फीस से जुड़े विवाद पर सुप्रीम कोर्ट का फैसला आया है। मामला है एजीआर यानी अडजस्टेड ग्रॉस रेवेन्यू का। यह 15 साल पुराना केस है, जिसमें सुप्रीम कोर्ट का अभी फैसला आया है। जब मोबाइल सर्विस शुरू हुई थी, तो ऑपरेटरों से सरकार फिक्स्ड लाइसेंस फीस लेती थी।

किसानों को खुशहाल बनाने की पहल कब



आजाद भारत में हम सबका पेट भरने वाले अन्नदाता को आयेदिन अपने अधिकारों और हक को हासिल करने के लिए सड़कों पर उतरना पड़ता है। लेकिन देश की सरकारें हैं कि वो अपनी चतुर चाणक्य नीति से हर बार इन किसानों को आशवासन देकर समझा-बुझाकर सबका पेट भरने के उद्देश्य से अन्न उगाने के लिए वापस खेतों में काम करने के लिए भेज देती है। देश में सरकार चाहें कोई भी हो, लेकिन अपने अधिकारों के लिए लंबे समय से संघर्षरत किसानों की झोली हमेशा खाली रह जाती है। आज अन्नदाता किसानों के हालात बेहद सोचनीय हैं, स्थिति यह हो गयी है कि एक बड़े काश्तकार को भी अपने परिवार के लालनपालन के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है, जो स्थिति देशहित में ठीक नहीं हैं। किसानों के इस हाल के लिए किसी भी एक राजनैतिक दल की सरकार को ज़िम्मेदार ठहराना उचित नहीं होगा।

उनकी बदहाली के लिए पिछले 72 सालों में किसानों की वोट से देश में सत्ता सुख का आनंद लेने वाले सभी छोटे-बड़े राजनैतिक दल जिम्मेदार हैं। क्योंकि इन सभी की गलत नीतियों के चलते ही आज किसानों की स्थिति यह है कि भले-चंगे मजबूत किसानों को सरकार व सिस्टम ने कमजोर, मजबूर व बीमार बना दिया है। जिसमें रही सही कसर हाल के वर्षों में सत्ता पर आसीन रही राजनैतिक दलों की सरकारों ने पूरी कर दी है। जिनकी गलत नीतियों व हठधर्मी रवैये ने उन परेशान किसानों को सड़क पर आने के लिए मजबूर कर दिया है। जहां अब वो कृषि क्षेत्र की लाइलाज हो चुकी बिमारियों के समाधान की उम्मीद में बैठे हैं। किसानों में बढ़ते आक्रोश के चलते अब देश में स्थिति यह हो गयी है कि किसानों को आयेदिन अपनी लंबे समय से लंबित मांगों के समाधान को लेकर ना चाहकर भी सड़कों पर उतर आने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। आज मोदी सरकार के सामने सबसे बड़ी चुनौती है कि वो किसानों की दुश्वारियों को कम करके उनके आर्थिक स्वास्थ्य को जल्द से जल्द ठीक करें।

सरकार को समझना होगा भारत एक कृषि प्रधान देश है और हमारा अन्नदाता किसान देश की मजबूत नींव हैं, अगर सरकार किसानों को खुशहाल जीवन जीने का माहौल प्रदान करती है तो देश भी खुशहाल रहेगा। लेकिन वो इसी तरह से

गरीबी, कर्ज, फसल खराब होने पर उचित मुआवजा ना मिलने व फसल के उचित मूल्य ना मिलने से परेशान होकर इसी तरह आत्महत्या करता रहा तो इस स्थिति में देश व देशवासियों का खुशहाल रहना संभव नहीं है। किसानों के हालात में अगर जल्द सुधार नहीं हुआ तो वो दिन दूर नहीं है जब बेहद कठिन परिस्थिति, कड़े परिश्रम और अनिश्चितता से भरे कृषि क्षेत्र में आने वाले समय में खेती के कार्य से लोग बहुत तेजी से पलायन करने लगेंगे।

किसानों के दर्द को समझने के लिए कृषि क्षेत्र से जुड़े कुछ आंकड़ों पर गौर करें तो समझ आता है कि सरकार की उपेक्षा के शिकार कृषि क्षेत्र से देश की आधी से अधिक श्रमशक्ति 53 प्रतिशत लोग अपनी रोजीरोटी आजीविका चलाते हैं। इन लोगों में वो सब शामिल है जो किसी ना किसी रूप से कृषि क्षेत्र से जुड़े हुए हैं। वहीं देश के आर्थिक विकास के पैमाने सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की बात करें तो देश की सरकारों के कृषि क्षेत्र के प्रति उदासीन रवैये के चलते उसमें भी कृषि क्षेत्र का योगदान बहुत कम हुआ है। यह वर्ष 1950-1951 में 54 प्रतिशत था जो अब गिरकर मात्र लगभग 15 प्रतिशत के आसपास रह गया है। वहीं विगत

“

सरकार को समझना होगा भारत एक कृषि प्रधान देश है और हमारा अन्नदाता किसान देश की मजबूत नींव हैं, अगर सरकार किसानों को खुशहाल जीवन जीने का माहौल प्रदान करती है तो देश भी खुशहाल रहेगा। लेकिन वो

इसी तरह से गरीबी, कर्ज, फसल खराब होने पर उचित मुआवजा ना मिलने व फसल के उचित मूल्य ना मिलने से परेशान होकर इसी तरह आत्महत्या करता रहा तो इस स्थिति में देश व देशवासियों का खुशहाल रहना संभव नहीं है।

कुछ वर्षों में हुई किसानों की आत्महत्या पर ह्राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के आंकड़ों की बात करें तो भारत में 1995 से 2014 के बीच किसानों की आत्महत्या का आंकड़ा तीन लाख पार कर चुका था। वहीं पिछले कुछ वर्षों में भारत में किसानों की आत्महत्या के मामलों में बढ़ोत्तरी हुई है। जो हालात देश के नीतिनिर्माताओं व भाग्यविधाताओं के साथ-साथ आमजनमानस के लिए भी बहुत चिंताजनक व सोचनीय हैं। लेकिन आजतक किसी भी सरकार ने किसानों की आत्महत्या के लिए जिम्मेदार कारकों व हालातों का स्थाई समाधान करने की ठोस कारगर पहल धरातल पर नहीं की है। इस ज्वलंत समस्या पर सरकार तत्कालिक कदम उठाकर अपनी जिम्मेदारी से इतिश्री कर लेती है।

आजकल तो देश के भाग्यविधाताओं ने किसानों की होने वाली आत्महत्याओं के आंकड़ों को ही छिपाना शुरू कर दिया है। दुर्भाग्य की बात यह है कि पिछले कई वर्षों से किसानों की आत्महत्या का आंकड़ा आमजनमानस के लिए उपलब्ध नहीं है। लेकिन पिछले वर्षों के औसत के आधार पर कहा जा सकता है कि मौजूदा समय में देश में किसान आत्महत्याओं का यह आंकड़ा लगभग 4 लाख के आसपास पहुंच गया होगा। लेकिन फिर भी देश में किसानों की उपेक्षा लगातार जारी है। एक रिपोर्ट के अनुसार देश में अन्नदाताओं की आत्महत्याओं के पीछे सबसे बड़ा मुख्य कारण साहूकार व बैंकों के ऋण की समय से अदायगी न कर पाना है। क्योंकि किसान व्याज के चलते कर्ज में भारी वृद्धि हो जाने से समय पर कर्ज नहीं चुका पाता है, इसके लिए फसल उत्पादन लागत में भारी वृद्धि के बाद भी फसल उत्पादन में कमी, फसल का उचित मूल्य नहीं मिलना तथा मौसम की बेरुखी के चलते लगातार फसलों का बर्बाद होना, बर्बाद फसलों का उचित मुआवजा नहीं मिल पाना आदि हालात जिम्मेदार हैं। हमारे देश में आजकल किसानों के द्वारा नगदी फसलें उगाने का चलन ज्यादा चल गया है, जिनकी लागत बहुत अधिक होती है। जिसके चलते किसानों को बहुत पैसे की आवश्यकता होती है और देश में आज भी स्थिति यह है कि बैंकों व अन्य संस्थाओं से किसानों को उनकी जरूरत के मुताबिक कर्ज आसानी से नहीं मिल पाता है। जिसके चलते किसान 24 प्रतिशत से लेकर 50 प्रतिशत ब्याज पर निजी साहूकारों से ऋण लेकर अपनी खेती की जरूरतों को पूरा करता है, लेकिन फसल तैयार होने के बाद गलत नीतियों के चलते उचित मूल्य ना मिल पाने, फसल बर्बाद व उत्पादन कम होने के चलते किसानों की कर्ज अदा करने की स्थिति नहीं रह पाती है, जिसके चलते वो कर्ज के इस खतरनाक दलदल में बुरी तरह धंसता चला जाता है और जब उसकी सहने की क्षमता जवाब दे जाती है तो वो जिंदगी से खफा हो आत्महत्या करने जैसा कदम उठा कर असमय मौत को गले लगा लेता है।

हालांकि भारत में किसान एक ऐसी बहादुर कौम जो हर तरह की विकट से विकट परिस्थितियों में भी बिना हिम्मत हारे उनका डट कर मुकाबला करने का माद्दा रखता है, लेकिन फिर भी कुछ लोग जीवन संघर्ष के इस दौर में अपने परिवारों के कष्टों को देखकर टूट जाते हैं और वो आत्महत्या कर बैठते हैं। देश में बेहद कठिन हालात में काम करने वाले किसानों की समस्याओं की उपेक्षा सभी सरकारों के द्वारा जारी है, किसानों की उपेक्षा का सबसे बड़ा उदाहरण है कि देश में उद्योगपतियों ने मंदी की हालात से उत्पन्न समस्या से केंद्र सरकार को अवगत कराया, सरकार ने विकट हालात को तुरंत समझते हुए भारी मंदी की चपेट में आये उद्योगों को उबारने के लिए तत्काल कॉरपोरेट टैक्स को घटाकर उनको राहत देने का काम किया, जिससे देश के कॉरपोरेट सेक्टर को 1.45 लाख करोड़ का लाभ आने वाले समय में होगा। जबकि हमारा अन्नदाता किसान अपनी समस्याओं से परेशान होकर आत्महत्या कर लेता है, फिर भी सरकार किसानों की लंबे समय से लंबित चली आ रही विभिन्न मांगों पर समय रहते सुनवाई करके उनका स्थाई हल नहीं करती है। यहां गौरतलब है कि सरकार के द्वारा देश के उद्योगों को यह राहत ऐसे समय में दी गई थी, जब पश्चिमी उत्तर प्रदेश के हजारों अन्नदाता किसान अपनी लंबे समय से लंबित मांगों को पूरा करवाने के लिए पैदल मार्च करके दिल्ली पहुंचे थे। फिर भी सरकार ने किसानों की झोली को खाली ही रखा, केंद्र सरकार ने पूर्व की भांति चाणक्य नीति का इस्तेमाल करते हुए, अन्नदाता को मांगों पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करने का आश्वासन देकर चतुराई से वापस घर भेज दिया। अब देखना होगा कि सरकार का किसानों की मांगों पर विचार आखिर कब तक चलता है और कब तक किसानों की मांगों पर अमल होता है। देश के अन्नदाताओं के आंदोलन के साथ इसी तरह का सफलता पूर्वक प्रयास मोदी सरकार में पहले भी हो चुका है और समय-समय पर पहले की सरकारों भी इस प्रकार के हथकंडे को अपना कर किसानों के आक्रोश को शांत करती रही हैं।

देश में सरकारें बदलती रही है लेकिन किसानों की समस्याओं का पूर्ण स्थाई समाधान फिर भी अभी तक नहीं हो पाया है। जबकि किसानों की मुख्य मांगे वही वर्षों पुरानी है, फसलों का उचित मूल्य, मौसम की मार के चलते बर्बाद फसलों का उचित मुआवजा, सरकार द्वारा तय रेट पर फसलों की खरीद सुनिश्चित करना, गन्ना का भुगतान समय पर हो, किसानों का कर्ज माफ हो, किसानों को बिजली पानी डीजल सस्ता दिया जाए, किसानों के सुरक्षित जीवन के लिए पेंशन योजना बनायी जाये, किसानों की हालात को सुधारने के लिए देश में स्वामीनाथन आयोग की रिपोर्ट को जल्द से जल्द लागू किया जाये आदि हैं। किसान का आरोप है कि हम बेहद परेशान हैं लेकिन उसके बाद भी कोई भी सरकार हमारी मांगों पर कभी भी ध्यान से सहानुभूतिपूर्वक विचार करके हमारी समस्याओं का ठोस स्थाई समाधान नहीं निकालती है। किसानों का मानना है कि देश में चाहे सरकार कोई भी हो वो सड़क पर आये किसानों के दुखदर्द को समझने के लिए तैयार नहीं है। देश में लंबे समय से किसान आंदोलनरत होकर सड़कों पर है लेकिन कोई भी सरकार किसानों की समस्या जान कर उनका स्थाई समाधान करने के लिए तैयार नहीं है। आज किसानों की स्थिति पर मैं देश के नीतिनिर्माताओं से अनुरोध करना चाहता हूँ कि

होओ देश के भाग्यविधाता, ना करें अन्नदाता पर अत्याचार, अन्न उगा कर सबका पेट भरने वाले, किसानों की जल्द सुनों पुकार, ना करें उस पर अब और प्रहार, दे दो उसको खुशहाली सेजीवन जीने के अधिकार।। सबसे बड़ी अफसोस की बात यह है कि सबका पेट भरने वाला अन्नदाता किसान खुद खाली पेट अपने ही द्वारा चुनी सरकार से अपने अधिकारों की लड़ाई बहुत लंबे समय से लड़ता आ रहा है। लेकिन उसकी आवाज उठाने के सबसे सशक्त माध्यम भारतीय मीडिया के अधिकांश प्रभावशाली चहरे उस पर ना जाने क्यों चुप्पी लगाये बेटे हैं। उनमें से अधिकांश अपने प्राइम टाइम में किसानों की समस्याओं व उनकी बेहाली पर चर्चा करने के लिए तैयार नहीं हैं। लेकिन यह भी सच्चाई है कि आप जब भी टीवी खोलेंगे तो प्राइम टाइम में हिंदू-मुसलमान, अबु बकर अल बगदादी, तानाशाह किम जोंग, आईएसआईएस, पाकिस्तान आदि के टीआरपी हासिल करने वाले मुद्दों पर बेहद गम्भीरतापूर्वक डिबेट चल रही होती है। लेकिन किसी के भी पास सबका पेट भरने वाले देश के अन्नदाता किसान के लिए समय नहीं है।

हालांकि समय-समय पर किसानों के लिए विभिन्न सरकारों के द्वारा कई कल्याणकारी योजनाएं भी चलाई गयी हैं। मोदी सरकार के द्वारा भी किसान हित के लिए कई योजनाएं चलाई जा रही है, लेकिन उन योजनाओं का धरातल पर कोई खास स्थाई असर होता हुआ नजर नहीं आ रहा है। इसलिए अब मोदी सरकार को जरूरत है कि किसानों की ज्वलंत समस्या के बुनियादी कारणों पर तत्काल गौर कर, उन्हें अच्छी तरह से समझा जाए और फिर सरकार के द्वारा इन समस्याओं के समाधान की दिशा में ठोस प्रयास किये जाए। वैसे भी अब केंद्र में दोबारा चुनकर आयी मोदी सरकार से देशवासियों को बहुत ज्यादा उम्मीदें हैं, सरकार को भी जनता की इस आशा पर खरा उतरने के लिए जनभावनाओं के अनुरूप समय रहते काम करना होगा। इसलिए सरकार को भी यह जल्दी ही समझ जाना चाहिए कि किसान देश की नींव है उसको मजबूत करें बिना देश का मजबूत होना संभव नहीं है। इसलिए देश की नींव किसानों की जिंदगी को खुशहाल बनाने के लिए सरकार को फाईलों से योजनाओं को जल्द से जल्द निकालकर धरातल पर लाकर अमलीजामा पहना कर, समस्याओं का स्थाई कारगर समाधान करना होगा तब ही देश में खुशहाली व विकास का रामराज्य संभव है।

“

हमारे देश में आजकल किसानों के द्वारा नगदी फसलें उगाने का चलन ज्यादा चल गया है, जिनकी लागत बहुत अधिक होती है। जिसके चलते किसानों को बहुत पैसे की आवश्यकता होती है और देश में आज भी स्थिति यह है कि बैंकों व

अन्य संस्थाओं से किसानों को उनकी जरूरत के मुताबिक कर्ज आसानी से नहीं मिल पाता है। जिसके चलते किसान 24 प्रतिशत से लेकर 50 प्रतिशत ब्याज पर निजी साहूकारों से ऋण लेकर अपनी खेती की जरूरतों को पूरा करता है।

सरकारी स्कूलों के ढांचे में सुधार की जरूरत



शिक्षा पर नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार देश भर में स्कूली शिक्षा के मामले में काफी असमानताएं हैं। जिसमें बड़े पैमाने पर सुधार की आवश्यकता है। आयोग की स्कूल एजुकेशन क्वालिटी इंडेक्स रिपोर्ट में गुणवत्ता के आधार पर केरल को सबसे पहला जबकि देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश को अंतिम पायदान पर रखा गया है। यह रिपोर्ट स्कूल जाने वाले बच्चों के सीखने के परिणामों पर आधारित है। रिपोर्ट के अनुसार प्राथमिक स्तर पर दाखिले में देश के 20 बड़े राज्यों में से 11 में चिंताजनक गिरावट आई है। जबकि माध्यमिक स्तर पर यह गिरावट 20 बड़े राज्यों में से 8 में दर्ज की गई है। पुस्तकालय और कंप्यूटर शिक्षा के मामलों में भी राज्यों में काफी असमानताएं हैं। राज्यों के बीच शिक्षा में असमानता देश के विकास में एक बड़ी बाधा है, क्योंकि यही वह सेक्टर है जो पूरी पीढ़ी की दिशा और दशा को इंगित करता है। आंकड़े बताते हैं कि अभी भी शैक्षणिक सुधार के लिए एक मजबूत पहल की जरूरत है। ऐसी नीति बनाने की जरूरत है जिसे सभी राज्यों में समान रूप से लागू करवाया जा सके। निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा (आरटीई) अधिनियम, 2009 देश के सभी राज्यों में समान रूप से लागू है इसके बावजूद रिपोर्ट के अनुसार शिक्षा नियम को लागू करवाने में केरल सबसे आगे और उत्तर प्रदेश सबसे पिछड़ा है। पढ़ाने का पैटर्न, शिक्षकों की ट्रेनिंग, क्लास रूम और पदों के अनुपात में शिक्षकों की नियुक्ति समेत सभी मामलों में केरल की अपेक्षा देश के सभी राज्य पिछड़े हुए हैं। देवभूमि कहलाने वाला पहाड़ी राज्य उत्तराखण्ड हास्कूल एजुकेशन क्वालिटी इंडेक्स रिपोर्ट में दसवें पायदान पर है। जो सरकारी स्कूलों में इसकी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में कमी को दर्शाता है। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में स्थिती और भी चिंताजनक है। जहां कुछ क्षेत्रों में स्कूल भवन पढ़ाने लायक नहीं है, तो कहीं शिक्षक के पद

खाली हैं। सरकारी स्कूलों की चरमराती व्यवस्था के कारण ही अभिभावकों का रुझान निजी विद्यालयों की तरफ बढ़ने लगा है। कम आमदनी के बावजूद मां बाप अपने बच्चों को प्राइवेट स्कूल में दाखिला दिलाने को तरजीह दे रहे हैं। एक गैर सरकारी सर्वे के अनुसार 35 प्रतिशत अभिभावक अपने बच्चों की अच्छी शिक्षा के निजी स्कूलों का विकल्प चुन रहे हैं। वर्ष 2006 में निजी स्कूलों में दाखिला लेने वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत 20 से बढ़कर 2018 में 33 प्रतिशत हो गया है। उत्तराखण्ड के सरकारी स्कूलों ने वर्ष 2014 से 2018 के मध्य 1.5 लाख विद्यार्थियों ने निजी स्कूलों में पलायन किया है। 13 जिलों के 1689 प्राथमिक स्कूलों के 39000

“

यह रिपोर्ट स्कूल जाने वाले बच्चों के सीखने के परिणामों पर आधारित है। रिपोर्ट के अनुसार प्राथमिक स्तर पर दाखिले में देश के 20 बड़े राज्यों में से 11 में चिंताजनक गिरावट आई है। जबकि माध्यमिक स्तर पर यह गिरावट 20 बड़े राज्यों में से 8 में दर्ज की गई है। पुस्तकालय और कंप्यूटर शिक्षा के मामलों में भी राज्यों में काफी असमानताएं हैं। राज्यों के बीच शिक्षा में असमानता देश के विकास में एक बड़ी बाधा है।



विद्यार्थी एकल शिक्षकों की कृपा से चल रहे हैं। राज्य में छात्र शिक्षक के अनुपात में बहुत बड़ा अंतर है। वर्तमान में निजी एवं सरकारी स्कूलों के ढांचागत शिक्षा में भी बहुत बड़ा अंतर है। खासकर अंग्रेजी भाषा की महत्ता के मामले में अभिभावक निजी स्कूलों का रुख कर रहे हैं। उन्हें लगता है कि सरकारी स्कूलों की अपेक्षा प्राइवेट स्कूल में प्राइमरी स्तर पर ही अंग्रेजी बोलने पर जोर दिया जाता है। जो भविष्य में बच्चों को रोजगार दिलाने में सहायक साबित होगा। निजी स्कूल और सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों की शिक्षा क्षमता का अन्तर भी बढ़ता जा रहा है। 2009 के अनुसार यह 16 प्रतिशत से बढ़कर 2013 में 29 प्रतिशत एवं 2018 में 37 प्रतिशत देखने को मिला है। बात केवल भाषा सीखने तक ही सीमित नहीं है बल्कि स्कूल भवन और ढांचागत विकास भी प्रभाव रखता है। मेरे स्वयं के अनुभव से देखा है कि सरकारी स्कूलों में विद्यार्थियों की शिक्षा से ही नहीं वरन् स्वास्थ्य से भी खिलवाड़ किया जा रहा है। इसी साल नैनीताल शहर के एक सरकारी स्कूल में भ्रमण के दौरान मैंने गंदे शौचालय देखे जो गुटखे, सिगरेट व दुर्गंध से भरे थे, जिसमें एक पल खड़ा रह पाना मुश्किल था। वहीं विद्यालय के सभागार का ऐसा आलम था कि छत कभी भी गिर कर एक बड़े हादसे का रूप ले सकती है। यह स्थिति नैनीताल शहर के केवल एक विद्यालय की ही नहीं है। उत्तराखण्ड राज्य के 90 प्रतिशत सरकारी स्कूल इसी परिस्थिति से जूझ रहे हैं। जबकि उत्तराखंड भूकंप के जोन 4 में आता है। जो उच्च क्षति जोखिम वाला क्षेत्र है। ऐसी में जर्जर भवन एक बड़े हादसे को अंजाम दे सकते हैं। जिसकी तरफ स्थानीय प्रशासन को गंभीरता से ध्यान देने की आवश्यकता है। ऐसा नहीं है कि सरकारी स्कूलों के शिक्षकों में ज्ञान की कमी है। उनकी नियुक्ति योग्यता के आधार पर होती है परन्तु स्कूली कार्य के अतिरिक्त उन शिक्षकों पर चुनाव, जनगणना तथा अन्य सर्वे जैसे कार्य बोझ लाद दिए जाते हैं। जिससे अक्सर उनका अध्यापन कार्य प्रभावित होता है। इसके विपरीत निजी स्कूलों के शिक्षकों को केवल पढ़ाने का काम करना होता है, जिससे वह अपनी सारी ऊर्जा छात्रों के सर्वांगीण विकास में लगाते हैं। बहरहाल सरकार को नीतियों में सुधार करने की आवश्यकता है। निजी स्कूलों की अपेक्षा सरकारी स्कूलों को सभी अनुदान दिए जाते हैं। बजट

में शिक्षा के लिए विशेष राशि आवंटित की जाती है। इसके बावजूद अभिभावकों का निजी स्कूलों की तरफ रुख करना इसकी लचर व्यवस्था को दर्शाता है। जरूरत इस बात की है कि सरकार इन स्कूलों के मॉडल में सुधार करे। एक तरफ जहां प्राइवेट स्कूलों की तर्ज पर भवनों को तैयार किया जाये वहीं शिक्षकों की गुणवत्ता पर भी ध्यान दिया जाये। इसके अतिरिक्त प्राथमिक स्तर से ही अंग्रेजी विषय पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। आधुनिक शैक्षिक पहलों एवं प्रतियोगिता परीक्षाओं को पाठ्यक्रम में शामिल करने की आवश्यकता है। वर्तमान समय में कंप्यूटर हमारे दैनिक जीवन का एक हिस्सा बन गए हैं। हमारी पीढ़ी इससे वंचित न रहे इसलिए जरूरी है कि कम्प्यूटर की मूल बातें प्राथमिक स्तर से ही पाठ्यक्रम में शामिल किये जाने चाहिए। वास्तव में सरकारी स्कूलों के मॉडल में सुधार की आवश्यकता है। कई स्कूलों में सुधार आया है लेकिन कई जगह अब भी सुधार की गुंजाइश बाकी है। इसकी शुरुआत प्राथमिक स्तर से ही की जानी चाहिए क्योंकि मजबूत नींव पर ही सशक्त भवन तैयार किया जा सकता है।

“ निजी स्कूल और सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों की शिक्षा क्षमता का अन्तर भी बढ़ता जा रहा है। 2009 के अनुसार यह 16 प्रतिशत से बढ़कर 2013 में 29 प्रतिशत एवं 2018 में 37 प्रतिशत देखने को मिला है। बात केवल भाषा सीखने तक ही सीमित नहीं है बल्कि स्कूल भवन और ढांचागत विकास भी प्रभाव रखता है। मेरे स्वयं के अनुभव से देखा है कि सरकारी स्कूलों में विद्यार्थियों की शिक्षा से ही नहीं वरन् स्वास्थ्य से भी खिलवाड़ किया जा रहा है।

कैंसर का कारण बनते हैं ई-सिगरेट में मौजूद रसायन



पिछले दिनों लोकसभा में इलैक्ट्रॉनिक सिगरेट (उत्पादन, विनिर्माण, आयात, निर्यात, परिवहन, विक्रय, वितरण, भण्डारण और विज्ञापन) विधेयक-2019 पारित होने के बाद दो दिसम्बर को राज्यसभा में भी ध्वनिमत से यह विधेयक पारित हो गया। उल्लेखनीय है कि गत 18 सितम्बर को केन्द्र सरकार द्वारा अमेरिकी युवाओं में ई-सिगरेट की बढ़ती लत का हवाला देते हुए धूम्रपान नहीं करने वालों में निकोटीन की लत बढ़ने के मद्देनजर ई-सिगरेट पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने का फैसला लिया गया था और संसद के दोनों सदनों में इस संबंधी विधेयक पारित होने के बाद अब ई-सिगरेट पर पूर्ण प्रतिबंध का मार्ग प्रशस्त हो गया है। अब ई-सिगरेट का कारोबार करने वाले व्यक्ति को पहली बार एक वर्ष की सजा तथा एक लाख का जुमाना हो सकता है लेकिन दूसरी बार पकड़े जाने पर तीन वर्ष तक की सजा व पांच लाख रुपये जुमाना अथवा दोनों हो सकते हैं।

“

सरकार द्वारा ई-सिगरेट पर पाबंदी लगाने का जो स्वागतयोग्य निर्णय लिया गया, वह कई अमेरिकी शोधों के अलावा कुछ भारतीय संस्थानों द्वारा की गई रिसर्च पर आधारित है। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा ई-सिगरेट को लेकर इसी साल मई माह में एक श्वेत पत्र जारी कर इस पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने की सिफारिश की गई थी।

भण्डारण के लिए ई-सिगरेट रखने पर भी 6 माह की जेल और 50 हजार रुपये तक का जुमाना संभव है।

सरकार द्वारा ई-सिगरेट पर पाबंदी लगाने का जो स्वागतयोग्य निर्णय लिया गया, वह कई अमेरिकी शोधों के अलावा कुछ भारतीय संस्थानों द्वारा की गई रिसर्च पर आधारित है। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा ई-सिगरेट को लेकर इसी साल मई माह में एक श्वेत पत्र जारी कर इस पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने की सिफारिश की गई थी। देश के शीर्ष मेडिकल रिसर्च निकाय इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च, एम्स, टाटा रिसर्च सेंटर तथा राजीव गांधी कैंसर अस्पताल द्वारा भी इस पर प्रतिबंध की अनुशंसा की गई थी। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद ने अपने श्वेत पत्र में ई-सिगरेट के तमाम दुष्प्रभावों के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए बताया था कि ई-सिगरेट को लेकर युवाओं में भ्रम है कि इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होता जबकि वास्तव में ऐसा नहीं है क्योंकि यह भी स्वास्थ्य के लिए उतनी ही हानिकारक है, जितनी साधारण सिगरेट या अन्य तम्बाकू उत्पाद। श्वेत पत्र में कहा गया था कि ई-सिगरेट व्यक्ति के डीएनए को क्षतिग्रस्त कर सकती है और इसकी वजह से सांस, हृदय व फेफड़े संबंधी तमाम बीमारियां हो सकती हैं। ई-सिगरेट का सेवन करने वाली महिलाओं में तो गर्भावस्था के दौरान भ्रूण के विकास में दिक्कतें पैदा हो सकती हैं। ई-सिगरेट पर प्रतिबंध लगाने वाला भारत पहला देश नहीं है बल्कि दुनियाभर में अभी तक करीब दो दर्जन देश इसे प्रतिबंधित कर चुके हैं। ई-सिगरेट की शुरुआत वास्तव में आम सिगरेट की लत छुड़ाने के नाम पर हुई थी लेकिन विकसित देशों के साथ-साथ विकासशील देशों में भी यह खासकर युवाओं और बच्चों में जिस प्रकार एक नई महामारी में बदलती दिख रही थी, उसके मद्देनजर बच्चों को इसके खतरे से बचाने के लिए भारत में इस पर प्रतिबंध लगाया जाना समय की बहुत बड़ी मांग भी थी। बच्चों व नाबालिगों को आकर्षित करने के लिए ई-सिगरेट निमार्ता कम्पनियों द्वारा अलग-अलग फ्लेवर के साथ ही कैन्डी के रूप में भी ई-सिगरेट को बाजारों में उतारा जा चुका है, जिससे प्रभावित होकर छोटी कक्षाओं के बच्चे भी कैन्डी की शक्ल में ई-सिगरेट पकड़ना शुरू कर देते हैं, जो बाद में आम सिगरेट भी पीने लगते हैं। उत्तर-पश्चिमी इंग्लैंड के शोधकर्ताओं ने भी स्पष्ट किया था कि जिन किशोरों ने कभी सिगरेट का एक कश भी नहीं लिया था, वे भी अब ई-सिगरेट के साथ प्रयोग कर रहे हैं। इस शोध में 14 से 17 वर्ष आयु वर्ग के 16193 किशोरों को शामिल किया गया था और शोध के मुताबिक पांच में से एक किशोर ने ई-सिगरेट का कश लेने या उसे खरीदने की कोशिश की थी।

एक अमेरिकी अध्ययन के अनुसार वहां 10वीं तथा 12वीं के स्कूली बच्चों में ई-सिगरेट का चलन 77.8 प्रतिशत तक बढ़ा है जबकि मिडल स्कूल के बच्चों में ई-सिगरेट लेने का चलन 48.5 प्रतिशत बढ़ा है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों का कहना है कि इस बात में कोई संदेह नहीं है कि ई-सिगरेट उपलब्ध कराने वाली कम्पनियां जानबूझकर बबलगम, कैप्टन क्रंच तथा कॉटन कैन्डी जैसे फ्लेवर का उपयोग कर रही हैं ताकि युवाओं को इसकी ओर आकर्षित किया जा सके। एक अध्ययन में कुछ समय पूर्व यह खुलासा हुआ था कि स्कूली बच्चे 16-17 साल की उम्र में ही सिगरेट के आदी हो जा रहे हैं और इन बच्चों में बड़ी संख्या ऐसी है, जिन्हें 18 साल का होते-होते ई सिगरेट की लत लग जाती है। यही नहीं, 10-11 साल के बच्चे भी हुक्के की भांति ई-सिगरेट का सेवन करने लगे थे। दरअसल युवा पीढ़ी और बच्चे इसे स्टेटस सिंबल के रूप में अपनाने लगे हैं और यही कारण है कि देश में ई-सिगरेट का वैध-अवैध कारोबार बड़ी तेजी से बढ़ रहा था।

ई-सिगरेट निमार्ता कम्पनियों द्वारा भले ही इसे बीड़ी-सिगरेट की लत छुड़ाने के एक भरोसेमंद और सुरक्षित विकल्प के रूप में पेश किया जाता रहा है लेकिन विश्व स्वास्थ्य संगठन स्पष्ट कर चुका है कि ई-सिगरेट से पारम्परिक सिगरेट जैसा ही नुकसान होता है। संगठन ने इसी साल अपनी रिपोर्ट में चेतावनी भरे लहजे में कहा था कि सिगरेट उद्योग तम्बाकू विरोधी अंतर्राष्ट्रीय मुहिम को नाकाम बनाने में लगा हुआ है, इसलिए ई-सिगरेट कम्पनियों के प्रचार पर विश्वास न करें। आंकड़ों पर नजर डालें

तो देशभर में करीब 460 ई-सिगरेट कम्पनियां सक्रिय हैं, जिनके सात हजार से भी ज्यादा फ्लेवर्ड उत्पाद बाजारों में बिक रहे हैं। शोधकर्ताओं का कहना था कि ई-सिगरेट निकोटीन की दुनिया में शराब की तरह ही है, जिस पर सख्ती से नियंत्रण करने की आवश्यकता है। कुछ कैंसर विशेषज्ञ ई-सिगरेट को पैसिव स्मोकिंग का बड़ा उदाहरण मानते रहे हैं, जिनका कहना है कि ई-सिगरेट में निकोटीन आम सिगरेट से कम भले ही हो लेकिन इसमें मौजूद केमिकल कैंसर का कारण बनते हैं। उनका कहना है कि इसी के प्रयोग से एक नॉन स्मोकर को भी फेफड़ों का कैंसर हो सकता है। इंडिया कैंसर रिसर्च कंसोर्टियम के सीईओ प्रो. रवि मेहरोत्रा का कहना है कि ई-सिगरेट खासकर युवाओं में फेफड़ों से संबंधित बीमारियों की बड़ी वजह बन रही है, जो भारत जैसे विकासशील देश के लिए एक टाइम बम की तरह है।

ई-सिगरेट को इलैक्ट्रॉनिक निकोटीन डिलीवरी सिस्टम्स भी कहा जाता है, जो निकोटीन अथवा गैर-निकोटीन पदार्थों की भाप को सांस के साथ भीतर ले जाने वाला एक वाष्पीकृत बैटरी चालित उपकरण है। ई-सिगरेट एक लंबी ट्यूब जैसी होती है, जिसका बाहरी आकार-प्रकार सिगरेट और सिगार जैसे वास्तविक धूम्रपान उत्पादों जैसा ही बनाया जाता है, जिसमें कोई धुआं या दहन नहीं होता लेकिन सिगरेट, बीड़ी, सिगार जैसे धूम्रपान के लिए प्रयोग किए जाने वाले तम्बाकू उत्पादों के विकल्प के रूप में इस्तेमाल की जाने वाली ई-सिगरेट वास्तव में तम्बाकू जैसा ही स्वाद, अहसास और शारीरिक संवेदना देती है। इसमें निकोटीन तथा अन्य हानिकारक रसायन तरल रूप में भरे जाते हैं। जब ई-सिगरेट में कश लगाया जाता है तो इसमें लगी हीटिंग डिवाइस निकोटीन वाले इस घोल को गर्म करके भाप में बदल देती है, इसी भाप को इनहेल किया जाता है। इसलिए इसे स्मोकिंग के बजाय वेपिंग कहा जाता है। लिक्विड निकोटीन का घोल गर्म होने पर एरोसोल में बदल जाता है। निकोटीन युक्त घोल के गर्म होने पर शरीर के अंदर हैवी मेटल पार्टिकल चले जाते हैं, जो कार्सिनोजेनिक होते हैं और कैंसर का कारण भी बनते हैं। ई-सिगरेट के अधिकांश ब्रांड में एडेहाइड्रस, टर्पिन्स, भारी धातु तथा सिलिकेट कणों जैसे घातक तत्व होते हैं, जो शरीर की कार्यप्रणाली पर हर प्रकार से घातक प्रभाव डालने के साथ कई बीमारियों को भी जन्म देते हैं। ई-सिगरेट सीधे तौर पर छाती और मस्तिष्क पर बहुत बुरा प्रभाव डालती है। ई-सिगरेट से निकलने वाले धुएं में बहुत अधिक निकोटीन पाया जाता है और इसमें से भी सिगरेट की ही भांति टॉक्सिक कम्पाउंड निकलते हैं, जो इंसानी फेफड़ों को आम सिगरेट जैसा ही नुकसान पहुंचाते हैं। निकोटीन के कारण रक्तचाप सामान्य से काफी ज्यादा बढ़ जाता है। एक नए शोध के अनुसार ई-सिगरेट का सेवन करने से ब्लड क्लॉट की समस्या उत्पन्न हो सकती है और इसके सेवन से हार्ट अटैक का खतरा 56 फीसदी तक बढ़ जाता है। बहरहाल, ई-सिगरेट पर पूर्ण प्रतिबंध लगाए जाने के सरकार के फैसले का स्वागत करते हुए अब जरूरत इस बात की है कि इस प्रतिबंध को असरकारक बनाने के लिए सरकारी नियामकों द्वारा अपेक्षित सख्ती बरती जाए ताकि ये उत्पाद आमजन तक पहुंच ही न सकें और देश के भविष्य को ई-सिगरेट के जहर से बचाने में सफलता मिले।

“

एक अमेरिकी अध्ययन के अनुसार वहां 10वीं तथा 12वीं के स्कूली बच्चों में ई-सिगरेट का चलन 77.8 प्रतिशत तक बढ़ा है जबकि मिडल स्कूल के बच्चों में ई-सिगरेट लेने का चलन 48.5 प्रतिशत बढ़ा है।

स्वास्थ्य विशेषज्ञों का कहना है कि इस बात में कोई संदेह नहीं है कि ई-सिगरेट उपलब्ध कराने वाली कम्पनियां जानबूझकर बबलगम, कैप्टन क्रंच तथा कॉटन कैन्डी जैसे फ्लेवर का उपयोग कर रही हैं।



मेष गुरु की कृपा से भाग्य की बृद्धि होगी। कर्म स्थान का शनि मेहनत के बाद ही सफलता देगा। शनिवार की संध्या में लड्डू गरीबों में बांटे। सेहत का ध्यान रखें। भगवान श्री सूर्यनारायण को अर्घ्य प्रदान करें। शुभ अंक 1 और शुभ रंग लाल है।



बृषभ मन खिन्न रहेगा। बहुत मेहनत के बाद सफलता मिलेगी। जीवन में आनंद का वातावरण बनाने के लिए दुर्गासप्तशती का पाठ करें। विद्यार्थी के लिए और प्रतियोगिता परीक्षा के लिए अनुकूल अवसर हैं। शुभ अंक 2 और शुभ रंग सफेद या ऑफ वाइट।



मिथुन स्वास्थ्य का ध्यान रखें। प्रतिष्ठा तो मिलेगी। लेकिन धनागमन में थोड़ी परेशानी होगी। अष्टम शनि के लिए चांदी का टुकड़ा अपने पास रखें। दशम सूर्य आपके जीवन में विशेष कृपा बनाएगा। मा के महालक्ष्मी रूप की पूजा करें। शुभ अंक 3 रंग हरा और लाल।



कर्क सेहत का ध्यान रखना बहुत जरूरी है। घर के स्त्री पक्ष का सेहत चिंता का कारण बनेगा। प्रतियोगिता परीक्षा के लिए अनुकूल समय है। हनुमान जी की आराधना करें। बजरंगबाण का पाठ करें। शुभ अंक 7। शुभ रंग- गुलाबी।



सिंह मंत्र के वेश में छुपे शत्रु से सावधानी की जरूरत है। श्री लक्ष्मी नारायण की पूजा से धन लाभ होगा। संध्या प्रहर घी का चतुर्मुख दीपक अपने घर के मुख्यद्वार पर प्रतिदिन जलाए। उत्सव और मांगलिक कार्य की बातें करने का उपयुक्त समय है। शुभ रंग नीला। शुभ अंक 8।



कन्या पंचम शनि करियर के क्षेत्र में अच्छे अवसर देंगे। विद्या व बुद्धि से सफलता प्राप्त होंगे। गुरु के प्रभाव से लौवर या पेट की समस्या रहेगी। महामृत्युंजय मंत्र का जाप या श्रवण करें। शुभ रंग पीला। शुभ अंक 3।



वृश्चिक आपके आराध्य श्री लक्ष्मी नारायण की कृपा से धन आगमन का योग है। भाई के लिए समय अनुकूल नहीं है। बाएं सुर बाले पीले गणपति का तस्बीर घर में रखें। प्रतिष्ठा व सम्मान का योग है। शुभ रंग सफेद। शुभ अंक 5।



तुला भाग्य का राहु राजनीतिक व सामाजिक क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करेंगे। गुरु की कृपा से शत्रु व रोग का नाश होगा। शनि माता के स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं है। चांदी के पात्र से गाय का कच्चा दूध नदी में बहाएं। अनुकूलता बनी रहेगी। शुभ रंग लाल। शुभ अंक 4।



मकर जिद्द छोड़ना होगा। बाएं हाथ की कलाई में पीला धागा बांधने से नुकसान कम होगा। राहु अचानक व विचित्र परिणाम दे सकता है। कालभैरव जी की पूजा करें। शुभ रंग सफेद। शुभ अंक 7।



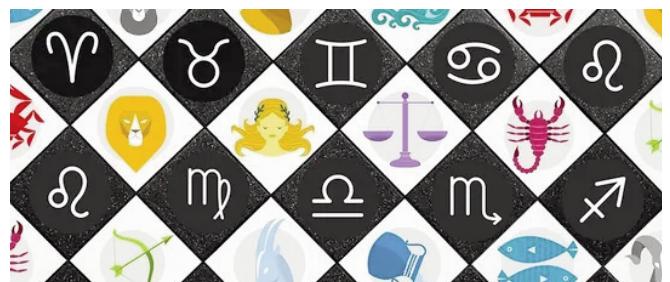
कुम्भ झूठ से नफरत होगी। झूठे लोगों से सामना होगा। लाभ होंगे। लेकिन मन के अनुकूल नहीं। लेकिन मान सम्मान बढ़ेगा। मंगल कार्य के लिए आगे बढ़ें। आवश्यकता को कम करें। चोट चपेट से बचना होगा। हल्दी का गांठ अपने पर्स में रखें। ॐ नमो नारायणाय का जाप करें। शुभ रंग-गुलाबी। शुभ अंक 8।



धनु धन का आगमन होगा। लेकिन सूर्यास्त के बाद दूध व दही का सेवन नहीं करें। आत्मभिमान से बचना होगा। अहंकार को हावी नहीं होने दें। हनुमान चालीसा का पाठ करें। शुभ अंक 6। शुभ रंग हरा।



मीन सूर्य की कृपा से पद व प्रतिष्ठा की बृद्धि होगी। गुरुस्सा पर नियंत्रण रखें। दुश्मन से सचेत जरूरी है। नजर बचना होगा। घर की शांति राहु के कारण नियंत्रण में नहीं रहेगा। सफेद कपड़े में सिंघा नामक घर के मुख्य द्वार पर बांधें। शुभ रंग -हरा। शुभ अंक 9।



असम में दो से अधिक बच्चे होने पर सरकारी नौकरी के दरवाजे बंद

अगर आपके पास भी दो से अधिक बच्चे हैं तो आपको सरकारी नौकरी नहीं मिलेगी। यह फैसला लिया है असम की सरकार ने। असम में भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने उन लोगों को सरकारी नौकरियां नहीं देने का फैसला लिया है जिनके दो से अधिक बच्चे हैं। मुख्यमंत्री सबानंद सोनोवाल की कैबिनेट ने सोमवार को यह फैसला लिया। इसके अनुसार 1 जनवरी, 2021 के बाद से दो से अधिक बच्चे वाले लोगों को कोई सरकारी नौकरी नहीं दी जाएगी। दरअसल 126 सीटों वाली असम विधानसभा ने दो साल पहले जनसंख्या नीति को अपनाया था और अब सोनोवाल सरकार ने यह फैसला लिया है। तब यानी सितंबर 2017 में असम विधानसभा ने असम की जनसंख्या और महिला सशक्तीकरण नीति पारित की थी ताकि छोटे परिवार को प्रोत्साहित किया जा सके। इस नीति के अनुसार सरकारी नौकरी पाने के लिए वो लोग उम्मीदवार नहीं बन सकते जिनके दो से अधिक बच्चे हैं। इसके साथ ही यह भी तय किया गया कि मौजूदा सरकारी कर्मचारियों को भी दो-बच्चे के मानक का सख्ती से पालन करना होगा।

राजनीतिक महत्वकांक्षा

हालांकि सत्तारूढ़ बीजेपी के इस फैसले को प्रदेश में उनकी लंबी राजनीतिक महत्वकांक्षा से जोड़कर भी देखा जा रहा है क्योंकि साल 2011 की जनगणना के हिसाब से असम की कुल आबादी 3 करोड़ 11 लाख 69 हजार में मुसलमानों की जनसंख्या करीब 1 करोड़ 67 लाख 9 हजार है। यानी राज्य की कुल जनसंख्या में मुसलमानों की आबादी 34.22 फीसदी यानी एक तिहाई से अधिक है। इसके अलावा यहां के 33 में नौ जिले मुसलमान बहुल हैं। ऐसे में जनसंख्या नीति के अंतर्गत छोटे परिवार को सरकारी नौकरी देने के बीजेपी सरकार के इस फैसले को वरिष्ठ पत्रकार बैकुंठ नाथ गोस्वामी पार्टी के राजनीतिक फायदे से जोड़कर देख रहे हैं। वे कहते हैं, जनसंख्या नीति के तहत अगर सरकार को कोई काम करना था तो उसे जनसंख्या नियंत्रित करने के लिए मौजूदा जागरूकता कार्यक्रमों को और प्रभावी बनाना चाहिए था। यह नीति कि दो से अधिक बच्चे वाले व्यक्ति को सरकारी नौकरी नहीं दी जाएगी, इसे अदालत में चुनौती दी जा सकती है। यह कहकर नौकरी नहीं दिया जाना कि आपके दो से अधिक बच्चे हैं, संवैधानिक अधिकार का उल्लंघन होगा। वो आगे कहते हैं, दरअसल राज्य में मुसलमानों के बीच जनसंख्या की वृद्धि दर बहुत ज्यादा है। इसका मुख्य कारण उनमें शिक्षा की दर का कम होना है। अगर इस विषय का राजनीतिक पहलू देखे तो बीजेपी को इसमें राजनीतिक फायदा है। वो लोग चाहते हैं कि मुसलमानों की जनसंख्या कम हो। क्योंकि लोकतंत्र में सारा खेल नंबर का ही है। फिलहाल हमलोग 2011 की जनगणना पर निर्भर हैं लेकिन 2021 की जनगणना की जो रिपोर्ट आएगी उसमें प्रतिशत के आधार पर असम में मुसलमानों की ग्रोथ रेट पहले के मुकाबले कम होगी। बीजेपी की इतनी कोशिशों के बावजूद पिछले चुनाव में देश के मुसलमानों के कुल वोटों का केवल 6 प्रतिशत वोट ही उन्हें मिला था। हालांकि बीजेपी ने इस तरह के किसी भी राजनीतिक फायदे की बात से इनकार किया है। असम प्रदेश बीजेपी के वरिष्ठ नेता विजय गुप्ता ने बीबीसी से कहा, छहमारी पार्टी जनसंख्या नीति के तहत यह काम कर रही है। जिस तरह से जनसंख्या बढ़ रही उससे तमाम सारी समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। इस जनसंख्या वृद्धि को रोकने के लिए हमारी सरकार ने लोगों से गुजारिशें की हैं कि वे दो बच्चे ही पैदा करें। वे कहते हैं, यह काम थोड़ा बाध्यतामूलक लगता है लेकिन इससे उन तमाम परिवारों को भी कई तरह से राहत मिलेगी। सरकारी नौकरी पाने के लिए लोग इस नीति को ध्यान में रखेंगे। इसमें किसी के साथ अन्याय करना या फिर राजनीतिक तौर पर किसी धर्म विशेष से जोड़कर देखना ठीक नहीं है। दो संतान पैदा करने से आर्थिक रूप से भी वो परिवार आगे बढ़ेगा। वरना कम समय के भीतर ज्यादा संतान पैदा करने से पहले वाले बच्चों के पालन पोषण का बोझ बढ़ेगा और वहीं बेरोजगारी भी बढ़ाएगी। यह नीति सबके लिए है, चाहे वो हिंदू हो या मुसलमान।

अगर दूसरा बच्चा जुड़वा हुआ तो?

वहीं सरकारी नौकरी करने वाली इंदिरा गोर्गई इस तरह की नीति के खिलाफ तो नहीं लेकिन इसमें परेशानी जरूर देखती हैं। वे कहती हैं, सरकार को यह स्पष्ट करना चाहिए कि दो बच्चे पैदा करने वाली नीति को किसे ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। क्योंकि शिक्षित लोग तो दो से ज्यादा बच्चे पैदा करते ही नहीं हैं। अगर बात



आर्थिक रूप से कमजोर चाय जनजाति या फिर किसी दूसरे समुदाय की है तो वो लोग भी आजकल कम बच्चे पैदा करते हैं। फिर यह नीति विशेष तौर पर किन लोगों को ध्यान में रखकर बनाई गई है। वे एक अहम मुद्दा उठाते हुए कहती हैं कि कई बार ऐसा होता है कि पहले बच्चे के जन्म के बाद किसी को जुड़वा बच्चा हो जाते हैं और ऐसे में उस परिवार में बच्चों की संख्या तीन हो जाएगी। क्या ऐसी स्थिति में उस परिवार के लोगों को सरकारी नौकरी नहीं दी जाएगी। इस नीति में ऐसे कई बिंदु हैं जिनपर सरकार को लोगों से बात करनी चाहिए।

कांग्रेस का क्या है कहना?

असम प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष एवं राज्यसभा सांसद रिपुन बोरा ने बीबीसी से कहा, देश में बढ़ती जनसंख्या को लेकर हम पूरी तरह चिंतित हैं लेकिन केवल दो बच्चे पैदा करने वाला कानून बनाने से जनसंख्या को रोका नहीं जा सकता। जनसंख्या को नियंत्रण करने के लिए हम एकमत हैं लेकिन इसके लिए कानून से नहीं बल्कि लोगों के दिल से सोचना होगा। लोगों को शिक्षित करना पड़ेगा और उनमें पूरी जागरूकता लानी होगी। असम सरकार के मंत्रिमंडल की बैठक में नई भूमि नीति को भी मंजूरी दी गई जिससे भूमिहीन स्थानीय लोगों को तीन बीघा कृषि भूमि और एक मकान बनाने के लिए आधा बीघा जमीन देने का फैसला लिया गया है।



बीजेपी की इतनी कोशिशों के बावजूद पिछले चुनाव में देश के मुसलमानों के कुल वोटों का केवल 6 प्रतिशत वोट ही उन्हें मिला था। हालांकि बीजेपी ने इस तरह के किसी भी

राजनीतिक फायदे की बात से इनकार किया है। असम प्रदेश बीजेपी के वरिष्ठ नेता विजय गुप्ता ने बीबीसी से कहा, छहमारी पार्टी जनसंख्या नीति के तहत यह काम कर रही है। जिस तरह से जनसंख्या बढ़ रही उससे तमाम सारी समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं।

यज्ञ द्वारा जीवन की सफलता व्यवहार से ही सम्भव

वैदिक धर्म ही एक मात्र ऐसा धर्म है जिसके पास परमात्मा का सृष्टि के आरम्भ में दिया हुआ वेद ज्ञान उपलब्ध है। सृष्टि की उत्पत्ति 1.96 अरब वर्ष पूर्व तिब्बत में हुई थी। परमात्मा ने प्रथम बार अमैथुनी सृष्टि करके स्त्री व पुरुषों को युवावस्था में उत्पन्न किया था। यह मान्यता ऋषि दयानन्द ने अनुसंधान कर हमें प्रदान की है। वेदों को आरम्भ में सुन कर स्मरण किया जाता था और उसके शुद्ध उच्चारण व शुद्ध पाठ के लिये उसके 10 विकृति पाठ बनाये गये थे। आज भी दक्षिण भारत में वेद मन्त्रों के इन विकृति पाठों के द्वारा वेदों का शुद्ध रूप बनाये रखने के लिये कुछ वेदभक्त परिवारों द्वारा वेदों को स्मरण कर उनके विकृति पाठों का भी अभ्यास किया जाता है जिससे यह परम्परा लगभग दो अरब वर्ष बाद भी अपने यथार्थ रूप में जारी है। वेदों का ज्ञान परमात्मा ने चार ऋषियों को उत्पन्न कर उनकी हृदय गुहा में उपस्थित आत्मा में प्रेरणा देकर स्थापित किया था। परमात्मा सर्वातिसूक्ष्म है। वह सभी जीवात्माओं तथा स्थूल पदार्थों सहित इस ब्रह्माण्ड में सर्वव्यापक एवं सब जीवों के भीतर बाहर भी व्यापक है। इसी कारण उसे सर्वान्तयामी कहते हैं। अतः उसके लिये जीवों को प्रेरणा कर वेदों का ज्ञान देना युक्ति एवं तर्कसंगत है। इस विषय को विस्तार से जानने के लिये सत्यार्थप्रकाश एवं आर्य विद्वानों के ग्रन्थों को देखना उचित है। इन वेदों में ही परमात्मा ने मनुष्यों व सृष्टि में रहने वाले सभी प्राणियों के कल्याण के लिये गृहस्थी मनुष्यों को प्रतिदिन प्रातः व सायं अग्निहोत्र करने की प्रेरणा वा आज्ञा की है। सृष्टि के आरम्भ से ही ऋषि, महर्षि, गृहस्थी, विद्वान तथा सभी लोग प्रतिदिन अग्निहोत्र यज्ञ करते आ रहे हैं। अग्निहोत्र यज्ञ से भौतिक लाभ भी होते हैं और आत्मा की उन्नति भी होती है। भौतिक लाभों में मुख्य लाभ तो वायु एवं जल की शुद्धि का होता है। यज्ञ का मुख्य द्रव्य देशी गाय का शुद्ध घृत होता है। घृत की गुणवत्ता के लिये गाय की नस्त अच्छी होनी चाहिये, उसको अच्छा भोजन वा चारा दिया जाता हो, उसके रहने के लिये उपयुक्त आवास हो तथा उन गायों का पालन गो प्रेमियों द्वारा प्रेम व भक्ति भाव से किया जाता हो। ऐसे ही गोघृत से उत्तम गोघृत से यज्ञ करने से वायु व वर्षा जल की शुद्धि होती है। ऋषि दयानन्द ने लिखा है कि यज्ञ करने से दुर्गन्ध का नाश होता है। वायु के सभी दोष भी यज्ञ करने से दूर होते हैं। यज्ञ करने से यज्ञ के स्थान का वायु यज्ञ की गर्मी से हल्का होकर बाहर चला जाता है और बाहर का शुद्ध वायु गृह में प्रवेश करता है। इससे बहुत से हानिकारक कृमियों के घर से बाहर जाने से भी यज्ञकर्ता को लाभ मिलता है। जहां यज्ञ होता है वहां के शुद्ध व पवित्र वातावरण में रोग के हानिकारक कृमि नहीं रहते, वह उस स्थान से बाहर चले जाते हैं। पं. लेखराम जी के जीवन की एक घटना है जिसमें उन्होंने यज्ञ के द्वारा एक घर के अन्दर बिल में रहने वाले अनेक सर्पों को यज्ञ के धूम्र से बिल से बाहर आने पर विवश किया था। यज्ञ करके घर के द्वार व खिड़कियां बन्द कर दी गई थी जिससे बाहर का वायु भीतर प्रवेश नहीं कर सकता था। रात्रि में सांप बिलों से घर के अन्दर आये और यज्ञ के धूम्र से बेहोश हो गये थे जिन्हें अगले दिन उठा कर बाहर छोड़ दिया गया था। यज्ञ से जो वातावरण बनता है उससे मनुष्य के स्वास्थ्य पर वायु प्रदूषण का प्रभाव नष्ट हो जाता व बहुत कम रह जाता है।

यही कारण था कि प्रातः प्रतिदिन यज्ञ करने वाले एक परिवार के सदस्यों व उनके गाय आदि पशुओं की भीपाल गैस दुर्घटना में रक्षा हुई थी जबकि आस-पास के प्रायः सभी लोग गैस के प्रभाव से मृत्यु को प्राप्त हुए थे अथवा गम्भीर रूप से रूग्ण हो गये थे। यज्ञ के लाभों से सम्बन्धित ऐसे अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं। यज्ञ का लाभ तभी होता है कि जब यज्ञ में आहुति के रूप में दी जाने वाली सभी सामग्री, घृत, सुगन्धित पदार्थ, मिष्ट पदार्थ, ओषधि एवं पुष्टि कारक शुष्क फल व मेवे आदि पूरी तरह से शुद्ध व पवित्र हों। अग्निहोत्र यज्ञ करने से मनुष्य को अपने जीवन व परिवार में सुख व शान्ति का लाभ भी मिलता है। वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार सद्कर्मों को करने से मनुष्य को सुख का लाभ होता है। यज्ञ करके मनुष्य वायु को शुद्ध करता है जो दूर दूर तक फैल कर उन सभी व्यक्तियों को लाभ पहुंचाती है जो उस



वायु में श्वास लेते हैं। इस यज्ञीय कर्म से परमात्मा की ओर से यज्ञकर्ता को यज्ञ से दूसरे मनुष्यों को होने वाले लाभ की मात्रा के अनुरूप ही सुख प्राप्त होता है। इसी कारण ऋषियों ने यज्ञ को संसार का सबसे श्रेष्ठतम कर्म अर्थात् सभी अच्छे व पुण्य कार्यों में सबसे अधिक श्रेष्ठ कर्म बताया है। यज्ञ करने से परमात्मा की वेदों में यज्ञ करने की जो आज्ञा है उसका पालन भी होता है। वेदों के मन्त्र परमात्मा के बनाये हुए एवं उसी की भाषा में हैं। यज्ञ में ह्यअयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्वल्ह मन्त्र से यजमान द्वारा पांच घृत आहुतियां दी जाती हैं। इसमें ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कहा गया है कि हे सब पदार्थों में विद्यमान परमेश्वर! यह मेरा आत्मा तरे लिए समिधारूप है। हे अग्ने झ प्रकाशस्वरूप ज्ञानस्वरूप परमेश्वर! इससे तू मुझमें प्रकाशित हो और अवश्य ही वृद्धि को प्राप्त हो। तू हमको भी बढ़ा और हमें पुत्रपौत्र, सेवक आदि अच्छी प्रजा (सन्तान) से, गौ आदि पशुओं से, वेदज्ञविद्या के तेज से और धनज्ञधान्य, घृत, दुग्ध, अन्न आदि से समृद्ध कर। स्विष्टकृदाहुति मन्त्र में ईश्वर से यह प्रार्थना की जाती है कि वह परमात्मदेव हमारी सब शुभ इच्छाओं को जानता है और वह हमारी इच्छाओं को कृपा करके पूर्ण कर दे। यज्ञ में परमात्मा से बल व आयु की प्रार्थना भी की गई है। इसी प्रकार की प्रार्थना ईश्वर की स्तुति व प्रार्थना के एक मन्त्र में भी है। इसी मन्त्र से प्राजापत्याहुति आहुति दी जाती है। इसमें परमात्मा से प्रार्थना करते हुए कहा गया है कि हे प्रजापालक परमेश्वर! सब उत्पन्न हुए जड़झञ्जतनादिकों को आपने अधिकारपूर्वक रचा है। आपके सिवा सृष्टि आदि को बनाने का सामर्थ्य अन्य किसी परमेश्वर से इतर मनुष्य में नहीं है। जिसझजिस पदार्थ की कामना वाले होके हम आपका आश्रय और वांछ करें, वहझवह हमारी कामना सिद्ध होवें जिससे हम धनैश्वर्यों के स्वामी होवें। ईश्वर सर्वशक्तिमान है।

“

वायु के सभी दोष भी यज्ञ करने से दूर होते हैं। यज्ञ करने से यज्ञ के स्थान का वायु यज्ञ की गर्मी से हल्का होकर बाहर चला जाता है और बाहर का शुद्ध वायु गृह में प्रवेश करता है। इससे बहुत से

हानिकारक कृमियों के घर से बाहर जाने से भी यज्ञकर्ता को लाभ मिलता है। जहां यज्ञ होता है वहां के शुद्ध व पवित्र वातावरण में रोग के हानिकारक कृमि नहीं रहते, वह उस स्थान से बाहर चले जाते हैं।

Rohit Kumar (Gagan)

9386475346, 9835055706

Sorry Madam

Men's Wear Shop

Wholesaler & Retailer

Stylish Shirt, T-Shirt,
Jeans, Pant, Sweater,
Track, Suit, Jacket,
Shoe Etc.



KANKARBAGH, LIGH 96, NEAR TEMPO STAND, PATNA-20

FORD HOSPITAL, PATNA

A NABH Certified Multi Super-Speciality Hospital
PATNA



A 105-Bedded Hospital Run by Three Eminent Doctors of Bihar
उत्कृष्ट एवं अपनत्व की अनुभूति



Dr. Santosh Kr.

Dr. B. B. Bharti

Dr. Arun Kumar



हृदय रोग चिकित्सा के लिए बेहतरीन टीम

2nd Multi Speciality
NABH Certified Hospital
of Bihar



Best Promising
Multi Speciality
Hospital
2018 Bihar.



फोर्ड हॉस्पिटल में उपलब्ध सेवाएं

क्लीनिकल सर्विसेस

- कार्डियोलॉजी
- क्रिटिकल केयर
- न्यूरोलॉजी
- स्पाईन सर्जरी
- नेफ्रोलॉजी एवं डायलेसिस
- ऑर्थोपेडिक एवं ट्रॉमा
- ओब्स एवं गॉबनेकोलौजी
- पेडिएट्रिक्स
- पेडिएट्रिक सर्जरी
- साइचिरेट्री एवं साइकोलॉजी
- रेस्पिरेट्री मेडिसिन
- यूरोलॉजी
- सर्जिकल ऑन्कोलौजी

Empaneelled with CGHS, ECR, CISF,
NTPS, Airport Authority, Power Grid &
other Leading PSUs, Bank, Corp. & TPS

New Bypass (NH-30) Khemnichak, Ramkrishna Nagar, Patna- 27
Helpline ; 9304851985, 9102698977, 9386392845, Ph.: 9798215884/85/86
E-mail : fordhospital@gmail.com web. : www.fordhospital.org